औलाद की बेहतरीन तरबिय्यत में मुआ़विन तह़रीर

Tarbiyyate Aulad (Hindi)

# तरबिय्यते औलाद



**इस किताब में :**

- औलाद कैसी होनी चाहिये ?
- तरबिय्यते औलाद की अहम्मिय्यत
- निकाह़ के लिये अच्छी अच्छी निय्यतें
- ज़च्चा व बच्चा की ह़िफ़ाज़त का रूह़ानी नुस्ख़ा
- पैदाइश के बा'द करने वाले काम
- नामे मुह़म्मद की ब-र-कतें
- दूध पिलाने की फ़ज़ीलत
- मुख़्तलिफ़ सुन्नतें और आदाब
- बेटे और बेटी से यक्सां सुलूक
- औलाद कब बालिग़ होती है ?

इन के इलावा भी बहुत से मौज़ूआ़त

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

# किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

**दीनी** किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

**तरजमा :** ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े ख़ोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (المُستطرَف ج١ ص٤٠ دارالفكر بيروت)

**नोट :** अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

# ( तरबिय्यते औलाद )

येह किताब **( तरबिय्यते औलाद )**

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में पेश की है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस किताब को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

**राबित़ा :** मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

**मक-त-बतुल मदीना**

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा,

अह़मदआबाद-1, गुजरात

Mobile: 09374031409

E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

औलाद की बेहतरीन तरबिय्यत में
मुआ़विन तह़रीर

# तरबिय्यते औलाद

www.dawateislami.net

पेशकश
मजलिसे अल मदी-नतुल इ़ल्मिय्या
( शो'बए इस्लाह़ी कुतुब )

नाशिर
मक-त-बतुल मदीना अह़मदआबाद

الصلوة والسلام علیک یارسول الله وعلی الک واصحابک یا حبیب الله

**नाम किताब : तरबिय्यते औलाद**
**पेशकश : मजलिसे अल मदी–नतुल इल्मिय्या**
(शो'बए इस्लाही कुतुब)
**सिने त़बाअ़त** : मुह़र्रमुल ह़राम 1434 सि.ही. दिसम्बर 2012 सि.ई.
**नाशिर** : मक–त–बतुल मदीना
सिलेक्टेड हाउस, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद

## मक–त–बतुल मदीना की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

**मुम्बई** : 19,20, मुह़म्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429

**देहली** : 421, मटिया मह़ल, उर्दू बाज़ार, जामेअ़ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560

**नागपुर** : मस्जिद ग़रीब नवाज़ के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नाग पूर – फ़ोन : 09373110621

**अजमेर शरीफ़** : 19 / 216 फ़लाहे़ दारैन मस्जिद, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, अजमेर

**ह़ैदरआबाद** : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, ह़ैदरआबाद फ़ोन : 040-24572786

**हुब्ली** : A.J. मुढोल कोम्पलेक्ष, A.J. मुढोल रोड, ओल्ड हुब्ली ब्रीज के पास, हुब्ली, कर्नाटक फ़ोन : 08363244860

**E-mail: translationmaktabhind@dawateislami.net**

Ph : 9327168200 - Email : maktabaahmedabad@gmail.com

**www.dawateislami.net**

**तम्बीह :** किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं है।

# ''तरबिय्यते औलाद'' के 10 हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की 10 निय्यतें

**फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَلٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:**

''نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ'' या'नी मुसल्मान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है'' (المعجم الكبير للطبرانى، الحديث: ٥٩٤٢، ج٦، ص١٨٥)

**दो म-दनी फूल :**

﴾1﴿ बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़-मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

﴾2﴿ जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

1..... रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुता-लआ़ करूंगा।

2..... ह़त्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और

3..... क़िब्ला रू मुता-लआ़ करूंगा।

4..... क़ुरआनी आयात और

5..... अह़ादीसे मुबा-रका की ज़ियारत करूंगा।

6..... जहां जहां ''अल्लाह'' का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और

7.....जहां जहां ''सरकार'' का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّى اللّٰهُ تَعَلٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़ूंगा।

8..... (अपने ज़ाती नुस्ख़े पर) इन्दज़्ज़रूरत ख़ास ख़ास मक़ामात पर अन्डर लाइन करूंगा।

9..... दूसरों को येह किताब पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगा।

10..... इस ह़दीसे पाक "**تَهَادَوْا تَحَابُّوْا**" या'नी एक दूसरे को तोह़फ़ा दो आपस में मह़ब्बत बढ़ेगी। (مؤطا امام مالك، ج٢،ص٤٠٧، رقم: ١٧٣١) पर अ़मल की निय्यत से (कम अज़ कम 12 अ़दद या ह़स्बे तौफ़ीक़) येह किताब ख़रीद कर दूसरों को तोह़फ़तन दूंगा।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

## अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى اِحْسَانِهٖ وَبِفَضْلِ رَسُوْلِهٖ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

तब्लीगे़ क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **''दा'वते इस्लामी''** नेकी की दा'वत, एह़याए सुन्नत और इशाअ़ते इ़ल्मे शरीअ़त को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब हुस्नो ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मु-तअ़द्दद मजालिस का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस **'' अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या''** भी है जो दा'वते इस्लामी के उ़-लमा व मुफ़्तियाने किराम كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है । इस के मुन्दरिजए ज़ैल **छ शो'बे हैं :**

﴿1﴾ शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ﴿2﴾ शो'बए दर्सी कुतुब
﴿3﴾ शो'बए इस्लाही कुतुब ﴿4﴾ शो'बए तफ़्तीशे कुतुब
﴿5﴾ शो'बए तख़्रीज ﴿6﴾ शो'बए तराजिमे कुतुब

**''अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या''** की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल ब-र-कत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़से ख़ैरो ब-र-कत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी अश्शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की गिरां मायह तसानीफ़ को

अ़स्रे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ ह़त्तल वस्अ़ सह्ल उस्लूब में पेश करना है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती म-दनी काम में हर मुम्किन तआ़वुन फ़रमाएं और मजलिस की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुत़ा-लआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ "**दा'वते इस्लामी**" की तमाम मजालिस ब शुमूल "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" को दिन ग्यारहवीं और रात बारहवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़-मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर दोनों जहां की भलाई का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में जगह नसीब फ़रमाए ।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

र-मज़ानुल मुबारक 1425 हि.

# पहले इसे पढ़ लीजिये

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !**

**बच्चे** अपने वालिदैन और अ़ज़ीज़ो अक़ारिब की उम्मीदों का महवर होते हैं। इस्लामी मुआ़-शरे का मुफ़ीद फ़र्द बनाने के लिये इन की बेहतरीन तरबिय्यत बेहद ज़रूरी है। येही बच्चे कल बड़े हो कर वालिदैन, ताजिर और उस्ताज़ वग़ैरा बनेंगे और इस मुआ़-शरे की बाग डोर संभालेंगे, अगर येह अपनी ज़िम्मादारियां शरीअ़त के मुताबिक़ ब त़रीक़े अह़सन अदा करने में काम्याब हो गए तो येह मुआ़-शरा अम्नो सुकून का गहवारा बन जाएगा और हर त़रफ़ सुन्नतों की बहार आ जाएगी। आज के इस पुर फ़ितन दौर में बच्चों की म-दनी तरबिय्यत की अहम्मिय्यत दो चन्द हो जाती है कि जब जिद्दत पसन्दी की रंगीनियां और फ़रेब कारियां मुस्लिम मुआ़-शरे को टी.वी, डिश एन्टीना, केबल नेटवर्क, इन्टरनेट की सूरत में घेरे हुए हैं। तफ़रीह़ और मा'लूमाते आ़म्मा में इज़ाफ़े के नाम पर येह आलात बे ह़याई को जिस तेज़ी से फ़रोग़ दे रहे हैं, येह किसी पर पोशीदा नहीं।

ज़ेरे नज़र किताब **"तरबिय्यते औलाद"** में बच्चों की तरबिय्यत के सिल्सिले में क़ुरआनो अह़ादीस व अक़्वाले अकाबिरीन की ख़ुश्बू से मुअ़त्त़र मुअ़त्त़र म-दनी फूल पेश किये गए हैं। इस किताब में बच्चे की पैदाइश से ले कर उस की शादी तक के तमाम उमूर म-सलन नाम रखना, अ़क़ीक़ा, ख़तना, तह़नीक और मुख़्तलिफ़ आदाबे ज़िन्दगी वग़ैरा का तज़्किरा करने की कोशिश की गई है। यूं येह किताब साह़िबे औलाद मुसल्मानों के साथ साथ दीगर इस्लामी भाइयों के लिये भी यक्सां मुफ़ीद है। इस किताब को न सिर्फ़ ख़ुद पढ़िये बल्कि दूसरों को इस के मुता-लए की तरग़ीब दिला कर सवाबे जारिया के ह़क़दार बनिये।

**अल्लाह** तआ़ला से दुआ़ है कि हमें **''अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश''** करने के लिये म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल और म-दनी क़ाफ़िलों का मुसाफ़िर बनते रहने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए और दा'वते इस्लामी की तमाम मजालिस ब शुमूल **मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या** को दिन पच्चीसवीं रात छब्बीसवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

**शो'बए इस्लाह़ी कुतुब ( मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या )**

| नम्बर शुमार | उ़न्वान | सफ़हा नम्बर | नम्बर शुमार | उ़न्वान | सफ़हा नम्बर |
|---|---|---|---|---|---|
| 1 | दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत | 11 | 24 | अच्छी अच्छी निय्यतें कीजिये | 42 |
| 2 | रब तआ़ला का इन्आ़मे अ़ज़ीम | 11 | 25 | ज़मानए ह़म्ल की एह़तियातें | 44 |
| 3 | बिस्मिल्लाह शरीफ़ पढ़ने की ब-र-कत | 13 | 26 | मुश्तबा गिज़ा निकालना पड़ती | 46 |
| 4 | अ़ज़ाबे क़ब्र से रिहाई मिल गई | 13 | 27 | मा'ज़िरत करना पड़ती | 46 |
| 5 | ईसाले सवाब का फ़ाएदा | 14 | 28 | अ़ज़ीम मां | 48 |
| 6 | रोज़ाना एक क़ुरआने पाक का ईसाले सवाब | 15 | 29 | औलादे नरीना मिल गई | 50 |
| 7 | वालिद साहिब से अ़ज़ाब उठ गया | 16 | 30 | औलाद मिल गई | 51 |
| 8 | औलाद कैसी होनी चाहिये? | 16 | 31 | बिग़ैर ऑपरेशन के औलाद | 51 |
| 9 | ना मुसाइ़द ह़ालात और बिगड़ी हुई औलाद | 18 | 32 | म-दनी मुन्ने की आमद | 53 |
| 10 | औलाद के बिगड़ने का ज़िम्मादार कौन? | 20 | 33 | मुंह मांगी मुराद न मिलना भी इन्आ़म | 54 |
| 11 | तरबिय्यते औलाद की अहम्मिय्यत | 21 | 34 | दरबारे मुश्ताक़ से करम | 55 |
| 12 | बच्चों की तरबिय्यत कब शुरूअ़ की जाए? | 23 | 35 | ज़च्चा व बच्चा की ह़िफ़ाज़त का रूह़ानी नुस्ख़ा | 56 |
| 13 | तरबिय्यत करने वाले को कैसा होना चाहिये? | 24 | - | | |
| 14 | मिसाली किरदार कैसे अपनाएं? | 25 | 36 | पैदाइश पर रद्दे अ़मल | 57 |
| 15 | चन्द क़ाबिले लिह़ाज़ उमूर | 30 | 37 | बेटियों पर शफ़्क़त | 59 |
| 16 | नेक औ़रत का इन्तिख़ाब | 30 | 38 | ईसार करने वाली मां | 61 |
| 17 | अच्छी क़ौम में निकाह़ करे | 32 | 39 | पैदाइश के बा'द करने वाले काम | 62 |
| 18 | निकाह़ के लिये अच्छी अच्छी निय्यतें | 33 | 40 | कान में अज़ान | 62 |
| 19 | मंगनी और शादी की रुसूमात | 35 | 41 | तह्नीक (घुट्टी दिलवाना) | 63 |
| 20 | निकाह़ के मुस्तह़ब्बात | 39 | 42 | मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द की तह्नीक | 65 |
| 21 | इस्राफ़ से परहेज़ | 39 | 43 | कैसे नाम रखे जाएं? | 66 |
| 22 | तख़्लिये में श-रई ह़ुदूद की पासदारी | 40 | 44 | अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के पसन्दीदा नाम | 69 |
| 23 | मां के लिये ख़ुश ख़बरी | 42 | 45 | नामे मुह़म्मद की ब-र-कतें | 69 |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 46 | औलादे नरीना का वज़ीफ़ा | 71 | 70 | सह़ाबए किराम व अहले | |
| 47 | बाल मुंडवाना | 71 | - | बैत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم की मह़ब्बत | 109 |
| 48 | अ़क़ीक़ा | 72 | 71 | औलियाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ का अदब | 110 |
| 49 | अ़क़ीक़ा कब करें ? | 73 | 72 | क़ुरआन पढ़ाइये | 111 |
| 50 | बच्चे का ख़तना | 75 | 73 | मद्र-सतुल मदीना | 112 |
| 51 | दूध पिलाने की फ़ज़ीलत | 77 | 74 | सात बरस की उ़म्र से नमाज़ की ताकीद कीजिये | 113 |
| 52 | अपने बच्चों को मुरीद बनवा दीजिये | 80 | 75 | रोज़ा रखवाइये | 114 |
| 53 | बच्चों से मह़ब्बत कीजिये | 82 | 76 | रोज़ा कुशाई | 114 |
| 54 | शीर ख़्वार बच्चे का रोना | 84 | 77 | दीनी ता'लीम दिलवाइये | 115 |
| 55 | जिगर का केन्सर ठीक हो गया | 86 | 78 | उस्ताज़ का इन्तिख़ाब | 117 |
| 56 | म-दनी मुन्नी का इ़लाज हो गया | 88 | 79 | जामिअ़तुल मदीना | 118 |
| 57 | दूध पीते बच्चों के लिये 16 म-दनी फूल | 89 | 80 | शौक़े इ़ल्म | 118 |
| 58 | बच्चे को लोरी देना | 90 | 81 | आदाब सिखाइये | 118 |
| 59 | बच्चों पर ख़र्च कीजिये | 91 | 82 | खाने के आदाब | 119 |
| 60 | बच्चों को रिज़्क़े ह़लाल खिलाइये | 94 | 83 | पीने के आदाब | 123 |
| 61 | एह़तियाते न-बवी | 96 | 84 | चलने के आदाब | 124 |
| 62 | बच्चों को नया फल खिलाइये | 96 | 85 | लिबास पहनने के आदाब | 125 |
| 63 | बच्चे की सिह़्ह़त का ख़याल रखिये | 97 | 86 | लिबास पहनने की दुआ़ | 125 |
| 64 | बीनाई वापस आ गई | 98 | 87 | जूता पहनने के आदाब | 128 |
| 65 | इ़लाज हो गया | 99 | 88 | नाख़ुन काटने के आदाब | 128 |
| 66 | अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का नाम सिखाइये | 99 | 89 | बाल संवारने के आदाब | 129 |
| 67 | बाप का नाम और घर का पता याद कराइये | 101 | 90 | मुलाक़ात के आदाब | 130 |
| 68 | ज़रूरी अ़क़ाइद सिखाइये | 101 | 91 | घर में दाख़िल होने के आदाब | 136 |
| 69 | नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत | 104 | 92 | गुफ़्त-गू के आदाब | 137 |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 93 | छींकने के आदाब | 138 | 117 | आ़जिज़ी | 156 |
| 94 | जमाही की मज़म्मत | 139 | 118 | इख़्लास | 156 |
| 95 | सोने जागने के आदाब | 140 | 119 | सच बोलना | 157 |
| 96 | बच्चों से सच बोलिये | 141 | 120 | अपने बच्चों को बचाइये | 157 |
| 97 | अपने बच्चों को सिखाइये | 141 | 121 | सुवाल करना | 157 |
| 98 | हुस्ने अख़्लाक़ | 141 | 122 | उल्टा नाम लेना | 157 |
| 99 | पाकीज़गी | 142 | 123 | मज़ाक़ उड़ाना | 158 |
| 100 | मुख़्तलिफ़ दुआ़एं | 142 | 124 | ऐ़ब उछालना | 159 |
| 101 | सख़ावत | 143 | 125 | तकब्बुर | 160 |
| 102 | ज़ौ़क़े इ़बादत | 143 | 126 | झूट बोलना | 161 |
| 103 | तवक्कुल | 144 | 127 | ग़ीबत | 161 |
| 104 | ख़ौ़फ़े खुदा عَزَّوَجَلَّ | 145 | 128 | ला'नत | 162 |
| 105 | दियानत दारी | 147 | 129 | चोरी | 163 |
| 106 | शुक्र करना | 148 | 130 | बुग़्ज़ व कीना | 163 |
| 107 | ईसार | 149 | 131 | ह़सद | 164 |
| 108 | सब्र | 149 | 132 | बात चीत बन्द करना | 164 |
| 109 | क़नाअ़त | 150 | 133 | गाली देना | 165 |
| 110 | वक़्त की अहम्मिय्यत | 150 | 134 | वा'दा ख़िलाफ़ी | 165 |
| 111 | खुद ए'तिमादी | 151 | 135 | आतश बाज़ी | 166 |
| 112 | पड़ोसियों से हुस्ने सुलूक | 151 | 136 | पतंग बाज़ी | 167 |
| 113 | ग़म ख़्वारी | 152 | 137 | फ़िल्म बीनी | 167 |
| 114 | बुज़ुर्गों की इ़ज़्ज़त | 153 | 138 | बच्चों से यक्सां सुलूक कीजिये | 168 |
| 115 | वालिदैन का अ-दबो एह़तिराम | 154 | 139 | यक त़रफ़ा राय सुन कर फ़ैसला न दीजिये | 169 |
| 116 | असातिज़ा व उ़-लमा का अदब | 155 | 140 | अपनी औलाद की इस्लाह़ कीजिये | 170 |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 141 | अपनी औलाद को ना फ़रमानी से बचाइये | 174 | 148 | जल्द शादी कर दीजिये | 178 |
| 142 | हौसला अफ़्ज़ाई कीजिये | 174 | 149 | तलाशे रिश्ता | 179 |
| 143 | खेलने का मौक़अ़ भी दीजिये | 175 | 150 | एक मां की नसीहत | 181 |
| 144 | बुरी सोहबत से बचाइये | 175 | 151 | मआख़िज़ो मराजेअ़ | 181 |
| 145 | बिस्तर अलग कर दीजिये | 176 | 152 | अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या की | 183 |
| 146 | औलाद कब बालिग़ होती है? | 176 | - | क़ुतुब की फ़ेहरिस्त | - |
| 147 | बुज़ुर्गों की हिकायात सुनाइये | 177 | | | |


## उ़-लमा की शान

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने पुरनूर है :

जन्नती जन्नत में उ़-लमाए किराम के मोहताज होंगे, इस लिये कि वोह हर जुमुआ़ को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दीदार से मुशर्रफ़ होंगे। **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाएगा : ((تَمَنَّوْا عَلَيَّ مَا شِئْتُم)) "मुझ से मांगो, जो चाहो।" वोह जन्नती उ़-लमाए किराम की त़रफ़ मु-तवज्जेह होंगे कि अपने रब्बे करीम से क्या मांगें? वोह फ़रमाएंगे : येह मांगो, वोह मांगो, जैसे वोह लोग दुन्या में उ़-लमाए किराम के मोहताज थे जन्नत में भी उन के मोहताज होंगे।

(الفردوس بمأثور الخطاب،الحدیث:۸۸۰،ج۱، ص۲۳۰والجامع الصغیر للسیوطی،الحدیث:۲۲۳۵،ص۱۳۵)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

## दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जिस ने मुझ पर सो मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआ़ला उस की दोनों आंखों के दरमियान लिख देता है कि येह निफ़ाक़ और जहन्नम की आग से आज़ाद है और उसे बरोज़े कियामत शु-हदा के साथ रखेगा।''

(مجمع الزوائد، کتاب الادعیۃ، باب فی الصلاۃ علی النبی ﷺ، الحدیث ۱۷۲۹۸، ج۱۰،ص۲۵۲)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

## रब तआ़ला का इन्आ़मे अ़ज़ीम

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !**

नेक औलाद अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला का अ़ज़ीम इन्आ़म है। औलादे सालेह़ के लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे नबी ह़ज़रते सय्यिदुना ज़-करिय्या عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने भी दुआ़ मांगी। चुनान्चे कुरआने पाक में है :

رَبِّ هَبْ لِىْ مِنْ لَّدُنْكَ ذُرِّيَّةً طَيِّبَةً ۚ اِنَّكَ سَمِيْعُ الدُّعَآءِ ۝ (پ۳،اٰل عمران:۳۸)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ रब मेरे मुझे अपने पास से दे सुथरी औलाद बेशक तू ही है दुआ़ सुनने वाला।

और ख़लीलुल्लाह ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अपनी आने वाली नस्लों को नेक बनाने की यूं दुआ़ मांगी :

رَبِّ اجْعَلْنِیْ مُقِیْمَ الصَّلٰوةِ وَمِنْ ذُرِّیَّتِیْ ۖ رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَآءِ
(پ۱۳،ابرٰھیم:۴۰)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ मेरे रब मुझे नमाज़ क़ाइम करने वाला रख और कुछ मेरी औलाद को ऐ हमारे रब और मेरी दुआ़ सुन ले।

**येही** वोह नेक औलाद है जो दुन्या में अपने वालिदैन के लिये राह़ते जान और आंखों की ठन्डक का सामान बनती है। बचपन में इन के दिल का सुरूर, जवानी में आंखों का नूर और वालिदैन के बूढ़े हो जाने पर इन की ख़िदमत कर के इन का सहारा बनती है। फिर जब येह वालिदैन दुन्या से गुज़र जाते हैं तो येह सआ़दत मन्द औलाद अपने वालिदैन के लिये बख़्शिश का सामान बनती है जैसा कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जब आदमी मर जाता है तो उस के आ'माल का सिल्सिला मुन्क़तेअ़ हो जाता है सिवाए तीन कामों के कि इन का सिल्सिला जारी रहता है :

(1) स-द-क़ए जारिया......

(2) वोह इ़ल्म जिस से फ़ाएदा उठाया जाए......

(3) नेक औलाद जो इस के ह़क़ में दुआ़ए ख़ैर करे।"

(صحیح مسلم، کتاب الوصیۃ، باب مایلحق الانسان، الحدیث ۱۶۳۱، ص ۸۸۶)

एक और मक़ाम पर हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जन्नत में आदमी का द-रजा बढ़ा दिया जाता है तो वोह कहता है : "मेरे ह़क़ में येह किस त़रह़ हुवा ?" तो जवाब मिलता है "इस लिये कि तुम्हारा बेटा तुम्हारे लिये मग़्फ़िरत त़लब करता है।" (سنن ابن ماجہ، کتاب الادب، باب برالوالدین، الحدیث ۳۶۶۰، ج ۴، ص ۱۸۵)

## बिस्मिल्लाह शरीफ़ पढ़ने की ब-२-क्त :

ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ السَّلَام एक क़ब्र पर गुज़रे तो अ़ज़ाब हो रहा था। कुछ वक़्फ़े के बा'द फिर गुज़रे तो मुला-ह़ज़ा फ़रमाया कि नूर ही नूर है और वहां रह़मते इलाही عَزَّوَجَلَّ की बारिश हो रही है। आप عَلَيْهِ السَّلَام बहुत ह़ैरान हुए और बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ की, कि मुझे इस का भेद बताया जाए। इर्शाद हुवा : "ऐ ईसा ! येह सख़्त गुनहगार और बदकार था, इस वजह से अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार था लेकिन इस ने बीवी ह़ामिला छोड़ी थी। उस के लड़का पैदा हुवा और आज उस को मक्तब भेजा गया, उस्ताज़ ने उसे बिस्मिल्लाह पढ़ाई, मुझे ह़या आई कि मैं ज़मीन के अन्दर उस शख़्स को अ़ज़ाब दूं जिस का बच्चा ज़मीन पर मेरा नाम ले रहा है।" (التفسیر الکبیر، الباب الحادی عشر، ج۱، ص۱۵۵ ملخصاً)

## अ़ज़ाबे क़ब्र से रिहाई मिल गई :

एक शख़्स जिस के बाप का इन्तिक़ाल हो चुका था उस ने हुज़ूर सय्यिदुना ग़ौसुल आ'ज़म رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : "गुज़श्ता रात, ख़्वाब में अपने वालिद को अ़ज़ाब में मुब्तला देखा तो मेरे वालिदे मर्ह़ूम ने मुझ से कहा कि, "मुझे अ़ज़ाबे क़ब्र में मुब्तला कर दिया गया है, तुम ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के पास जा कर मेरे लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत कराओ।" ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने दर्याफ़्त फ़रमाया कि "क्या तुम्हारे वालिद कभी मेरे मद्रसे के सामने से गुज़रे थे ?" उस शख़्स ने जवाब दिया : "जी हां।" येह सुन कर आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने ख़ामोशी इख़्तियार कर ली, फिर वोह शख़्स अपने घर चला गया।

रात को उस ने अपने वालिद को ख़्वाब में इन्तिहाई ख़ुश व ख़ुर्रम देखा, उन्हों ने सब्ज़ लिबास पहन रखा था और फ़रमा रहे थे कि "ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की दुआ से अल्लाह तआला ने मेरा अ़ज़ाब ख़त्म कर दिया है और उन्ही के फ़ैज़ से मुझे येह लिबास पहनाया गया है, लिहाज़ा मैं तुझे हिदायत करता हूं कि इन की ख़िदमत में हाज़िरी अपने लिये लाज़िम कर ले।" उस शख़्स ने येह वाक़िआ ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ख़िदमत में पेश किया तो आप ने फ़रमाया कि "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मुझ से येह वा'दा किया गया है कि जो कोई भी मेरे मद्रसे के पास से गुज़र जाएगा तो उस के अ़ज़ाब में तख़्फ़ीफ़ कर दी जाएगी।" (بہجۃ الاسرار، باب ذکر فضل اصحابہ وبشراھم، ص ۱۹۴)

## ईसाले सवाब का फ़ाएदा :

हज़रते मुहयुद्दीन इब्ने अ़-रबी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه एक दा'वत में तशरीफ़ ले गए। वहां एक नौ जवान भी मौजूद था जो कि कश्फ़ के मुआ़-मले में मा'रूफ़ था। आप ने देखा कि खाना खाते हुए वोह दफ़्अ़तन (या'नी अचानक) रोने लगा। वजह मा'लूम करने पर उस ने बताया कि "ब ज़रीअ़ए कश्फ़ मुझे मा'लूम हुवा है कि अल्लाह तआ़ला के हुक्म से फ़िरिश्ते मेरी मां को जहन्नम में ले जा रहे हैं।" आप फ़रमाते हैं कि "मेरे पास सत्तर हज़ार मरतबा कलिमए त़य्यिबा पढ़ा हुवा महफ़ूज़ था। मैं ने दिल ही दिल में उस की मां को ईसाले सवाब कर दिया।" वोह लड़का फ़ौरन हंस पड़ा, मैं ने सबब पूछा तो कहने लगा कि : "मैं ने अभी देखा है कि फ़िरिश्ते मेरी मां को जन्नत की त़रफ़ ले जा रहे हैं।" (मल्फ़ूज़ाते आ'ला हज़रत, हिस्सए अव्वल, स. 104)

# रोज़ाना एक क़ुरआने पाक का ईसाले सवाब :

एक बुज़ुर्ग इर्शाद फ़रमाते हैं कि किसी शख़्स ने ख़्वाब में देखा कि क़ब्रिस्तान के तमाम मुर्दे अपनी क़ब्रों से बाहर निकल कर जल्दी जल्दी ज़मीन पर से कोई चीज़ समेट रहे हैं, लेकिन मुर्दों में से एक शख़्स फ़ारिग़ बैठा हुवा है, वोह कुछ नहीं चुनता। उस शख़्स ने उस से जा कर पूछा कि "येह लोग क्या चुन रहे हैं ?" उस ने जवाब दिया : "ज़िन्दा लोग जो कुछ स-दक़ा... या... दुआ...या... तिलावते क़ुरआन वग़ैरा इस क़ब्रिस्तान वालों को भेजते हैं, इस की ब-रकात समेट रहे हैं।" उस ने कहा "तुम क्यूं नहीं चुनते ?" जवाब दिया "मुझे इस वजह से फ़राग़त है कि मेरा एक बेटा ह़ाफ़िज़े क़ुरआन है जो फुलां बाज़ार में ह़ल्वा बेचता है, वोह रोज़ाना एक क़ुरआने पाक पढ़ कर मुझे बख़्शता है।"

येह शख़्स सुब्ह़ उसी बाज़ार में गया, देखा कि एक नौ जवान ह़ल्वा बेच रहा है और उस के होंट हिल रहे हैं उस ने नौ जवान से पूछा "तुम क्या पढ़ रहे हो ?" उस ने जवाब दिया कि मैं रोज़ाना एक क़ुरआने पाक पढ़ कर अपने वालिदैन को बख़्शता हूं, उसी की तिलावत कर रहा हूं। कुछ अ़र्से बा'द उस ने ख़्वाब में दोबारा उसी क़ब्रिस्तान के मुर्दों को कुछ चुनते हुए देखा, इस मरतबा वोह शख़्स भी चुनने में मसरूफ़ था कि जिस का बेटा उसे क़ुरआने पाक पढ़ कर बख़्शा करता था, इस को देख कर उसे बहुत तअ़ज्जुब हुवा, इतने में उस की आंख खुल गई। सुब्ह़ उठ कर उसी बाज़ार में गया और तह़क़ीक़ की तो मा'लूम हुवा कि ह़ल्वा बेचने वाले नौ जवान का भी इन्तिक़ाल हो चुका है।

(روض الریاحین، الفصل الثانی الحکایۃ السابعۃ والخمسون، ص ۱۷۷)

## वालिद साहिब से अ़ज़ाब उठ गया :

अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल में शामिल होने वाले اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दोनों जहां की भलाइयां पाते हैं। एक इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है कि मैं ने ईद के दूसरे रोज़ आ़शिक़ाने रसूल के साथ **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र की सआ़दत ह़ासिल की। इसी दौरान वालिदे मर्ह़ूम जिन को फ़ौत हुए दो बरस गुज़र चुके थे, मेरे ख़्वाब में बहुत अच्छी ह़ालत में तशरीफ़ लाए। मैं ने पूछा : ''अब्बू इन्तिक़ाल के बा'द क्या हुवा?'' फ़रमाया : ''कुछ अ़र्सा गुनाहों की सज़ा मिली मगर अब अ़ज़ाब उठ गया है, तुम **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल को हरगिज़ मत छोड़ना कि इसी की ब-र-कत से मुझ पर करम हुवा है।''

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !**

वाक़ेई अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत बहुत बड़ी है, नेक औलाद स-द-क़ए जारिया होती है और इन की दुआ़ओं के तुफ़ैल फ़ौत शुदा वालिदैन के लिये आसानियां हो जाती हैं। औलाद को नेक बनाने के लिये दा'वते इस्लामी का म-दनी माह़ोल एक बेहतरीन ज़रीआ़ है।

(फ़ैज़ाने सुन्नत, बाब : आदाबे त़आ़म, जि. 1, स. 356)

## औलाद कैसी होनी चाहिये?

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !**

यक़ीनन वोही औलाद उख़्वी त़ौर पर नफ़्अ़ बख़्श साबित होगी जो नेक व सालेह़ हो और येह ह़क़ीक़त भी किसी से ढकी छुपी नहीं कि औलाद को नेक या बद बनाने में वालिदैन की तरबिय्यत को

बड़ा दख़्ल होता है । एक मरतबा एक मुजरिम को तख़्ताए दार पर लटकाया जाने वाला था। जब उस से उस की आख़िरी ख़्वाहिश पूछी गई तो उस ने कहा कि मैं अपनी मां से मिलना चाहता हूं। उस की येह ख़्वाहिश पूरी कर दी गई। जब मां उस के सामने आई तो वोह अपनी मां के क़रीब गया और देखते ही देखते उस का कान नोच डाला। वहां पर मौजूद लोगों ने उसे सर-ज़निश की, कि ना मा'क़ूल अभी जब कि तू फांसी की सज़ा पाने वाला है तूने येह क्या ह़-र-कत की है? उस ने जवाब दिया कि मुझे फांसी के इस तख़्ते तक पहुंचाने वाली येही मेरी मां है क्यूं कि मैं बचपन में किसी के कुछ पैसे चुरा कर लाया था तो इस ने मुझे डांटने की बजाए मेरी ह़ौसला अफ़्ज़ाई की और यूं मैं जराइम की दुन्या में आगे बढ़ता चला गया और अन्जामे कार आज मुझे फांसी दे दी जाएगी।

(माख़ूज़ अज़ "औलाद बिगड़ने के अस्बाब" बयाने अमीरे अहले सुन्नत مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی)

इस के बर अ़क्स मां की नेक तरबिय्यत की ब-र-कत पर मुश्तमिल ह़िकायत भी मुला-ह़ज़ा कीजिये :

एक क़ाफ़िला गीलान से बग़दाद की त़रफ़ रवां दवां था। जब येह क़ाफ़िला हमदान शह़र से रवाना हुवा तो जैसे ही जंगल शुरूअ़ हुवा डाकूओं का एक गुरौह नुमूदार हुवा और क़ाफ़िले वालों से माल व अस्बाब लूटना शुरूअ़ कर दिया। उस क़ाफ़िले में एक नौ जवान भी था जिस की उ़म्र 18 साल के लगभग थी। एक राहज़न उस नौ जवान के पास आया और कहने लगा : "साह़िब ज़ादे ! तुम्हारे पास भी कुछ है ?" नौ जवान बोला : "मेरे पास चालीस दीनार हैं जो कपड़ों में सिले हुए हैं।" राहज़न ने कहा कि "साह़िब ज़ादे ! मज़ाक़ न करो सच सच बताओ ?" नौ जवान ने बताया "मेरे पास वाक़ेई चालीस दीनार हैं येह देखो मेरी बग़ल के नीचे दीनारों वाली थैली कपड़ों में

सिली हुई है।" राहज़न ने देखा तो ह़ैरान रह गया और नौ जवान को अपने सरदार के पास ले गया और सारा वाक़िआ़ बयान किया। सरदार ने कहा "नौ जवान ! क्या बात है लोग तो डाकूओं से अपनी दौलत छुपाते हैं मगर तुम ने सख़्ती किये बिग़ैर अपनी दौलत ज़ाहिर कर दी ?" नौ जवान ने कहा "मेरी मां ने घर से चलते वक़्त मुझे नसीह़त फ़रमाई थी कि "बेटा ! हर ह़ाल में सच बोलना।" बस मैं अपनी वालिदा के साथ किया हुवा वा'दा निभा रहा हूं।

नौ जवान का येह बयान तासीर का तीर बन कर डाकूओं के सरदार के दिल में पैवस्त हो गया उस की आंखों से आंसूओं का दरिया छलकने लगा। उस का सोया हुवा मुक़द्दर जाग उठा, वोह कहने लगा "साह़िब ज़ादे ! तुम किस क़दर ख़ुश नसीब हो कि दौलत लुटने की परवाह किये बिग़ैर अपनी वालिदा के साथ किये हुए वा'दे को निभा रहे हो और मैं किस क़दर ज़ालिम हूं कि अपने ख़ालिक़ व मालिक के साथ किये हुए वा'दे को पामाल कर रहा हूं और मख़्लूक़े ख़ुदा का दिल दुखा रहा हूं।" येह कहने के बा'द वोह साथियों समेत सच्चे दिल से ताइब हो गया और लूटा हुवा सारा माल वापस कर दिया।

(तारीख़े मशाइख़े क़ादिरिय्या, जिल्द अव्वल, स. 121 ता 122 بہجۃ الاسرار، ذکر طریقہ رضی اللہ عنہ، ص ۱۶۸ ماخوذاً)

## ना मुसाइद ह़ालात और बिगड़ी हुई औलाद

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !**

मौजूदा ह़ालात में अख़्लाक़ी क़दरों की पामाली किसी से ढकी छुपी नहीं। नेकियां करना बेह़द दुश्वार और इरतिकाबे गुनाह बहुत आसान हो चुका है, मस्जिदों की वीरानी और सिनेमा घरों व डिरामा थियेटरों की रोनक़, दीन का दर्द रखने वालों को आठ आठ आंसू रुलाती है, टी.वी, वी.सी.आर, डिश एन्टीना, इन्टरनेट और केबल का

ग़लत इस्ति'माल करने वालों ने अपनी आंखों से ह़या धो डाली है, तक्मीले ज़रूरिय्यात व हुसूले सहूलियात की जिद्दो जहद ने इन्सान को फ़िक्रे आख़िरत से यक्सर ग़ाफ़िल कर दिया है, येही वजह है दुन्यावी शानो शौकत और ज़ाहिरी आन बान मुसल्मानों के दिलों को अपना गिरवीदा बना चुकी है मगर अफ़्सोस ! अपनी क़ब्र को गुलज़ारे जन्नत बनाने की तमन्ना दिलों में घर नहीं करती । इन ना मुसाइद ह़ालात का एक बड़ा सबब वालिदैन का अपनी औलाद की म-दनी तरबिय्यत से ग़ाफ़िल होना भी है क्यूं कि फ़र्द से अफ़्राद और अफ़्राद से मुआ़-शरा बनता है तो जब फ़र्द की तरबिय्यत सह़ीह़ ख़ुतूत़ पर नहीं होगी तो इस के मज्मूए़ से तश्कील पाने वाला मुआ़-शरा ज़बूं ह़ाली से किस त़रह़ मह़फ़ूज़ रह सकता है । जब वालिदैन का मक़्सदे ह़यात हुसूले दौलत, आराम त़-लबी, वक़्त गुज़ारी और ऐ़श कोशी बन जाए तो वोह अपनी औलाद की क्या तरबिय्यत करेंगे और जब तरबिय्यते औलाद से बे ए'तिनाई के अ-सरात सामने आते हैं तो येही वालिदैन हर कसो ना कस के सामने अपनी औलाद के बिगड़ने का रोना रोते दिखाई देते हैं ।

ऐसे वालिदैन को ग़ौर करना चाहिये कि औलाद को इस ह़ाल तक पहुंचाने में उन का कितना हाथ है क्यूं कि उन्हों ने अपने बच्चे को ABC बोलना तो सिखाया मगर क़ुरआन पढ़ना न सिखाया, मग़रिबी तहज़ीब के त़ौर त़रीक़े तो समझाए मगर रसूले अ़-रबी صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतें न सिखाईं, जनरल नॉलेज (मा'लूमाते आ़म्मा) की अहम्मिय्यत पर उस के सामने घन्टों कलाम किया मगर फ़र्ज़ दीनी उ़लूम के हुसूल की रग़्बत न दिलाई, उस के दिल में माल की मह़ब्बत तो डाली मगर इ़श्क़े रसूल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की शम्अ़ फ़रूज़ां न की, उसे दुन्यावी ना कामियों का ख़ौफ़ तो दिलाया मगर इम्तिह़ाने क़ब्रो ह़श्र में नाकामी से वह़शत न दिलाई, उसे हाए हेलो

कहना तो सिखाया मगर सलाम करने का त़रीक़ा न बताया। इरतिकाबे गुनाह की मादर पिदर आज़ादी और लह्वो लअ़ब के त़रह़ त़रह़ के आलात का बिला रोक टोक इस्ति'माल, केबल, वी.सी.आर की कारस्तानियां, रक़्सो सुरूद की मह़फ़िलों में इन्हिमाक और बिगड़ा हुवा घरेलू माह़ोल, येह सब कुछ बच्चे की त़बीअ़त में शैत़ानियत व नफ़्सानियत को इतना क़द आवर कर देता है कि उस से पाकीज़ा किरदार की तवक़्क़ोअ़ भी नहीं की जा सकती जैसे गन्दे नाले में डुबकी लगाने वाले के जिस्म की त़हारत का तसव्वुर भी नहीं किया जा सकता।

## औलाद के बिगड़ने का ज़िम्मादार कौन ?

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !**

उ़मूमन देखा गया है कि बिगड़ी हुई औलाद के वालिदैन इस की ज़िम्मादारी एक दूसरे पर आइद कर के ख़ुद को बरिय्युज़्ज़िम्मा समझते हैं मगर याद रखिये औलाद की तरबिय्यत सिर्फ़ मां या महज़ बाप की नहीं बल्कि दोनों की ज़िम्मादारी है। अल्लाह तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِيْكُمْ نَارًا وَّقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ عَلَيْهَا مَلٰٓئِكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ لَّا يَعْصُوْنَ اللّٰهَ مَاۤ اَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ ○

(پ۲۸، تحریم:۶)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ ईमान वालो अपनी जानों और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ जिस के ईंधन आदमी और पथ्थर हैं उस पर सख़्त कर्रे (त़ाक़त वर) फ़िरिश्ते मुक़र्रर हैं जो अल्लाह का हुक्म नहीं टालते और जो उन्हें हुक्म हो वोही करते हैं।

**जब** नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह आयते मुबा-रका सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم के सामने तिलावत की तो वोह यूं अ़र्ज़ गुज़ार हुए : ''या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم !

हम अपने अहलो इ़याल को आ-तशे जहन्नम से किस त़रह़ बचा सकते हैं ?'' सरकारे मदीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''तुम अपने अहलो इ़याल को उन चीज़ों का हुक्म दो जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को मह़बूब हैं और उन कामों से रोको जो रब तआ़ला को ना पसन्द हैं।''

(الدر المنثور للسیوطی، ج۸، ص۲۲۵)

और हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़-ज़मत निशान है : ''तुम सब निगरान हो और तुम में से हर एक से उस के मा तह़्त अफ़्राद के बारे में पूछा जाएगा। बादशाह निगरान है, उस से उस की रिआ़या के बारे में पूछा जाएगा। आदमी अपने अहलो इ़याल का निगरान है उस से उस के अहलो इ़याल के बारे में पूछा जाएगा। औ़रत अपने ख़ावन्द के घर और औलाद की निगरान है उस से उन के बारे में पूछा जाएगा।''

(صحیح البخاری، کتاب العتق، باب کراہیۃ التطاول....الخ، الحدیث ۲۵۵۴، ج۲، ص۱۵۹)

## तरबिय्यते औलाद की अहम्मिय्यत

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !**

**अगर** हम इस्लामी अक़्दार के ह़ामिल माह़ोल के मु-तमन्नी (या'नी ख़्वाहिश मन्द) हैं तो हमें अपनी इस्लाह़ के साथ साथ अपने बच्चों की म-दनी तरबिय्यत भी करनी होगी क्यूं कि अगर हम तरबिय्यते औलाद की अहम ज़िम्मादारी को बोझ तसव्वुर कर के इस से ग़फ़्लत बरतते रहे और बच्चों को इन ख़त़रनाक ह़ालात में आज़ाद छोड़ दिया तो नफ़्सो शैत़ान उन्हें अपना आलए कार बना लेंगे जिस का नतीजा येह होगा कि नफ़्सानी ख़्वाहिशात की आंधियां उन्हें सह़राए इ़स्यां (या'नी गुनाहों के सह़रा) में सरगर्दां रखेंगी और वोह उ़म्रे अ़ज़ीज़ के चार दिन आख़िरत बनाने की बजाए दुन्या जम्अ़

करने में सर्फ़ कर देंगे और यूं गुनाहों का अम्बार लिये वादिये मौत के कनारे पहुंच जाएंगे। रह़मते इलाही عَزَّوَجَلَّ शामिले ह़ाल हुई तो मरने से पहले तौबा की तौफ़ीक़ मिल जाएगी व गरना दुन्या से कफ़े अफ़्सोस मलते हुए निकलेंगे और क़ब्र के गढ़े में जा सोएंगे। सोचिये तो सही कि जब बच्चों की म-दनी तरबिय्यत नहीं होगी तो वोह मुआ़-शरे का बिगाड़ दूर करने के लिये क्या किरदार अदा कर सकेंगे, जो ख़ुद डूब रहा हो वोह दूसरों को क्या बचाएगा, जो ख़ुद ख़्वाबे ग़फ़्लत में हो वोह दूसरों को क्या बेदार करेगा, जो ख़ुद पस्तियों की त़रफ़ महवे सफ़र हो वोह किसी को बुलन्दी का रास्ता क्यूंकर दिखाएगा।

*सूना जंगल रात अंधेरी छाई बदली काली है*
*सोने वालो जागते रहियो चोरों की रखवाली है*

(ह़दाइके बख़्शिश)

## साह़िबे औलाद इस्लामी भाइयो!

आप की औलाद, आप के जिगर का टुकड़ा और अपनी मां की आंखों का नूर सही लेकिन इस से पहले अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का बन्दा, नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का उम्मती और इस्लामी मुआ़-शरे का अहम फ़र्द है। अगर आप की तरबिय्यत इसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बन्दगी, सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ग़ुलामी और इस्लामी मुआ़-शरे में इस की ज़िम्मादारी न सिखा सकी तो उसे अपना फ़रमां बरदार बनाने का ख़्वाब देखना भी छोड़ दीजिये क्यूं कि येह इस्लाम ही है जो एक मुसल्मान को अपने वालिदैन का मुत़ीओ फ़रमां बरदार बनने की ता'लीम देता है। इस लिये औलाद की ज़ाहिरी ज़ैबो ज़ीनत, अच्छी ग़िज़ा, अच्छे लिबास और दीगर ज़रूरिय्यात की कफ़ालत के साथ साथ इन की अख़्लाक़ी व रूह़ानी तरबिय्यत के लिये भी कमर बस्ता हो जाइये।

## क्या बेटा भी बाप को मारता है ?

तम्बीहुल ग़ाफ़िलीन में है कि समर क़न्द के एक आ़लिम अबू ह़फ़्स رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی علَیْه के पास एक शख़्स आया और कहने लगा : "मेरे बेटे ने मुझे मारा है और तक्लीफ़ दी है।" उन्हों ने ह़ैरानी से पूछा : "क्या कभी बेटा भी बाप को मारता है ?" उस ने जवाब दिया : "जी हां ! ऐसा हुवा है।" अबू ह़फ़्स رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه ने दर्याफ़्त किया : "क्या तूने उसे इल्मो अदब सिखाया है ?" उस शख़्स ने नफ़ी में जवाब दिया। आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه ने पूछा : "क़ुरआने करीम सिखाया है ?" उस ने फिर नफ़ी में जवाब दिया तो आप ने पूछा : "फिर वोह क्या करता है ?" उस ने बताया : "वोह खेतीबाड़ी करता है।"

अबू ह़फ़्स رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : "क्या तुझे मा'लूम है कि उस ने तुझे क्यूं मारा है ?" उस ने कहा : "नहीं।" अबू ह़फ़्स رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه ने उस पर चोट की : "मेरा ख़याल तो येह है कि जब सुब्ह़ के वक़्त वोह गधे पर सुवार हो कर खेत की त़रफ़ जा रहा होगा, बेल उस के आगे और कुत्ता उस के पीछे होगा, क़ुरआन उसे पढ़ना आता नहीं लिहाज़ा वोह कुछ गुनगुना रहा होगा, ऐसे में तुम उस के सामने आए होगे। उस ने समझा होगा कि गाय है और तुम्हारे सर पर कोई चीज़ दे मारी होगी, शुक्र करो कि तुम्हारा सर नहीं फोड़ दिया।"

(تنبیہ الغافلین، باب حق الولد علی الوالد، ص ٦٨)

## बच्चों की तरबिय्यत कब शुरूअ़ की जाए ?

**वालिदैन** की एक ता'दाद है जो इस इन्तिज़ार में रहती है कि अभी तो बच्चा छोटा है जो चाहे करे, थोड़ा बड़ा हो जाए तो इस की अख़्लाक़ी तरबिय्यत शुरूअ़ करेंगे। ऐसे वालिदैन को चाहिये कि बचपन

ही से औलाद की तरबिय्यत पर भरपूर तवज्जोह दें क्यूं कि इस की ज़िन्दगी के इब्तिदाई साल बक़िय्या ज़िन्दगी के लिये बुन्याद की हैसिय्यत रखते हैं और येह भी ज़ेह्न में रहे कि पाएदार इमारत मज़बूत बुन्याद पर ही ता'मीर की जा सकती है। जो कुछ बच्चा अपने बचपन में सीखता है वोह सारी ज़िन्दगी उस के ज़ेह्न में रासिख़ रहता है क्यूं कि बच्चे का दिमाग़ मिस्ले मोम होता है उसे जिस सांचे में ढालना चाहें ढाला जा सकता है,..... बच्चे की याद दाश्त एक ख़ाली तख़्ती की मानिन्द होती है उस पर जो लिखा जाएगा सारी उ़म्र के लिये मह्फ़ूज़ हो जाएगा,..... बच्चे का ज़ेह्न ख़ाली खेत की मिस्ल है उस में जैसा बीज बोएंगे उसी मे'यार की फ़स्ल ह़ासिल होगी। येही वजह है कि अगर उसे बचपन ही से सलाम करने में पहल करने की आ़दत डाली जाए तो वोह उ़म्र भर इस आ़दत को नहीं छोड़ता, अगर उसे सच बोलने की आ़दत डाली जाए तो वोह सारी उ़म्र झूट से बेज़ार रहता है, अगर उसे सुन्नत के मुत़ाबिक़ खाने पीने, बैठने, जूता पहनने, लिबास पहनने, सर पर इ़मामा बांधने और बालों में कंघी वग़ैरा करने का आ़दी बना दिया जाए तो वोह न सिर्फ़ ख़ुद इन पाकीज़ा आ़दात को अपनाए रखता है बल्कि उस के येह म-दनी औसाफ़ इस की सोह़बत में रहने वाले दीगर बच्चों में भी मुन्तक़िल होना शुरूअ़ हो जाते हैं।

## तरबिय्यत करने वाले को कैसा होना चाहिये ?

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !**

**इस्लामी ख़ुतूत** पर तरबिय्यते औलाद का ख़्वाब उसी वक़्त शरमिन्दए ता'बीर हो सकता है जब उस के वालिदैन और घर के दीगर अफ़्राद क़द्रे किफ़ायत इल्मे दीन के ह़ामिल हों बल्कि इस पर आ़मिल भी हों क्यूं कि जिस की अपनी नमाज़ दुरुस्त नहीं वोह किसी को

दुरुस्त नमाज़ पढ़ना कैसे सिखाएगा, जो ख़ुद खाने पीने, लिबास पहनने और दीगर कामों को सुन्नत के मुत़ाबिक़ करने का आ़दी नहीं वोह अपनी औलाद को सुन्नतों का आ़मिल किस त़रह़ बनाएगा, जो ख़ुद रोज़े वग़ैरा के मसाइल नहीं जानता वोह अपनी औलाद को क्या सिखाएगा عَلٰی هٰذَا الْقِیاس

तरबिय्यत करने वालों के क़ौल व फ़े'ल में पाया जाने वाला तज़ाद भी बच्चे के नन्हे से ज़ेह्न के लिये बेह़द बाइ़से तश्वीश होगा कि एक काम येह ख़ुद तो करते हैं म-सलन झूट बोलते हैं, आपस में झगड़ते हैं मगर मुझे मन्अ़ करते हैं, जिस का नतीजा येह होगा कि अपने बड़ों की कोई नसीह़त उस के दिल में घर न कर सकेगी। अल ग़रज़ तरबिय्यते औलाद के लिये वालिदैन का अपना किरदार भी मिसाली होना चाहिये।

इस के साथ साथ घरेलू माह़ोल का भी बच्चों की ज़िन्दगी पर बहुत गहरा असर पड़ता है। अगर घर वाले नेक सीरत, शरीफ़ और ख़ुश अख़्लाक़ होंगे तो उन के ज़ेरे साया पलने वाले बच्चे भी ह़ुस्ने अख़्लाक़ के पैकर और किरदार के ग़ाज़ी होंगे इस के बर अ़क्स शराबी, अ़य्याश और गालम गलोच करने वालों के घर में परवरिश पाने वाला बच्चा उन के नापाक अ-सरात से मह़फ़ूज़ नहीं रह सकता। अल ग़रज़ बच्चों की तरबिय्यत सिर्फ़ पढ़ाने पर मौक़ूफ़ नहीं होती बल्कि मुख़्तलिफ़ रवय्यों, बातों और बाहमी तअ़ल्लुक़ात से भी बच्चों की ज़ेहनी तरबिय्यत होती है।

## मिसाली किरदार कैसे अपनाएं ?

**इस** म-दनी व मिसाली किरदार के ह़ुसूल के लिये वालिदैन को परेशान होने की क़त़्अ़न ज़रूरत नहीं, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** से वाबस्ता

होने की ब-र-कत से आ'ला अख़्लाक़ी औसाफ़ ग़ैर महसूस तौर पर इन के किरदार का हिस्सा बनते चले जाएंगे। इस के लिये घर के मर्दों बिल ख़ुसूस बच्चों के अब्बू को चाहिये कि वोह अपने शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शिर्कत करे और राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र करने वाले **आ़शिक़ाने रसूल के म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र करे। इन म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र की ब-र-कत से अपने साबिक़ा तर्ज़े ज़िन्दगी पर ग़ौरो फ़िक्र का मौक़अ़ मिलेगा और दिल हुस्ने आ़क़िबत के लिये बेचैन हो जाएगा जिस के नतीजे में इरतिकाबे गुनाह की कसरत पर नदामत महसूस होगी और तौबा की तौफ़ीक़ मिलेगी। आ़शिक़ाने रसूल के म-दनी क़ाफ़िलों में मुसल्सल सफ़र करने के नतीजे में ज़बान पर फ़ोहूश कलामी और फ़ुज़ूल गोई की जगह दुरूदे पाक जारी हो जाएगा, येह तिलावते क़ुरआन, हम्दे इलाही عَزَّوَجَلَّ और ना'ते रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आ़दी बन जाएगी, ग़ुस्से की आ़दत रुख़्सत हो जाएगी और इस की जगह नर्मी ले लेगी, बे सब्री की आ़दत तर्क कर के साबिरो शाकिर रहना नसीब होगा, तकब्बुर से जान छूट जाएगी और एह़तिरामे मुस्लिम का जज़्बा मिलेगा, दुन्यावी मालो दौलत की लालच से पीछा छूटेगा और नेकियों की हिर्स मिलेगी, अल ग़रज़ बार बार राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र करने वाले की ज़िन्दगी में म-दनी इन्क़िलाब बरपा हो जाएगा और اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपनी औलाद की म-दनी तरबिय्यत का जज़्बा भी नसीब होगा।

**बत़ौरे तरग़ीब** म-दनी क़ाफ़िले की एक **म-दनी बहार** आप के गोश गुज़ार की जाती है चुनान्चे शाहदरा (मर्कज़ुल औलिया लाहोर) के एक इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है, मैं अपने वालिदैन का इक्लौता बेटा था, ज़ियादा लाड प्यार ने मुझे ह़द द-रजा **ढीट** और मां बाप का सख़्त ना फ़रमान बना दिया था, रात गए तक आवारा गर्दी

करता और सुब्ह़ देर तक सोया रहता। मां बाप समझाते तो उन को झाड़ देता। वोह बेचारे बा'ज़ अवक़ात रो पड़ते। दुआएं मांगते मांगते मां की पलकें भीग जातीं। उस अ़ज़ीम लम्हे पर लाखों सलाम जिस "लम्हे" में मुझे **दा'वते इस्लामी** वाले एक आ़शिक़े रसूल से मुलाक़ात की सआ़दत मिली और उस ने महब्बत और प्यार से **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए मुझ पापी व बदकार को म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र के लिये तय्यार किया। चुनान्चे मैं **आ़शिक़ाने रसूल** के हमराह तीन दिन के **म-दनी क़ाफ़िले** का मुसाफ़िर बन गया।

**न जाने** इन आ़शिक़ाने रसूल ने तीन दिन के अन्दर क्या घोल कर पिला दिया कि मुझ जैसे ढीट इन्सान का **पथ्थर नुमा** दिल जो मां बाप के आंसूओं से भी न पिघलता था मोम बन गया, मेरे क़ल्ब में म-दनी इन्क़िलाब बरपा हो गया और मैं म-दनी क़ाफ़िले से **नमाज़ी** बन कर लौटा। घर आ कर मैं ने सलाम किया, वालिद साहिब की दस्त बोसी की और **अम्मी जान** के क़दम चूमे। घर वाले हैरान थे! इस को क्या हो गया है कि कल तक जो किसी की बात सुनने के लिये तय्यार नहीं था वोह आज इतना बा अदब बन गया है! اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ! **म-दनी क़ाफ़िले** में आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत ने मुझे यक्सर बदल कर रख दिया और येह बयान देते वक़्त मुझ साबिक़ा बे नमाज़ी को मुसल्मानों को नमाज़े फ़ज्र के लिये जगाने या'नी **सदाए मदीना** लगाने की ज़िम्मादारी मिली हुई है। (दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल में मुसल्मानों को नमाज़े फ़ज्र के लिये उठाने को सदाए मदीना लगाना कहते हैं।)

*गर्चे आ'माले बद, और अफ़्आ़ले बद — ने है रुस्वा किया, क़ाफ़िले में चलो कर*
*सफ़र आओगे, तुम सुधर जाओगे मांगो — चल कर दुआ़, क़ाफ़िले में चलो*

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(फ़ैज़ाने सुन्नत, बाब फ़ैज़ाने र-मज़ान, नफ़्ल रोज़ों के फ़ज़ाइल, जि. 1, स. 1370)

**अपनी** औलाद की बेहतरीन तरबिय्यत का ज़ेहन पाने के लिये बच्चों की **अम्मी** को चाहिये कि अपने शहर में होने वाले **इस्लामी बहनों** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में पाबन्दी से शिर्कत करें, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इन की ज़िन्दगी में भी म-दनी इन्क़िलाब बरपा हो जाएगा।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! सुन्नतों भरी ज़िन्दगी गुज़ारने के लिये इबादात व अख़्लाक़ियात के तअ़ल्लुक़ से अमीरे अहले सुन्नत, शैख़े त़रीक़त, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने इस्लामी भाइयों के लिये 72, इस्लामी बहनों के लिये 63 और त़-ल-बए इ़ल्मे दीन के लिये 92, दीनी त़ालिबात के लिये 83 और म-दनी मुन्नों और मुन्नियों के लिये 40 **म-दनी इन्आ़मात** सुवालात की सूरत में मुरत्तब किये हैं। इन म-दनी इन्आ़मात को अपना लेने के बा'द नेक बनने की राह में ह़ाइल रुकावटें अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्लो करम से ब तदरीज दूर हो जाती हैं और इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनता है। हमें चाहिये कि बा किरदार मुसल्मान बनने के लिये मक-त-बतुल मदीना की किसी भी शाख़ से म-दनी इन्आ़मात का कार्ड ह़ासिल करें और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना (या'नी अपना मुह़ा-सबा) करते हुए कार्ड पुर करें और हर म-दनी या'नी क़-मरी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के म-दनी इन्आ़मात के ज़िम्मादार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लें। म-दनी इन्आ़मात ने न जाने कितने इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों की ज़िन्दगियों में **म-दनी इन्क़िलाब** बरपा कर दिया है! इस की एक झलक मुला-ह़ज़ा हो :

## नमाज़े बा जमाअ़त के पाबन्द हो गए :

न्यू कराची के एक इस्लामी भाई का कुछ इस त़रह़ का बयान है : अ़लाक़े की मस्जिद के इमाम साहिब जो कि **दा'वते इस्लामी** से वाबस्ता हैं, उन्हों ने **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए मेरे बड़े भाईजान को **म-दनी इन्आ़मात** का एक कार्ड तोह़फ़े में दिया। वोह घर ले आए और पढ़ा तो ह़ैरान रह गए कि इस मुख़्तसर से कार्ड में एक मुसल्मान को इस्लामी ज़िन्दगी गुज़ारने का इतना ज़बर दस्त फ़ार्मूला दे दिया गया है! **म-दनी इन्आ़मात का कार्ड** मिलने की ब-र-कत से اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ उन को **नमाज़** का जज़्बा मिला और नमाज़े बा जमाअ़त की अदाएगी के लिये मस्जिद में ह़ाज़िर हो गए और अब पांच वक़्त के **नमाज़ी** बन चुके हैं, **दाढ़ी मुबारक** भी सजा ली और **म-दनी इन्आ़मात** का कार्ड भी पुर करते हैं।

*म-दनी इन्आ़मात के आ़मिल पे हर दम हर घड़ी*
*या इलाही ! ख़ूब बरसा रह़मतों की तू झड़ी*

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(फ़ैज़ाने सुन्नत, बाब फ़ैज़ाने र-मज़ान, फ़ैज़ाने लै-लतुल क़द्र, जि. 1, स. 1134)

# चन्द क़ाबिले लिह़ाज़ उमूर

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !**

यूं तो इन्सान की पूरी ज़िन्दगी ही क़ुरआनो सुन्नत के मुत़ाबिक़ होनी चाहिये मगर चन्द उमूर ऐसे हैं जिन का औलाद के वुजूद में आने से पहले लिह़ाज़ रखना बेह़द ज़रूरी है क्यूं कि औलाद की **सालिह़िय्यत** (या'नी परहेज़ गारी) इन उमूर से भी वाबस्ता होती है।

## (1) नेक औ़रत का इन्तिख़ाब :

उ़म्दा से उ़म्दा बीज भी उसी वक़्त अपने जौहर दिखा सकता है जब उस के लिये उ़म्दा ज़मीन का इन्तिख़ाब किया जाए। मां बच्चे के लिये गोया ज़मीन की ह़ैसिय्यत रखती है, लिहाज़ा बीवी के इन्तिख़ाब के सिल्सिले में मर्द को बहुत एह़तियात़ से काम लेना चाहिये कि मां की अच्छी या बुरी आ़दात कल औलाद में भी मुन्तक़िल होंगी। मु-तअ़द्दद अह़ादीसे करीमा में मर्द को नेक, सालिह़ा और अच्छी आ़दात की ह़ामिल पाक दामन बीवी का इन्तिख़ाब करने की ताकीद की गई है चुनान्चे

﴿1﴾ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "किसी औ़रत से निकाह़ करने के लिये चार चीज़ों को मद्दे नज़र रखा जाता है, (1) उस का माल (2) ह़सब नसब (3) हुस्नो जमाल और (4) दीन।" फिर फ़रमाया : "तुम्हारा हाथ ख़ाक आलूद हो तुम दीनदार औ़रत के ह़ुसूल की कोशिश करो।"

(صحیح بخاری، کتاب النکاح، باب الاکفاء فی الدین، الحدیث ۵۰۹۰، ج ۳، ص ۴۲۹)

﴾2﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि ह़बीबे परवर्द गार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''तक़्वा के बा'द मोमिन के लिये नेक बीबी से बेहतर कोई चीज़ नहीं अगर उसे हुक्म करता है तो वोह इत़ाअ़त करती है और उसे देखे तो ख़ुश कर दे और उस पर क़सम खा बैठे तो क़सम सच्ची कर दे और अगर वोह कहीं चला जाए तो अपने नफ़्स और शोहर के माल में भलाई करे (या'नी ख़ियानत व ज़ाएअ़ न करे) ।''

(سنن ابن ماجہ، کتاب النکاح، باب فضل النساء، الحدیث ۱۸۵۷، ج ۲، ص ۴۱۴)

﴾3﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''बेशक दुन्या बेहतरीन इस्ति'माल की चीज़ है लेकिन इस के बा वुजूद नेक और सालिह़ा औ़रत दुन्या के माल व मताअ़ से भी अफ़्ज़ल व बेहतरीन है ।''

(سنن ابن ماجہ، کتاب النکاح، باب فضل النساء، الحدیث ۱۸۵۵، ج ۲، ص ۴۱۲)

﴾4﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रिवायत फ़रमाते हैं कि रसूले पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''औ़रतों से उन के ह़ुस्न की वजह से निकाह़ न करो और न ही उन के माल की वजह से निकाह़ करो, कहीं ऐसा न हो कि उन का ह़ुस्न और माल उन्हें सरकशी और ना फ़रमानी में मुब्तला कर दे, बल्कि उन की दीनदारी की वजह से उन के साथ निकाह़ करो । क्यूं कि चपटी नाक, और सियाह रंग वाली कनीज़ दीनदार हो तो बेहतर है ।''

(سنن ابن ماجہ، کتاب النکاح، باب تزویج ذات الدین، الحدیث ۱۸۵۹، ج ۲، ص ۴۱۵)

## (2) अच्छी क़ौम में निकाह़ करे :

**निकाह़** के सिल्सिले में औ़रत के अहले ख़ाना के त़र्ज़े ज़िन्दगी को भी मद्दे नज़र रखना ज़रूरी है चुनान्चे उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا से रिवायत है नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अपने नुत्फ़े के लिये अच्छी जगह तलाश करो कि औ़रतें अपने ही बहन भाइयों के मुशाबा बच्चे पैदा करती हैं।"

(کنز العمال: الکامل فی ضعفاء الرجال، عیسیٰ بن میمون الجروی، ج ۶، ص ۴۲۳)

## (3) निकाह़ के लिये अच्छी अच्छी निय्यतें करे :

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि मैं ने हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना : "जिस ने किसी औ़रत से उस की इ़ज़्ज़त की वजह से निकाह़ किया तो अल्लाह तआ़ला उस की ज़िल्लत को बढ़ाएगा, जिस ने औ़रत के मालो दौलत (के लालच) की वजह से निकाह़ किया, अल्लाह तआ़ला उस की ग़ुरबत में इज़ाफ़ा करेगा, जिस ने औ़रत के ह़सब नसब (या'नी ख़ानदानी बड़ाई) की बिना पे निकाह़ किया, अल्लाह तआ़ला उस की कमीनगी को बढ़ाएगा और जिस ने सिर्फ़ और सिर्फ़ इस लिये निकाह़ किया कि अपनी नज़र की ह़िफ़ाज़त करे, अपनी शर्मगाह को मह़फ़ूज़ रखे, या सिलए रेह़्मी करे तो अल्लाह तआ़ला उस के लिये औ़रत में ब-र-कत देगा और औ़रत के लिये मर्द में ब-र-कत देगा।"

(المعجم الاوسط: الحدیث ۲۳۴۲، ج ۲، ص ۱۸)

# निकाह़ की निय्यतें

(अज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार** क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

**फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صلّی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلّم :

"نِیَّۃُ الْمُؤْمِنِ خَیْرٌ مِّنْ عَمَلِہٖ या'नी मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।" (المعجم الکبیر للطبرانی، الحدیث: ۵۹۴۲، ج۶، ص۱۸۵)

**दो म-दनी फूल :**

﴾1﴿ बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़-मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

﴾2﴿ जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

**निकाह़** करने वाले को चाहिये कि अच्छी अच्छी निय्यतें कर ले ता कि दीगर फ़वाइद के साथ साथ वोह सवाब का भी मुस्तह़िक़ हो सके। "**निकाह़ सुन्नत है**" के नव हु़रूफ़ की निस्बत से **9** निय्यतें पेशे ख़िदमत हैं :

(1) सुन्नते रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की अदाएगी करूंगा।

(2) नेक औ़रत से निकाह़ करूंगा।

(3) अच्छी क़ौम में निकाह़ करूंगा।

(4) इस के ज़रीए़ ईमान की ह़िफ़ाज़त करूंगा।

(5) इस के ज़रीए़ शर्मगाह की ह़िफ़ाज़त करूंगा।

(6) ख़ुद को बद निगाही से बचाऊंगा।

(7) मह़ज़ लज़्ज़त या क़ज़ाए शह्वत के लिये नहीं हु़सूले औलाद के लिये तख़्लिया करूंगा।

(8) मिलाप से पहले "बिस्मिल्लाह" और मस्नून दुआ पढ़ूंगा।

(9) सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत में इज़ाफ़े का ज़रीआ बनूंगा। ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से मरवी है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "निकाह़ मेरी सुन्नत से है, पस जो शख़्स मेरी सुन्नत पर अ़मल न करे, वोह मुझ से नहीं। पस निकाह़ करो, क्यूं कि मैं तुम्हारी कसरत की बिना पर दीगर उम्मतों पर फ़ख़्र करूंगा।"

(سنن ابن ماجہ، کتاب النکاح، باب ماجاء فی فضل النکاح، الحدیث ۱۸۴۶ ج ۲، ص ۴۰۶)

**म-दनी मश्वरा :** शादी शुदगान निय्यतों वग़ैरा की मज़ीद मा'लूमात के लिये फ़तावा र-ज़विय्या (तख़रीज शुदा) जिल्द 23 सफ़ह़ा नम्बर 385, 386 पर मस्अला नम्बर 41, 42 का मुत़ा-लआ़ फ़रमा लें।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**मस्अला :**

**जिस** औ़रत से निकाह़ करने का इरादा हो इस निय्यत से उसे देखना जाइज़ है कि ह़दीसे पाक में येह आया है कि : "जिस से निकाह़ करना चाहते हो उस को देख लो कि येह बक़ाए मह़ब्बत का ज़रीआ़ होगा।"

(جامع الترمذی، کتاب النکاح، باب ماجاء فی النظر...الخ، الحدیث ۱۰۸۹، ج ۲، ص ۳۴۶)

**ह़कीमुल** उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِی लिखते हैं : "मगर बेहतर येह है कि पैग़ाम से पहले देखा जाए और वोह भी किसी बहाने से कि औ़रत को पता न लगे ताकि ना पसन्दीदगी की सूरत में औ़रत को रन्ज न हो।" मज़ीद लिखते हैं : "देखने से मुराद चेहरा देखना है कि ह़ुस्न व क़ब्ह़ चेहरे में ही होता है और इस से

मुराद वोही सूरत है जो अभी अ़र्ज़ की गई या'नी किसी बहाने से देख लेना या किसी मो'तबर औ़रत से दिखवा लेना न कि बा क़ाइदा औ़रत का इन्टरव्यू करना।" (मिरआतुल मनाजीह, जि. 5, स. 11, 12)

**जिस** औ़रत से निकाह़ करना चाहता है अगर उस को देखने की तरकीब न बन सके तो उस शख़्स को चाहिये कि अपने घर की किसी औ़रत को भेज कर दिखवा ले और वोह आ कर उस के सामने सारा हुल्या व नक़्शा वग़ैरा बयान कर दे ताकि उसे उस की शक्लो सूरत के मु-तअ़ल्लिक़ इत्मीनान हो जाए। (ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحۃ، فصل فی النظر والمس، ج۹، ص۶۱۱)

**इसी** त़रह़ औ़रत उस मर्द को जिस ने उस के पास पैग़ाम भेजा देख सकती है अगर्चे अन्देशए शह्वत हो मगर देखने में दोनों की निय्यत येही हो कि ह़दीसे पाक पर अ़मल करना चाहते हैं।

(الدرالمختار وردالمحتار، کتاب الحظر والاباحۃ، فصل فی النظر والمس، ج۹، ص۶۱۰ ماخوذاً)

## (4) मंगनी और शादी के मौक़अ़ पर ना जाइज़ रुसूमात से बचे :

**हमारे** मुआ़-शरे में मंगनी और शादी के मौक़अ़ पर मुख़्तलिफ़ **रुसूमात** अदा करने का बहुत ज़ियादा रवाज है। फिर हर अ़लाक़े, हर क़ौम और हर ख़ानदान की अपनी मख़्सूस रुसूम होती हैं। चूंकि येह रुसूम महूज़ उ़र्फ़ की बुन्याद पर अदा की जाती हैं और कोई भी इन्हें फ़र्ज़ व वाजिब तसव्वुर नहीं करता लिहाज़ा जब तक किसी रस्म में कोई शर-ई क़बाह़त न पाई जाए उसे ह़राम व ना जाइज़ नहीं कह सकते। चुनान्चे रुसूम की पाबन्दी उसी ह़द तक की जा सकती है कि किसी फ़े'ले ह़राम में मुब्तला न होना पड़े मगर बा'ज़ लोग इस क़दर पाबन्दी करते हैं कि ना जाइज़ फ़े'ल करना पड़े तो पड़े मगर रस्म का छोड़ना गवारा नहीं म-सलन लड़की जवान है और रुसूम अदा करने को रुपिया नहीं तो येह न होगा कि रुसूम छोड़ दें और निकाह़ कर दें कि

सबुक दोश हो जाएं और फ़ितने का दरवाज़ा बन्द हो बल्कि सूद जैसी ला'नत को गले लगाने के लिये तय्यार हो जाते हैं। وَالْعِيَاذُبِاللّٰہِ تَعَالٰی

(माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, हि़स्सए हफ़्तुम, स. 94)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !**

**कसीर** रुसूमात ऐसी होती हैं जो कि शरअ़न ना जाइज़ होती हैं म-सलन उस में मर्द व औ़रत का बे पर्दा इख़्तिलात़ होता है या वोह रस्म किसी मुसल्मान की दिल आज़ारी पर मुश्तमिल होती है, عَلٰی ھٰذَا الْقِیَاس लेकिन ह़या व शर्म को बालाए त़ाक़ रख कर इन रुसूमात को ज़रूर पूरा किया जाता है। **म-सलन**

**अक्सर** घरों में रवाज है कि शादी के अय्याम में रिश्तेदार और मह़ल्ले की औ़रतें जम्अ़ हो कर **ढोलक** बजाती और गीत गाती हैं, येह ह़राम है कि अव्वलन ढोल बजाना ही ह़राम फिर औ़रतों का गाना, मज़ीद येह कि औ़रत की आवाज़ ना मह़रमों को पहुंचना और वोह भी गाने की और वोह भी इ़श्क़ व हिज्र व विसाल के अश्आ़र या गीत। जो औ़रतें अपने घरों में बात करते वक़्त घर से बाहर आवाज़ जाने को मा'यूब जानती हैं ऐसे मौक़ओ़ं पर वोह भी शरीक हो जाती हैं गोया उन के नज़्दीक गाना कोई ऐ़ब ही नहीं कितनी ही दूर तक आवाज़ जाए कोई ह़रज नहीं नीज़ ऐसे गाने में जवान कंवारी लड़कियां भी शरीक होती हैं। ऐसे अश्आ़र पढ़ना या सुनना किस ह़द तक उन के दबे हुए जोश को उभारेगा और कैसे कैसे वल्वले पैदा करेगा और अख़्लाक़ व आ़दात पर इस का कहां तक असर पड़ेगा येह बातें ऐसी नहीं जिन के समझाने की ज़रूरत हो या सुबूत पेश करने की ह़ाजत हो।

(माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, हि़स्सए हफ़्तुम, स. 95)

इसी त़रह़ **महंदी** की रस्म भी है जिस में नौ जवान लड़कियां ज़र्क़ बर्क़ लिबास पहने ख़ूब बन संवर कर बे पर्दा ह़ालत में बाज़ारों और गलियों में से महंदी के थाल लिये हुए गुज़रती हैं और फिर दुल्हन या दूल्हा के घर जा कर नाच गाने की ''प्राइवेट'' मह़फ़िल सजाती हैं और त़रह़ त़रह़ के फ़ितनों के पैदाइश का ज़रीआ़ बनती हैं। ऐ काश ! ऐसी इस्लामी बहनों को चादरे ह़या नसीब हो जाए और वोह इस बेहूदा रस्म से बाज़ आ जाएं।

**इसी** पर बस नहीं बल्कि अब तो बा क़ाइदा **फ़ंक्शन** का एहतिमाम किया जाता है जिस में साज़ो आलात के साथ गुलूकारों और गुलूकाराओं से स्पीकर पर गाने सुने जाते हैं और तवाइफ़ों का नाच देखा जाता है और हाथ पीट पीट कर तालियों की सूरत में उन्हें ''दाद'' भी दी जाती है। इस क़िस्म की मह़ाफ़िल में जिन फ़वाहिश व बदकारियों और मख़्बे अख़्लाक़ बातों का इज्तिमाअ़ होता है इन के बयान की ह़ाजत नहीं। مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मां बाप, बेटा बेटी, भाई बहन एक साथ इन ख़ुशियों में मगन होते हैं और ''ह़या'' दूर खड़ी शर्म से पानी पानी हो रही होती है। ऐसी ही मह़फ़िलों की वजह से अक्सर नौ जवान आवारा हो जाते हैं और अपना धन दौलत बरबाद कर बैठते हैं। उन्हें तवाइफ़ से मह़ब्बत और अपनी ज़ौजा से नफ़रत पैदा हो जाती है।

**मंगनी** शादी के वा'दे का नाम है। लेकिन इस मौक़अ़ पर भी बेहूदा रस्मों का इन्इ़क़ाद ज़रूरी समझा जाता है जिन में से एक येह भी है कि लड़का ख़ुद अपने हाथों से अपनी मंगेतर के हाथ में अंगूठी पहनाता है।

मर्द को सर और दाढ़ी के बालों के सिवा **महंदी** लगाना ना जाइज़ है मगर अक्सर दूल्हे अपने हाथ बल्कि पाउं को भी महंदी से रंगे हुए होते हैं। (माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, ह़िस्सए हफ़्तुम, स. 95)

**बेंड बाजे** वाले बुलवाए जाते हैं जो बारात की आमद के मौक़अ़ पर अपने फ़न का मुज़ा–हरा करते हैं और साज़ो आलात बजाने के गुनाह कमाने के साथ साथ सोए हुए मुसल्मानों और मरीज़ों को अज़िय्यत भी पहुंचाते हैं।

रुख़्सती के मौक़अ़ पर **दूध पिलाई** की रस्म अदा की जाती है जिस में दूल्हे को ना महरम ख़्वातीन के मज्मअ़ में बुलाया जाता है। उस के दोस्त ऐसे मौक़अ़ पर उसे तन्हा नहीं छोड़ते और उस के साथ ही तशरीफ़ लाते हैं। फिर कोई ना महरम नौ जवान लड़की अपनी हम–जोलियों के झुरमट में ''बड़ी महब्बत से'' दूल्हे को दूध का गिलास पेश करती है और फिर ''हल्ला गुल्ला'' होता है और दूल्हा के दोस्त ना महरम औरतों के साथ ''हंसी मज़ाक़'' का शग़्ल करते हैं, फिर आख़िर में दूल्हे से दूध पिलाई का मुता–लबा किया जाता है जो उ़मूमन उस की हैसिय्यत से कई गुना ज़ाइद होती है ऐसे मौक़अ़ पर बे पर्दगी के इलावा भी बहुत तक्लीफ़ देह मनाज़िर दिखाई देते हैं।

**आतश बाज़ी** हराम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है मगर बा'ज़ लोग इन कामों का इतना एहतिमाम करते हैं कि येह न हों तो गोया शादी ही न हुई बल्कि बा'ज़ तो इतने बेबाक होते हैं कि अगर शादी में येह हराम काम न हों तो उसे ग़मी और जनाज़े से ता'बीर करते हैं। येह ख़याल नहीं करते कि एक तो गुनाह और शरीअ़त की मुख़ा–लफ़त है, दूसरे माल ज़ाएअ़ करना, तीसरे तमाम तमाशाइयों के गुनाह का येही सबब है और सब के मज्मूए़ के बराबर इस पर गुनाह का बोझ। मगर आह! एक वक़्ती ख़ुशी में येह सब कुछ कर लिया जाता है। मुसल्मान होने की हैसिय्यत से हम पर लाज़िम है कि अपने हर काम को

शरीअ़त के मुवाफ़िक़ करें अल्लाह व रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلَّم की मुख़ा-लफ़त से बचें इसी में दीनो दुन्या की भलाई है।

(माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, हिस्सए हफ़्तुम, स. 95)

## (5) निकाह़ के मुस्तह़ब्बात पर अ़मल करे :

**म-सलन** (1) ए'लानिया होना (2) निकाह़ से पहले ख़ुत्बा पढ़ना कोई सा ख़ुत्बा हो और बेहतर वोह है जो ह़दीस में वारिद हुवा (3) मस्जिद में होना (4) जुमुआ़ के दिन (5) गवाहाने आ़दिल के सामने (6) औ़रत उ़म्र, ह़सब, माल, इ़ज़्ज़त में मर्द से कम हो और (7) चाल चलन और अख़्लाक़ व तक़्वा व जमाल में बेश (या'नी ज़ियादा) हो। (الدرالمختار، کتاب النکاح، ج۴، ص۷۵)

## (6) इसराफ़ से परहेज़ करे :

कुरआने पाक में है :

وَلَا تُسْرِفُوْا ؕ اِنَّهٗ لَا یُحِبُّ الْمُسْرِفِیْنَ (پ ۸ الانعام ۱۴۱)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और बे जा न ख़र्चो बेशक बे जा ख़रचने वाले उसे पसन्द नहीं।

**मुफ़स्सिरे** शहीर ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْمَنَّان इस आयत के तह़्त **बे जा ख़र्च** (या'नी इसराफ़) की तफ़्सील बयान करते हुए रक़म त़राज़ हैं, "ना जाइज़ जगह पर ख़र्च करना भी बे जा ख़र्च है और सारा माल ख़ैरात कर के बाल बच्चों को फ़क़ीर बना देना भी बे जा ख़र्च है, **ज़रूरत से ज़ियादा ख़र्च भी बे जा ख़र्च है** इसी लिये आ'ज़ाए वुज़ू को (बिला इजाज़ते शर-ई) चार बार धोना इसराफ़ माना गया है।" (नूरुल इरफ़ान, स. 232)

**मा'लूम** हुवा कि ज़रूरत से ज़ियादा ख़र्च भी बे जा ख़र्च (या'नी इसराफ़) है मगर आ़म मुशा-हदा है कि एह़तियात़ पसन्दी की आ़दत रखने वाले इस्लामी भाई भी ऐसे मौक़अ़ पर बे एह़तियाती कर जाते हैं, म-सलन मेहमानों की ता'दाद से कहीं ज़ियादा खाना तय्यार करवा लिया जाता है जिस के बच जाने की सूरत में ख़राब होने का क़वी अन्देशा होता है।

## (6) तख़्लिये में शर-ई हुदूद की पासदारी करे :

जब शोहर अपनी बीवी से मुबा-शरत का इरादा करे तो शरीअ़त ने इस के भी आदाब बताए हैं। चुनान्चे शादी की पहली रात शोहर को चाहिये कि बीवी की पेशानी पर हाथ रख कर येह दुआ़ पढ़े :

اَللّٰهُمَّ اِنِّیۡ اَسۡئَلُكَ خَيۡرَهَا وَخَيۡرَمَاجَبَلۡتَهَا عَلَيۡهِ

وَاَعُوۡذُبِكَ مِنۡ شَرِّهَا وَ(مِنۡ) شَرِّمَاجَبَلۡتَهَا عَلَيۡهِ

या'नी : या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझ से इस की भलाई चाहता हूं और ख़ास तौ़र पर जो भलाई तूने इस की फ़ित़रत में रखी है और इस के शर से पनाह मांगता हूं जो इस की फ़ित़रत में है।

(سنن ابی داؤد، کتاب النکاح، باب فی جامع النکاح، الحدیث ۲۱۶۰، ج ۲، ص ۳۶۲)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا से रिवायत है, सय्यिदे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जब तुम में से कोई शख़्स अपनी बीवी से जिमाअ़ का इरादा करे तो येह दुआ़ पढ़े :

بِسۡمِ اللّٰهِ، اَللّٰهُمَّ جَنِّبۡنَا الشَّيۡطٰنَ وَجَنِّبِ الشَّيۡطَانَ مَا رَزَقۡتَنَا

या'नी "अल्लाह के नाम से, ऐ अल्लाह ! हमें शैत़ान से मह़फ़ूज़ रख और जो (औलाद) हमें दे उसे भी शैत़ान से मह़फ़ूज़ रख।"

पस अगर उन के लिये कोई बच्चा मुक़द्दर हो गया तो अल्लाह तआ़ला उसे हमेशा शैत़ान से महफ़ूज़ रखेगा।''

(صحیح مسلم، کتاب النکاح، باب مایستحب ان یقولہ عند الجماع، الحدیث ۱۴۳۴، ص ۷۵۱)

इस जज़्बाती मौक़अ़ पर शर-ई अह़काम पर अ़मल हमें शैत़ानी पन्जों से बचाएगा और हमारी नस्लों की भी ह़िफ़ाज़त होगी। वक़्ते जिमाअ़ एक दूसरे की शर्मगाह देखने और ज़ियादा बातें करने से भी मन्अ़ किया गया है। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जब तुम में से कोई अपनी बीवी या लौंडी से जिमाअ़ करे तो उस की शर्मगाह की त़रफ़ न देखे कि इस से बच्चे के नाबीना होने का अन्देशा है।''

(الکامل فی ضعفاء الرجال، بقیۃ ابن الولید، ج ۲، ص ۲۶۵)

ह़ज़रते सय्यिदुना क़ुबैसा बिन ज़ूहैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि : ''जिमाअ़ के वक़्त ज़ियादा गुफ़्त-गू न करो कि इस से (बच्चे के) गूंगा या तोतला होने का ख़त़रा है।''

(کنز العمال: کتاب النکاح، باب محظورات المباشرۃ، ج ۱۶، ص ۱۵۱، الحدیث ۴۴۸۹۳)

## रब्बुल आ़-लमीन جَلَّ جَلَالُہٗ का शुक्र अदा कीजिये

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !**

इन्सान को चाहिये कि जब औलाद के ह़वाले से कोई ''अच्छी ख़बर'' मिले तो सज्दए शुक्र बजा लाए क्यूं कि शुक्रे ने'मत से ने'मतों में इज़ाफ़ा होता है। अल्लाह तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

لَئِنْ شَكَرْتُمْ لَاَزِيْدَنَّكُمْ (پ۱۳، ابراہیم: ۷)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** अगर एह़सान मानोगे तो मैं तुम्हें और दूंगा।

## मां के लिये ख़ुश ख़बरी :

एक मरतबा नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने औरतों से इर्शाद फ़रमाया : "क्या तुम में से कोई इस बात पर राज़ी नहीं कि जब वोह अपने शोहर से हामिला हो और वोह शोहर उस से राज़ी हो तो उस को ऐसा सवाब अता किया जाता है जैसा अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की राह में रोज़ा रखने और शब बेदारी करने वाले को मिलता है, और उसे दर्दे ज़ेह (या'नी वक़्ते विलादत की तक्लीफ़) पहुंचने पर ऐसे ऐसे इन्आमात दिये जाएंगे कि जिन पर आस्मान व ज़मीन वालों में से किसी को मुत्तलअ नहीं किया गया, और वोह बच्चे को जितना दूध पिलाएगी तो हर घूंट के बदले एक नेकी अता की जाएगी और अगर उसे बच्चे की वजह से रात को जागना पड़े तो उसे राहे ख़ुदा عَزَّ وَجَلَّ में 70 गुलाम आज़ाद करने का सवाब मिलेगा।"

(الجامع الصغیر، الحدیث۱۵۹۲، ج۱، ص۹۹)

## अच्छी अच्छी निय्यतें कीजिये

**वालिदैन** बिल ख़ुसूस वालिद को चाहिये कि अपनी औलाद के लिये अच्छी अच्छी निय्यतें करे।

## "या अल्लाह नेक औलाद अता कर" के उन्नीस हुरूफ़ की निस्बत से 19 निय्यतें

(अज़ : शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

**फ़रमाने मुस्तफ़ा** صلّی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلّم **:**

"نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ" या'नी मुसलमान की निय्यत उस के अमल से बेहतर है।" (المعجم الکبیر للطبرانی، الحدیث: ۵۹۴۲، ج۶، ص۱۸۵)

**दो म-दनी फूल :**

﴾1﴿ बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़-मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

﴾2﴿ जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

(1) अपनी औलाद की सुन्नत के मुत़ाबिक़ तरबिय्यत करूंगा।

(2) जब बच्चा पैदा हुवा तो सीधे कान में अज़ान और बाएं में तक्बीर कहूंगा।

(3) बच्ची पैदा होने पर ना ख़ुशी नहीं करूंगा बल्कि ने'मते इलाहिय्यह जान कर शुक्रे इलाही عَزَّوَجَلَّ बजा लाऊंगा।

(4) किसी बुज़ुर्ग से उस की तह्नीक कराऊंगा। (या'नी उन से दर-ख़्वास्त करूंगा कि वोह छुहारा या कोई मीठी चीज़ चबा कर इस के तालू पर लगा दें)

(5) अगर लड़का हुवा तो हुसूले ब-र-कत के लिये उस का नाम "मुह़म्मद" या "अह़मद" रखूंगा।

(6) साथ ही पुकारने के लिये बुज़ुर्गों से निस्बत वाला भी कोई नाम रख लूंगा।

(7) ह़त्तल इम्कान उस के नाम "मुह़म्मद" या "अह़मद" की निस्बत से उस की ता'ज़ीम करूंगा।

(8) उन्हें किसी जामेए़ शराइत़ पीर साहिब का मुरीद बनाऊंगा।

(9) सातवें दिन उस का अ़क़ीक़ा करूंगा। (यौमे पैदाइश के बा'द आने वाला हर अगला दिन उस के लिये सातवां दिन होता है म-सलन पीर शरीफ़ को बच्चा पैदा हुवा तो ज़िन्दगी की हर इतवार उस का सातवां दिन है)

(10) सर के बाल उतरवा कर उन के बराबर चांदी तोल कर ख़ैरात करूंगा।

(11) औलाद को ह़लाल कमाई से खिलाऊंगा।

(12) ह़राम की कमाई से बचाऊंगा।

(13) उन्हें बहलाने के लिये झूटा वा'दा करने से बचूंगा।

(14) अपने तमाम बच्चों से यक्सां सुलूक करूंगा।

(15) उन्हें इ़ल्मे दीन सिखाऊंगा।

(16) ना फ़रमानी का एह़तिमाल रखने वाला काम हुक्मन नहीं फ़क़त बत़ौरे मश्वरा कह कर उन्हें ना फ़रमानी की आफ़त से बचाऊंगा।

(17) अगर कभी मैं ने उन्हें कोई काम (हुक्मन) कहा और उन्हों ने न किया या ना फ़रमानी कर के मेरा दिल दुखाया तो उन को मुआ़फ कर दूंगा। (मां बाप मुआ़फ़ कर भी दें तब भी औलाद को तौबा करनी होगी क्यूं कि वालिदैन की ना फ़रमानी में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की भी ना फ़रमानी है।)

(18) वक़्तन फ़ वक़्तन औलाद के नेक बनने और बे ह़िसाब बख़्शे जाने की दुआ़ करता रहूंगा।

(19) बालिग़ होने पर जल्द तर शादी की तरकीब करूंगा।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

## ज़मानए ह़म्ल की एह़तियातें

चूंकि ज़मानए ह़म्ल के मुआ़-मलात बच्चे की शख़्सिय्यत पर गहरे अ-सरात मुरत्तब करते हैं इस लिये मां को चाहिये कि ख़ुसूसन ज़मानए ह़म्ल में अपने अफ़्कार व ख़यालात को पाकीज़ा रखने की कोशिश करे। अगर वोह येह ज़माना केबल और वी.सी.आर पर फ़िल्में डिरामे देखते हुए गुज़ारेगी तो शिकम में पलने वाली औलाद पर जो अ-सरात मुरत्तब होंगे वोह औलाद के बा शुऊ़र होने पर ब आसानी मुला-ह़ज़ा किये जा सकते हैं। जब तक माएं इ़बादत व रियाज़त का शौक़ और तिलावते क़ुरआन का ज़ौक़ रखने वाली होती थीं उन की गोद में पलने वाली औलाद भी इ़ल्मो अ़मल का पैकर और ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ का मज़्हर हुवा करती थी। जब माओं ने नमाज़ें तर्क करना अपना मा'मूल, फ़ेशन को अपना शिआ़र और बे पर्दगी को अपना वक़ार बना लिया तो औलादें भी उसी डगर पर चल निकलीं और फ़ह़्ह़ाशी व

उ़रयानी और बे राह रवी का सैलाब ह़या को बहा कर ले गया اِلَّامَاشَآءَاللّٰہ

**बहर ह़ाल** मां को चाहिये कि

(1) नेक आ'माल की कसरत करे कि वालिदैन की नेकियों की ब-र-कतें औलाद को मिलती हैं। (नेक आ'माल के फ़ज़ाइल जानने के लिये "जन्नत में ले जाने वाले आ'माल" (मत़्बूआ़ मक-त-बतुल मदीना) का मुत़ा-लआ़ कीजिये।)

(2) नमाज़ों की पाबन्दी करती रहे, हरगिज़ हरगिज़ सुस्ती न करे कि ऐसी ह़ालत में नमाज़ मुआ़फ़ नहीं हो जाती।

(3) इस मरह़ले पर तिलावते क़ुरआन करे कि हमारी मुक़द्दस बीबियां इस ह़ालत में भी नूरे क़ुरआन से अपने क़ुलूब को मुनव्वर किया करती थीं।

## पन्दरह पारे सुना दिये :

हु़ज़ूर सय्यिदुना ख़्वाजा क़ुत़्बुल ह़क़्क़े वद्दीन बख़्तियार काकी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की उ़म्र जिस दिन चार बरस चार महीने चार दिन की हुई। तक़्रीबे बिस्मिल्लाह मुक़र्रर हुई तो लोग बुलाए गए। ह़ज़रते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ भी मौजूद थे, बिस्मिल्लाह पढ़ाना चाही मगर इल्हाम हुवा कि ठहरो ! ह़मीदुद्दीन नागोरी आता है वोह पढ़ाएगा। उधर नागोर (में) क़ाज़ी ह़मीदुद्दीन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को इल्हाम हुवा कि जल्द जा ! मेरे एक बन्दे को बिस्मिल्लाह पढ़ा। क़ाज़ी साहि़ब फ़ौरन तशरीफ़ लाए और आप से फ़रमाया : "साहि़ब ज़ादे पढ़िये بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ" आप ने पढ़ा اَعُوۡذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیۡطٰنِ الرَّجِیۡمِ ؕ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ और शुरूअ़ से ले कर पन्दरह पारे ह़िफ़्ज़ सुना दिये। ह़ज़रत क़ाज़ी

साहिब और ख़्वाजा साहिब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمَا ने फ़रमाया : ''साहिब ज़ादे आगे पढ़िये।'' फ़रमाया : ''मैं ने अपनी मां के शिकम में इतने ही सुने थे और इसी क़दर उन को याद थे वोह मुझे भी याद हो गए।''

(अल मल्फ़ूज़, हिस्सा : 4, स. 415)

(4) इस हालत में बिल ख़ुसूस रिज़्क़े हलाल इस्ति'माल करे ताकि बच्चे का गोश्त पोस्त हलाल ग़िज़ा से बने।

## मुश्तबा ग़िज़ा निकालना पड़ती :

हज़रते सय्यिदुना बा यज़ीद बिस्तामी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की वालिदा رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْهَا फ़रमाती हैं कि ''जिस वक़्त बा यज़ीद मेरे शिकम में था तो अगर कोई मुश्तबा ग़िज़ा मेरे शिकम में चली जाती तो इस क़दर बेचैनी होती कि मुझे हल्क़ में उंगली डाल कर निकालना पड़ती।''

(تذکرۃ الاولیاء، ذکر با یزید بسطامی، ص۱۲۹)

## मा'ज़िरत करना पड़ती :

हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه पैदाइशी मुत्तक़ी थे, एक मरतबा आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की वालिदए मोहतरमा رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْهَا ने अय्यामे हम्ल में हमसाया की कोई चीज़ बिला इजाज़त मुंह में रख ली तो आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने पेट में तड़पना शुरूअ़ कर दिया और जब तक उन्हों ने हमसाया से मा'ज़िरत तलब न की आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का इज़्तिराब ख़त्म न हुवा।

(تذکرۃ الاولیاء، ذکر سفیان ثوری، ص۱۷٤)

(5) खाने पीने, लिबास, चलने बैठने, सोने वग़ैरा के मुआ़-मलात में सुन्नतों पर अ़मल करे।

(6) ज़बान की एह़तियात़ अपनाते हुए झूट, ग़ीबत, चुग़ली वग़ैरा गुनाहों से बचती रहे।

(7) स-दक़ा व ख़ैरात की कसरत करे कि स-दक़ा बलाओं को टालता है।

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन अबी त़ालिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "स-दक़ा देने में जल्दी किया करो क्यूं कि बला स-दक़े से आगे नहीं बढ़ सकती।"

(مجمع الزوائد باب فضل صدقۃ الزکاۃ، الحدیث ۴۶۰۶، ج ۳، ص ۲۸۴)

(8) बा'ज़ इस्लामी बहनें ह़ालते ह़म्ल में अपने कमरे में किसी बच्चे या बच्ची की तस्वीर लगा लेती हैं याद रखिये कि मकान में किसी ज़ी रूह़ की तस्वीर लगाना जाइज़ नहीं। (बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 16, सफ़ह़ा, 208)

**और** जिस घर में जानदार की तसावीर हों वहां रह़मत के फ़िरिश्ते दाख़िल नहीं होते। ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से रिवायत है कि सरकारे मदीना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इर्शाद फ़रमाया : "उस घर में फ़िरिश्ते दाख़िल नहीं होते जिस में कुत्ता या तस्वीर हो।" (صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب شھود الملائکۃ بدراً، الحدیث ۴۰۰۲، ج ۳، ص ۱۹)

**अगर** देखना ही है तो प्यारा प्यारा का'बा शरीफ़ और सब्ज़ गुम्बद के जल्वे देखिये और घर में इस्लामी तुग़रे आवेज़ां कीजिये।

*देखना है तो मदीना देखिये*
*क़स्रे शाही का नज़ारा कुछ नहीं*

(9) दुआ़ओं की कसरत करे की दुआ़ मोमिन का हथियार है। ह़ज़रते सय्यि-दतुना मरयम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की वालिदा ने भी इस

ह़ालत में दुआ़ की थी चुनान्चे क़ुरआने पाक में इर्शाद होता है :

رَبِّ اِنِّیۡ وَضَعۡتُهَاۤ اُنۡثٰی ؕ وَاللّٰهُ اَعۡلَمُ بِمَا وَضَعَتۡ ؕ وَلَيۡسَ الذَّکَرُ کَالۡاُنۡثٰی ۚ وَاِنِّیۡ سَمَّيۡتُهَا مَرۡيَمَ وَاِنِّیۡۤ اُعِيۡذُهَا بِکَ وَذُرِّيَّتَهَا مِنَ الشَّيۡطٰنِ الرَّجِيۡمِ ۝

(پ۳،اٰل عمران۳۶)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ रब मेरे येह तो मैं ने लड़की जनी और अल्लाह को ख़ूब मा'लूम है जो कुछ वोह जनी और वोह लड़का जो इस ने मांगा इस लड़की सा नहीं और मैं ने इस का नाम मरयम रखा और मैं इसे और इस की औलाद को तेरी पनाह में देती हूं रांदे हुए शैत़ान से ।

## मां बनने वाली चाहे तो इस त़रह़ भी दुआ़ मांग सक्ती है :

"या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! तेरा करोड़हा करोड़ शुक्र कि तूने मुझे येह अ़ज़ीम ने'मत अ़त़ा फ़रमाई, या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! इस की पैदाइश में आसानियां नसीब फ़रमा, या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! तू इसे अपना इत़ाअ़त गुज़ार और अपने प्यारे ह़बीब صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमां बरदार बना, या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! तू इस को मुत्तक़ी, परहेज़ गार और मुख़्लिस आ़शिक़े रसूल बना, या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! तू इसे सुन्नतों का मुबल्लिग़ बना, या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! तू इस को हमारी आंखों की ठन्डक बना, या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! इसे दराज़िये उ़म्र बिलख़ैर अ़त़ा फ़रमा, या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! इसे ईमान की ह़ालत में शहादत की मौत नसीब करना ।"

اٰمِيۡن بِجَاهِ النَّبِیِّ الۡاَمِيۡن صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَبَارَکَ وَسَلَّم

## अ़ज़ीम मां :

मुह़द्दिसे आ'ज़मे पाकिस्तान ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सरदार अह़मद رَحۡمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه की वालिदए माजिदा رَحۡمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡهَا अक्सर

फ़रमाया करती थीं : "اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मेरा येह लाडला बच्चा अ़ज़ीम शख़्सिय्यत का मालिक होगा।" और येह दुआ़ भी करतीं : "तुम्हारा नाम सरदार है, अल्लाह तआ़ला तुझे दीनो दुन्या का सरदार बनाए।" और दुन्या ने देखा कि आप की अ़ज़ीम मां की दुआ़ कबूल हुई और अल्लाह तआ़ला ने आप को इस्मे बा मुसम्मा बना दिया।

(ह़याते मुह़द्दिसे आ'ज़म رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه , स. 30)

(10) बा'ज़ मां बाप येह जानने की जुस्त-जू में रहते हैं कि पेट में बच्चा है या बच्ची ? इस के लिये अल्ट्रा साउन्ड भी करवा डालते हैं। फिर अपनी ख़्वाहिश के बर अ़क्स नतीजा निकलने पर (مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ) खुसूसन बेटी होने की सूरत में ह़म्ल ज़ाएअ़ करवाने से भी दरेग़ नहीं करते और यूं अपने बद तरीन जाहिल होने का सुबूत देते हैं क्यूं कि जितनी भी साइन्सी तह़क़ीक़ात होती हैं उन की बुन्याद गुमान पर होती हैं उन्हें किसी भी त़रह़ से यक़ीनी क़रार नहीं दिया जा सकता। इस लिये हो सकता है कि आप को जो बताया गया, ह़क़ीक़त इस के बर अ़क्स हो।

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** औलाद के सिल्सिले में रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ पर राज़ी रहने में ही आ़फ़िय्यत है, ऐसा न हो कि बेटी की पैदाइश पर उस की मां से ना रवा सुलूक करने की बिना पर रब तआ़ला की नाराज़ी का सामना करना पड़े। इस ज़िम्न में एक इ़ब्रत नाक सच्चा वाक़िआ़ मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये :

कश्मीर के किसी अ़लाक़े में एक शख़्स की 5 बच्चियां थीं। छटी बार विलादत होने वाली थी। उस ने एक दिन अपनी बीवी से कहा कि अगर अब की बार भी तूने बच्ची को जना तो मैं तुझे नौ मौलूद बच्ची समेत क़त्ल कर दूंगा। र-मज़ानुल मुबारक की तीसरी शब फिर बच्ची ही की विलादत हुई। सुब्ह़ के वक़्त बच्ची की मां की चीख़ो

पुकार की परवाह किये बिग़ैर उस बे रह़म बाप ने (مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ) अपनी फूल जैसी ज़िन्दा बच्ची को उठा कर प्रेशर कूकर में डाल कर चूल्हे पर चढ़ा दिया। यकायक प्रेशर कूकर फटा और साथ ही ख़ौफ़नाक ज़लज़ला आ गया, देखते ही देखते वोह ज़ालिम शख़्स ज़मीन के अन्दर धंस गया। बच्ची की मां को ज़ख़्मी ह़ालत में बचा लिया गया और ग़ालिबन उसी के ज़रीए इस दर्दनाक क़िस्से का इन्किशाफ़ हुवा। (الامان والحفیظ)

("ज़लज़ला और उस के अस्बाब" अज़ : अमीरे अहले सुन्नत مَدَّظِلُّہُ الْعَالِی , स. 51)

**इस के बर अ़क्स** नेकियों में मश्ग़ूल हो जाने वालों पर रह़मते इलाही عَزَّوَجَلَّ की छमाछम बरसात होती है, चन्द **बहारें** मुला-ह़ज़ा हों :

## औलादे नरीना मिल गई :

एक इस्लामी भाई की दो बेटियां थीं। वोह औलादे नरीना से मह़रूम होने की वजह से अफ़्सुर्दा रहा करते थे। उन की बच्चियों की अम्मी फिर उम्मीद से थीं। किसी इस्लामी भाई के मश्वरे पर उन्हों ने **आ़शिक़ाने रसूल के म-दनी क़ाफ़िले** में 30 दिन के लिये सफ़र इख़्तियार किया कि इस की ब-र-कत से उन के घर बेटा पैदा हो। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की शान देखिये कि अभी तीस दिन पूरे भी न हुए थे कि उन्हें सफ़र ही के दौरान बेटे की विलादत की ख़ुश ख़बरी मिल गई। जब वोह राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में तीस दिन के सफ़र के बा'द घर लौटे तो अ़जीब मन्ज़र था घर में ख़ुशी भी ख़ुशी से झूम रही थी। उन के हाथों में **म-दनी मुन्ना** और उन के चेहरे पर **जग-मगाती दाढ़ी शरीफ़** और सर पर सब्ज़ सब्ज़ इमामे का ताज सजा हुवा था।

***उन का दीवाना इमामा और ज़ुल्फ़ो रीश में***

***वाह ! देखो तो सही लगता है कितना शानदार***

(दा'वते इस्लामी की बहारें, क़िस्त़ अव्वल, स. 15)

## औलाद मिल गई :

एक इस्लामी भाई तक़रीबन 25 साल से बे औलाद थे। **दा'वते इस्लामी** का बैनल अक़्वामी इज्तिमाअ़ होने वाला था। एक मुबल्लिग़ ने उन्हें इज्तिमाअ़ में शिर्कत की तरग़ीब दिलाते हुए ढारस दी कि आप इज्तिमाअ़ में शरीक हो कर दुआ करना, वहां बहुत सारे आ़शिक़ाने रसूल जम्अ़ होते हैं और नेक लोगों के क़ुर्ब में दुआ क़बूल होती है। आप भी वहां औलाद की ख़ैरात मांग लेना। येह बात उन की समझ में आ गई और वोह इज्तिमाअ़ में ह़ाज़िर हो गए। वहां दुआ मांगने की ब-र-कत से अल्लाह तआ़ला ने उन्हें औलाद से नवाज़ दिया। (दा'वते इस्लामी की बहारें, हिस्सए अव्वल, स. 15)

## बिग़ैर ऑपरेशन के औलाद नसीब हो गई :

**शैख़े त़रीक़त** अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा **मौलाना मुह़म्मद इल्यास क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़ैज़ाने सुन्नत (जिल्द अव्वल) में लिखते हैं :

दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल, सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त और म-दनी क़ाफ़िलों की भी क्या ख़ूब बहारें और ब-र-कतें हैं। चुनान्चे ह़ैदरआबाद (बाबुल इस्लाम सिन्ध) के एक इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है : ग़ालिबन 1998 सि.ई. का वाक़िआ़ है, मेरी अहलिया उम्मीद से थीं, दिन भी "पूरे" हो गए थे। डॉक्टर का कहना था कि शायद **ऑपरेशन** करना पड़ेगा। तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** का बैनल अक़्वामी **तीन रोज़ा सुन्नतों भरा इज्तिमाअ़** (सह़राए मदीना मुलतान) क़रीब था। इज्तिमाअ़ के बा'द सुन्नतों की तरबिय्यत के 30 दिन के **म-दनी क़ाफ़िले** में आ़शिक़ाने रसूल के हमराह सफ़र की मेरी निय्यत थी।

इज्तिमाअ़ के लिये रवानगी के वक़्त, सामाने क़ाफ़िला साथ ले कर अस्पताल पहुंचा, चूंकि ख़ानदान के दीगर अफ़राद तआ़वुन के लिये मौजूद थे, अहलियए मोह़तरमा ने अश्कबार आंखों से मुझे सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ (मुलतान) के लिये अल वदाअ़ किया। मेरा ज़ेह्न येह बना हुवा था कि अब तो मुझे बैनल अक़्वामी सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ और फिर वहां से 30 दिन के **म-दनी क़ाफ़िले** में ज़रूर सफ़र करना है कि काश ! इस की ब-र-कत से आ़फ़िय्यत के साथ विलादत हो जाए। मुझ ग़रीब के पास तो **ऑपरेशन** के अख़्राजात भी नहीं थे ! बहर ह़ाल मैं मदीनतुल औलिया **मुलतान शरीफ़** ह़ाज़िर हो गया। सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में ख़ूब दुआएं मांगीं। इज्तिमाअ़ की इख़्तिताम़ी **रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़** के बा'द मैं ने घर पर फ़ोन किया तो मेरी अम्मीजान ने फ़रमाया : **मुबारक हो ! गुज़श्ता रात रब्बे काएनात** عَزَّوَجَلَّ **ने बिग़ैर ऑपरेशन के तुम्हें चांद सी म-दनी मुन्नी अ़ता फ़रमाई है।** मैं ने ख़ुशी से झूमते हुए अ़र्ज़ की : अम्मीजान ! मेरे लिये क्या हुक्म है ? आ जाऊं या 30 दिन के लिये म-दनी क़ाफ़िले का मुसाफ़िर बनूं ? अम्मीजान ने फ़रमाया, "बेटा ! बे फ़िक्र हो कर **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र करो।"

अपनी **म-दनी मुन्नी** की ज़ियारत की ह़सरत दिल में दबाए اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं 30 दिन के म-दनी क़ाफ़िले में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ रवाना हो गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र की निय्यत की ब-र-कत से मेरी मुश्किल आसान हो गई थी **म-दनी क़ाफ़िलों की बहारों** की ब-र-कत के सबब घर वालों का बहुत ज़बर दस्त म-दनी ज़ेह्न बन गया, ह़त्ता कि मेरे बच्चों की अम्मी का कहना है,

जब आप **म-दनी क़ाफ़िले** के मुसाफ़िर होते हैं मैं बच्चों समेत अपने आप को महफ़ूज़ तसव्वुर करती हूं।

*ऑपरेशन न हो, कोई उल्झन न हो — ग़म के साए ढलें, क़ाफ़िले में चलो*
*बीवी बच्चे सभी, ख़ूब पाएं ख़ुशी — ख़ैरियत से रहें, क़ाफ़िले में चलो*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(फ़ैज़ाने सुन्नत, बाब : फ़ैज़ाने र-मज़ान, अह़कामे रोज़ा, जि. 1, स. 943)

## म-दनी मुन्ने की आमद :

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरे सफ़र को अपना मा'मूल बना लीजिये। एक बार सफ़र कर के तजरिबा कर लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप को वोह वोह दीनी मनाफ़ेअ़ ह़ासिल होंगे कि आप ह़ैरान रह जाएंगे। आप की तरग़ीब के लिये म-दनी क़ाफ़िले की मज़ीद एक और बहार गोश गुज़ार की जाती है। चुनान्चे क़स्बा कॉलोनी (बाबुल मदीना कराची) के एक इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है : "हमारे ख़ानदान में लड़कियां काफ़ी थीं, चचाजान के यहां सात लड़कियां तो बड़े भाईजान के यहां 9 लड़कियां ! मेरी शादी हुई तो मेरे यहां भी लड़की की विलादत हुई। सब को तश्वीश सी होने लगी और आज कल के एक आ़म ज़ेह्न के मुत़ाबिक़ सब को वह्म सा होने लगा कि किसी ने जादू कर के औलादे नरीना का सिल्सिला बन्द करवा दिया है ! मैं ने निय्यत की, कि मेरे यहां लड़का पैदा हुवा तो **30 दिन के म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र करूंगा। मेरी म-दनी मुन्नी की अम्मी ने एक बार ख़्वाब देखा कि आस्मान से

कोई काग़ज़ का पुरज़ा उन के क़रीब आ कर गिरा, उठा कर देखा तो उस पर लिखा था, **बिलाल** । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ 30 दिन के म-दनी क़ाफ़िले की (निय्यत की) ब-र-कत से मेरे यहां **म-दनी मुन्ने** की आमद हो गई ! न सिर्फ़ एक बल्कि आगे चल कर यके बा'द दीगरे **दो म-दनी मुन्ने** मज़ीद पैदा हुए । अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का करम देखिये ! **30 दिन के म-दनी क़ाफ़िले** की ब-र-कत सिर्फ़ मुझ तक महदूद न रही । हमारे ख़ानदान में जो भी औलादे नरीना से महरूम था सब के यहां ख़ुशियों की बहारें लुटाते हुए **म-दनी मुन्ने** तवल्लुद हुए । येह बयान देते वक़्त اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं अ़लाक़ाई म-दनी क़ाफ़िला ज़िम्मादार की हैसिय्यत से म-दनी क़ाफ़िलों की बहारें लुटाने की कोशिशें कर रहा हूं ।''

*आ के तुम बा अदब, देख लो फ़ज़्ले रब — म-दनी मुन्ने मिलें, क़ाफ़िले में चलो*
*खोटी क़िस्मत खरी, गोद होगी हरी — मुन्ना मुन्नी मिलें, क़ाफ़िले में चलो*

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(फ़ैज़ाने सुन्नत, बाब : फ़ैज़ाने र-मज़ान, अह़कामे रोज़ा, जि. 1, स. 1061, बित्तसर्रुफ़िम्मा)

## मुंह मांगी मुराद न मिलना भी इन्आ़म !

(शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी مَدَّظِلُّہُ الْعَالِی अपनी मायानाज़ तालीफ़ फ़ैज़ाने सुन्नत में इस ह़िकायत को नक़्ल करने के बा'द लिखते हैं)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** देखा आप ने ! **म-दनी क़ाफ़िले** की ब-र-कत से किस त़रह़ मन की मुरादें बर आती हैं ! उम्मीदों की सूखी खेतियां हरी हो जाती हैं, दिलों की पज़मुर्दा कलियां खिल उठती हैं और ख़ानमां बरबादों की ख़ुशियां लौट आती हैं । मगर येह ज़ेह्न में रहे कि ज़रूरी नहीं हर एक की दिली मुराद लाज़िमी ही पूरी

हो। बारहा ऐसा होता है कि बन्दा जो त़लब करता है वोह उस के ह़क़ में बेहतर नहीं होता और उस का सुवाल पूरा नहीं किया जाता। उस की मुंह मांगी मुराद न मिलना ही उस के लिये इन्आ़म होता है। म-सलन येही कि वोह **औलादे नरीना** मांगता है मगर उस को म-दनी मुन्नियों से नवाज़ा जाता है और येही उस के ह़क़ में बेहतर भी होता है। चुनान्चे पारह दूसरा सू-रतुल ब-क़रह की आयत नम्बर 216 में रब्बुल इ़बाद عَزَّوَجَلَّ का इर्शादे ह़क़ीक़त बुन्याद है :

عَسٰۤى اَنْ تُحِبُّوْا شَیْــٴًـا وَّ هُوَ شَرٌّ لَّكُمْ ؕ
(پ۲،البقرۃ:۲۱۶)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** क़रीब है कि कोई बात तुम्हें पसन्द आए और वोह तुम्हारे ह़क़ में बुरी हो।

## दरबारे मुश्ताक़ से करम :

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ ! सह़राए मदीना बाबुल मदीना कराची में "दरबारे मुश्ताक़" मरजए ख़लाइक़ है, इस्लामी भाई दूर दूर से आते और फ़ैज़ पाते हैं। चुनान्चे एक इस्लामी भाई ने कुछ इस त़रह़ तह़रीर पेश की, मेरे घर में "उम्मीद" से थीं। मेडीकल रिपोर्ट के मुत़ाबिक़ बेटी की आमद होने वाली थी मगर मुझे "बेटे" की आरज़ू थी क्यूं कि एक बेटी पहले ही घर में मौजूद थी। मैं ने सह़राए मदीना में आ कर दरबारे मुश्ताक़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّزَّاق में ह़ाज़िरी दी और बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में दुआ़ मांगी। मेडीकल रिपोर्ट ग़लत़ साबित हो गई और اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ हमारे घर में चांद सा चेहरा चमकाता ख़ुशियों के फूल लुटाता **म-दनी मुन्ना** तशरीफ़ ले आया। (फ़ैज़ाने सुन्नत, बाब : आदाबे त़आ़म, जि. 1, स. 638)

# ज़च्चा व बच्चा की हि़फ़ाज़त का रूहा़नी नुस्ख़ा

(अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** مدَّظِلُّهُ الْعَالِی)

**لَاۤ اِلٰـــہَ اِلَّا اللّٰـــہُ** किसी काग़ज़ पर 55 बार लिख कर (या लिखवा कर) ह़स्बे ज़रूरत ता'वीज़ की त़रह़ तह कर के मोमजामा या प्लास्टिक कोटिंग करवा कर कपड़े या रेग्ज़ीन या चमड़े में सी कर **हा़मिला** गले में पहन ले या बाज़ू में बांध ले। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **ह़म्ल** की भी हि़फ़ाज़त और **बच्चा** भी बला व आफ़त से सलामत रहे अगर **لَاۤ اِلٰـــہَ اِلَّا اللّٰـــہُ** 55 बार (अव्वल व आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर पानी पर दम कर के रख लें और पैदा होते ही **बच्चे के मुंह** पर लगा दें तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ बच्चा ज़हीन होगा और बच्चों को होने वाली बीमारियों से मह़फ़ूज़ रहेगा। अगर येही पढ़ कर **ज़ैत** (या'नी ज़ैतून शरीफ़ के तेल) पर दम कर के बच्चे के जिस्म पर नर्मी के साथ मल दिया जाए तो बेह़द मुफ़ीद है। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ कीड़े मकोड़े और दीगर मूज़ी जानवर बच्चे से दूर रहेंगे। इस त़रह़ का पढ़ा हुवा ज़ैत बड़ों के जिस्मानी दर्दों में मालिश के लिये भी निहायत कारआमद है।

(फ़ैज़ाने सुन्नत, बाब : फ़ैज़ाने र-मज़ान, अह़कामे रोज़ा, जि. 1, स. 995)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

# पैदाइश पर रद्दे अ़मल

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !**

**बेटा** पैदा हो या **बेटी,** इन्सान को अल्लाह तआ़ला का शुक्र बजा लाना चाहिये कि बेटा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ने'मत और बेटी रह़मत है और दोनों ही मां बाप के प्यार और शफ़्क़त के मुस्तह़िक़ हैं। उ़मूमन देखा गया है कि अ़ज़ीज़ो अक़्रिबा की त़रफ़ से जिस मुसर्रत का इज़्हार लड़के की विलादत पर होता है, मह़ल्ले भर में **मिठाइयां** बांटी जाती हैं, मुबारक सलामत का शोर मच जाता है लड़की की विलादत पर इस का उ़श्रे अ़शीर भी नहीं होता।

**दुन्यावी** त़ौर पर लड़कियों से वालिदैन और ख़ानदान को ब ज़ाहिर कोई मन्फ़अ़त ह़ासिल नहीं होती बल्कि इस के बर अ़क्स इन की शादी के कसीर अख़्राजात का बार बाप के कन्धों पर आन पड़ता है शायद इसी लिये बा'ज़ नादान बेटियों की विलादत होने पर नाक भौं चढ़ाते हैं और बच्ची की अम्मी को त़रह़ त़रह़ के ता'ने दिये जाते हैं, त़लाक़ की धम्कियां दी जाती हैं बल्कि ऊपर तले बेटियां होने की सूरत में इस धमकी को अ़-मली ता'बीर भी दे दी जाती है। ऐसों को चाहिये कि वोह इन **रिवायात** को बार बार पढ़ें जिन में बेटी की परवरिश पर मुख़्तलिफ़ बिशारतों से नवाज़ा गया है। चुनान्चे

(1) ह़ज़रते नबीत़ बिन शरीत़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रिवायत करते हैं कि हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जब किसी के हां लड़की पैदा होती है तो अल्लाह तआ़ला उस के घर फ़िरिश्तों को भेजता है जो आ कर कहते हैं "ऐ घर वालो ! तुम पर सलामती हो। फिर फ़िरिश्ते उस बच्ची को अपने परों के साए में ले लेते

हैं और उस के सर पर हाथ फैरते हुए कहते हैं कि येह एक ना तुवां व कमज़ोर जान है जो एक ना तुवां से पैदा हुई है, जो शख़्स इस ना तुवां जान की परवरिश की ज़िम्मादारी लेगा तो क़ियामत तक मददे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ उस के शामिले ह़ाल रहेगी।''

(مجمع الزوائد، کتاب البر والصلة، باب ماجاء فی الاولاد، الحدیث ۱۳۴۸۴، ج ۸، ص ۲۸۵)

(2) ह़ज़रते नबीत़ बिन शरीत़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से ही मरवी है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''बेटियों को बुरा मत कहो, मैं भी बेटियों वाला हूं। बेशक बेटियां तो बहुत मह़ब्बत करने वालियां, ग़म गुसार, और बहुत ज़ियादा मेहरबान होती हैं।''

(مسند الفردوس للدیلمی، الحدیث ۷۵۵۶، ج ۲، ص ۴۱۵)

(3) ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़-ज़मत निशान है कि ''जिस के हां बेटी पैदा हो और वोह उसे ईज़ा न दे और न ही बुरा जाने और न बेटे को बेटी पर फ़ज़ीलत दे तो अल्लाह तआ़ला उस शख़्स को जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा।''

(المستدرک للحاکم، کتاب البر والصلة، الحدیث ۷۴۲۸، ج ۵، ص ۲۴۸)

(4) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जिस की तीन बेटियां हों, वोह उन का ख़याल रखे, उन को अच्छी रिहाइश दे, उन की कफ़ालत करे तो उस के लिये जन्नत वाजिब हो जाती है।'' अ़र्ज़ की गई : ''और दो हों तो ?'' फ़रमाया : ''और दो हों तब भी।'' अ़र्ज़ की गई : ''अगर एक हो तो ?'' फ़रमाया : ''अगर एक हो तो भी।'' (المعجم الاوسط، الحدیث ۶۱۹۹، ج ۴، ص ۳۴۷)

(5) ह़ज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا रिवायत करती हैं कि मदीने के सुल्त़ान, रह़मते आ़-लमियान صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस शख़्स पर बेटियों की परवरिश का बार पड़ जाए और वोह उन के साथ हुस्ने सुलूक करे तो येह बेटियां उस के लिये जहन्नम से रोक बन जाएंगी।"

(صحیح مسلم، کتاب البر والصلۃ، باب فضل الاحسان الی البنات، الحدیث ۲۶۲۹، ص ۱۴۱۴)

## म-दनी आक़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बेटियों पर शफ़्क़त :

(1) ह़ज़रते सय्यि-दतुना फ़ात़िमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर होतीं तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم खड़े हो जाते, उन की त़रफ़ मु-तवज्जेह हो जाते, फिर उन का हाथ अपने हाथ में ले लेते, उसे बोसा देते फिर उन को अपने बैठने की जगह पर बिठाते। इसी त़रह़ जब आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते फ़ात़िमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के हां तशरीफ़ ले जाते तो वोह आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को देख कर खड़ी हो जातीं, आप का हाथ अपने हाथ में ले लेतीं फिर उस को चूमतीं और आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को अपनी जगह पर बिठातीं।

(سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب ماجاء فی القیام، الحدیث ۵۲۱۷، ج ۴ ص ۴۵۴)

(2) ह़ज़रते सय्यि-दतुना ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की सब से बड़ी शहज़ादी हैं जो ए'लाने नुबुव्वत से दस साल क़ब्ल मक्कए मुकर्रमा में पैदा हुईं। जंगे बद्र के बा'द हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़िए यौमुन्नुशूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन को मक्का से मदीना बुला लिया। जब येह हिजरत के इरादे से ऊंट पर सुवार हो कर मक्का से बाहर निकलीं तो काफ़िरों ने उन का रास्ता रोक

लिया। एक ज़ालिम ने नेज़ा मार कर उन को ऊंट से ज़मीन पर गिरा दिया जिस की वजह से उन का ह़म्ल साक़ित़ हो गया। नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को इस वाक़िए़ से बहुत सदमा हुवा चुनान्चे आप ने उन के फ़ज़ाइल में इर्शाद फ़रमाया : ''هِیَ اَفْضَلُ بَنَاتِیْ اُصِیْبَتْ فِیَّ'' या'नी येह मेरी बेटियों में इस ए'तिबार से फ़ज़ीलत वाली है कि मेरी त़रफ़ हिजरत करने में इतनी बड़ी मुसीबत उठाई। जब आठ हिजरी में ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का इन्तिक़ाल हो गया तो नमाज़े जनाज़ा पढ़ा कर ख़ुद अपने मुबारक हाथों से क़ब्र में उतारा।

(شرح العلامۃ الزرقانی، باب فی ذکر اولادہ الکرام، ج۲، ص۳۱۸، ماخوذاً)

(3) ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि नज्जाशी बादशाह ने हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में कुछ ज़ेवरात बत़ौरे तोह़फ़ा भेजे जिन में एक ह़ब्शी नगीने वाली अंगूठी भी थी। नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस अंगूठी को छड़ी या अंगुश्ते मुबा-रका से मस किया और अपनी नवासी उमामा को बुलाया जो शहज़ादिये रसूल ह़ज़रते सय्यि-दतुना ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की बेटी थीं और फ़रमाया : ''ऐ छोटी बच्ची ! इसे तुम पहन लो।''

(سنن ابی داود، کتاب الخاتم، باب ماجاء فی ذھب للنساء، الحدیث ۴۲۳۵، ج۴، ص۱۲۵)

(4) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रिवायत करते हैं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم हमारे पास तशरीफ़ लाए तो आप (अपनी नवासी) उमामा बिन्ते अबुल आ़स को अपने कन्धे पर उठाए हुए थे। फिर आप नमाज़ पढ़ाने लगे तो रुकूअ़ में जाते वक़्त उन्हें उतार देते और जब खड़े होते तो उन्हें उठा लेते। (صحیح البخاری، کتاب الادب، باب رحمۃ الولد، الحدیث ۵۹۹۶، ج۴، ص۱۰۰)

## सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की अपनी बेटी पर शफ़्क़त :

ह़ज़रते सय्यिदुना बराअ बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि एक मरतबा किसी ग़ज़्वे से ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ मदीनए मुनव्वरह तशरीफ़ लाए मैं उन के साथ उन के घर गया, क्या देखता हूं कि उन की साह़िब ज़ादी ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا बुख़ार में मुब्तला हैं और लैटी हुई हैं चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ उन के पास तशरीफ़ लाए और पूछा कि "मेरी बेटी ! त़बीअ़त कैसी है ?" और (अज़ राहे शफ़्क़त) उन के रुख़्सार पर बोसा दिया।

(سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب فی قبلۃ الخد، الحدیث ۵۲۲۲، ج۴ص۴۵۵)

## ईसार करने वाली मां :

ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि मेरे पास एक मिस्कीन औ़रत आई जिस के साथ उस की दो बेटियां भी थीं। मैं ने उसे तीन खजूरें दीं। उस ने हर एक को एक एक खजूर दी। फिर जिस खजूर को वोह ख़ुद खाना चाहती थी, उस के दो टुकड़े कर के वोह खजूर भी उन को खिला दी। मुझे इस वाक़िए़ से बहुत तअ़ज्जुब हुवा, मैं ने नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में उस औ़रत के ईसार का बयान किया तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "अल्लाह तआ़ला ने इस (ईसार) की वजह से उस औ़रत के लिये जन्नत को वाजिब कर दिया।"

(صحیح مسلم، کتاب البر والصلۃ، باب فضل الاحسان الی البنات، الحدیث ۲۶۳۰، ص۱۴۱۵)

# पैदाइश के बा'द करने वाले काम

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !**

**औलाद** पैदा होने की ख़ुशी में अल्लाह तआ़ला की ना फ़रमानी वाले कामों म-सलन ढोल बजाने भंगड़ा डालने और म्यूज़ीकल प्रोग्राम करने की बजाए स-दक़ा व ख़ैरात कीजिये और शुक्राने के नवाफ़िल अदा कीजिये, इज्तिमाए़ ज़िक्रो ना'त कीजिये और इन उमूर को भी सर अन्जाम दीजिये :

## (1) कान में अज़ान

**जब** बच्चा पैदा हो तो मुस्तह़ब येह है कि उस के कान में अज़ान व इक़ामत कही जाए कि इस त़रह़ इब्तिदा ही से बच्चे के कान में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का नाम पहुंच जाएगा । इस त़रह़ एक मुसल्मान बच्चे के लिये इस्लाम के बुन्यादी अ़क़ाइद सिखाने का भी आग़ाज़ हो जाता है और बच्चे की रूह़ नूरे तौह़ीद से मुनव्वर होती है और उस के दिल में इ़श्क़े रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की शम्अ़ फ़रूज़ां होती है ।

हमारे प्यारे म-दनी आक़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते ह़सन बिन अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا की विलादत पर उन के कान में ख़ुद अज़ान दी जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना राफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ कहते हैं कि "जब ह़ज़रते सय्यि-दतुना फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के हां ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बिन अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا की विलादत हुई तो मैं ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को उन के कान में नमाज़ वाली अज़ान देते देखा ।" (جامع الترمذی، کتاب الاضاحی، باب الاذان فی اذن المولود، الحدیث ۱۵۱۹، ج ۳، ص ۱۷۳)

**बच्चे** के कान में अज़ान कहने से اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ बलाएं दूर होंगी। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना हुसैन बिन अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस के घर में बच्चा पैदा हो और वोह उस के दाएं कान में अज़ान और बाएं कान में इक़ामत कहे तो उस बच्चे से उम्मुस्सिब्यान (की बीमारी) दूर रहती है।"

(شعب الایمان، باب فی حقوق الاولاد والاھلین، الحدیث ۸۶۱۹، ج۶، ص۳۹۰)

**बेहतर** येह है कि दाहिने कान में चार मरतबा अज़ान और बाएं में तीन मरतबा इक़ामत कही जाए।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 15, स. 153)

## (2) तह़्नीक (घुट्टी ह़िलवाना) :

**दौरे रिसालत** सरापा ब-र-कत में सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم का मा'मूल था कि जब उन के घर कोई बच्चा पैदा होता तो येह उसे रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में लाते और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ख़जूर अपने द-हने अक़्दस में चबा कर बच्चे के मुंह में डाल देते जिसे **तह़्नीक** कहते हैं। यूं बच्चे को लुआ़बे दहन की ब-र-कतें भी नसीब हो जातीं। चुनान्चे

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि लोग अपने बच्चों को ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे अक़्दस में लाया करते थे आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم उन के लिये ख़ैरो ब-र-कत की दुआ़ फ़रमाते और **तह़्नीक** फ़रमाया करते थे।

(صحیح مسلم، کتاب الادب، باب استحباب تحنیک، الحدیث ۲۱۴۷، ص۱۱۸۴)

ह़ज़रते सय्यि-दतुना अस्मा बिन्ते ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि : "वोह हिजरत के बा'द मदीनए मुनव्वरह आईं तो मक़ामे क़ुबा में उन के हां विलादत हुई और ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ पैदा हुए। फ़रमाती हैं कि मैं बच्चे को ले कर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हुई और मैं ने उस को आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मुबारक गोद में रख दिया, आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने छुहारा मंगवाया और उसे चबाया, फिर उस में अपना लुआ़बे दहन डाला, पस सब से पहले उस के पेट में जो पहुंचा वोह जनाबे रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का लुआ़बे मुबारक था फिर उसे खजूर की घुट्टी दी, फिर उस के लिये दुआ़ए ख़ैर की और ब-र-कत से नवाज़ा, येह इस्लाम में पहला बच्चा पैदा हुवा था।"

(صحیح بخاری، کتاب العقیقہ، باب تسمیۃ المولود...الخ، ج۳، ص۵۴۶)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बयान करते हैं कि मेरे हां लड़का पैदा हुवा, मैं उस को ले कर अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा, आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस का नाम "इब्राहीम" रखा, और उसे खजूर से घुट्टी दी।

(صحیح المسلم، کتاب الادب، باب استحباب تحنیک المولود....الخ، الحدیث ۲۱۴۵، ص۱۱۸۴)

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बयान करते हैं कि जब ह़ज़रते अबू त़ल्ह़ा अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के बेटे अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ पैदा हुए तो मैं उसे ले कर ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो

अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हुवा, उस वक़्त आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم चादर ओढ़े हुए अपने ऊंट को रोग़न मल रहे थे आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''क्या तुम्हारे पास खजूरें है ? '' मैं ने अ़र्ज़ की ''जी हां'' फिर मैं ने कुछ खजूरें निकाल कर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में पेश कीं, आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने वोह खजूरें अपने मुबारक मुंह में डाल कर चबाईं, फिर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने बच्चे का मुंह खोल कर उसे बच्चे के मुंह में डाल दिया और बच्चा उसे चूसने लगा। फिर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''अन्सार को खजूरों के साथ मह़ब्बत है'' और उस बच्चे का नाम अ़ब्दुल्लाह रखा।

(صحیح المسلم: کتاب الادب، باب استحباب تحنیک المولود....الخ، الحدیث ۲۱۴۴، ص ۱۱۸۳)

**इन्ही** अह़ादीस की बिना पर मुसल्मानों का येह मा'मूल है कि वोह अपने बच्चों को सालेह़ व मुत्तक़ी मुसल्मानों से **तह़नीक** करवाते हैं। अगर खजूर मुयस्सर न हो तो शहद या किसी भी मीठी चीज़ से तह़नीक की जा सकती है।

## मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द की तह़नीक :

आ'ला ह़ज़रत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत अश्शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के घर जब आप के छोटे शहज़ादे मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ान (मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ) की विलादत हुई तो आप उस वक़्त अपने मुर्शिद ख़ाने में थे। ह़ज़रते अबुल हुसैन नूरी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने आप को पैदाइशे फ़रज़न्द की मुबारक बाद दी और फ़रमाया ''आप बरेली तशरीफ़ ले जाएं।''

कुछ दिन बा'द ह़ज़रते नूरी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه बरेली तशरीफ़ लाए तो शहज़ादए आ'ला ह़ज़रत को आग़ोशे नूरी में डाल दिया गया। आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने अपनी अंगुश्ते मुबारक मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه के मुंह में रख कर क़ादिरी व ब-रकाती ब-रकात से ऐसा मालामाल कर दिया कि येही शहज़ादे बड़े हो कर मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द बने। (तारीखे़ मशाइखे़ क़ादिरिय्या, जि. 2, स. 447, मुलख़्ख़सन)

## (3,4,5) नाम रखना, बाल मूंडना और अ़क़ीक़ा करना :

सातवें दिन बच्चे का नाम रखा जाए और उस का सर मूंडा जाए और सर मुंडाने के वक़्त उस का अ़क़ीक़ा किया जाए और बालों का वज़्न कर के चांदी या सोना स-दक़ा किया जाए।

(المعجم الاوسط،الحدیث ۵۵۸،ج۱،ص۱۷۰)

## कैसे नाम रखे जाएं ?

**वालिदैन** को चाहिये कि बच्चे का अच्छा नाम रखें कि येह उन की त़रफ़ से अपने बच्चे के लिये सब से पहला और बुन्यादी तोह़फ़ा है जिसे वोह उ़म्र भर अपने सीने से लगाए रखता है यहां तक कि जब मैदाने ह़श्र बपा होगा तो वोह उसी नाम से मालिके काएनात عَزَّوَجَلَّ के हु़ज़ूर बुलाया जाएगा जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि हु़ज़ूरे पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "क़ियामत के दिन तुम अपने और अपने आबा के नामों से पुकारे जाओगे लिहाज़ा अपने अच्छे नाम रखा करो।" (سنن ابی داود،کتاب الادب باب فی تغییر الاسماء،الحدیث۴۹۴۸،ج۴،ص۳۷۴)

इस ह़दीसे पाक से वोह लोग इ़ब्रत ह़ासिल करें जो अपने बच्चे का नाम किसी फ़िल्मी अदाकार या (مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ) कुफ़्फ़ार के नाम पर रख देते हैं, इस से बद तरीन ज़िल्लत क्या होगी कि मुसल्मान

की औलाद को कल मैदाने मह्शर में कुफ़्फ़ार के नामों से पुकारा जाए । وَالعِيَاذُبِاللّٰه

हमारे मुआ-शरे में बच्चे के नाम के इन्तिख़ाब की ज़िम्मादारी उ़मूमन किसी क़रीबी रिश्तेदार म-सलन दादी, फूफी, चचा वगै़रा को सोंप दी जाती है और उ़मूमन मसाइले शरइय्या से ना बलद होने की वजह से वोह बच्चों के ऐसे नाम रख देते हैं जिन के कोई मआ़नी नहीं होते या फिर अच्छे मआ़नी नहीं होते, ऐसे नाम रखने से एह़तिराज़ किया जाए । अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام के अस्माए मुबा-रका और सह़ाबए किराम व ताबिई़ने इ़ज़ाम और औलियाए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم के नामों पर नाम रखने चाहिएं जिस का एक फ़ाएदा तो येह होगा कि बच्चे का अपने अस्लाफ़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم से रूह़ानी तअ़ल्लुक़ क़ाइम हो जाएगा और दूसरा इन नेक हस्तियों से मौसूम होने की ब-र-कत से उस की ज़िन्दगी पर म-दनी अ-सरात मुरत्तब होंगे ।

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू वह्ब जश्मी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام के नामों पर नाम रखो ।" (سنن ابی داود،کتاب الادب باب فی تغییر الاسماء،الحدیث۴۹۵۰،ج۴،ص۳۷۴)

बच्चे की कुन्यत रखना जाइज़ है और ह़ुसूले ब-र-कत के लिये बुज़ुर्गों की निस्बत से कुन्यत रखना बेहतर है म-सलन अबू तुराब (येह ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की कुन्यत है) वगै़रा । (माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, जि. 3, ह़िस्सा : 16, स. 213)

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि शहन्शाहे मदीना, सुरूरे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "अपने बच्चों की कुन्यत रखने में जल्दी करो कहीं इन के (बुरे) अल्क़ाबात न पड़ जाएं ।" (کنز العمال،کتاب النکاح،باب السابع،الفصل الاول،الاکمال،الحدیث۴۵۲۲۲،ج۱۶،ص۱۷۶)

## मस्अला :

अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा, अ़ब्दुन्नबी और अ़ब्दुर्रसूल नाम रखना बिल्कुल जाइज़ है कि इस से श-रफ़े निस्बत मक़्सूद है। अ़ब्द के दो मआ़नी हैं, बन्दा और ग़ुलाम, इस लिये येह नाम रखने में कोई ह़रज नहीं। ग़ुलाम मुह़म्मद, ग़ुलाम सिद्दीक़, ग़ुलाम फ़ारूक़, ग़ुलाम अ़ली, ग़ुलाम हुसैन वग़ैरा नाम रखना जिन में ग़ुलाम कि निस्बत अम्बिया व सालिह़ीन की त़रफ़ की गई हो, बिल्कुल जाइज़ है।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 16, स. 213, माख़ूज़न)

## मस्अला :

मुह़म्मद बख़्श, अह़मद बख़्श, पीर बख़्श और इसी क़िस्म के दूसरे नाम रखना जिस में नबी या वली के नाम के साथ बख़्श का लफ़्ज़ मिलाया गया हो, बिल्कुल जाइज़ है।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 16, स. 214)

## मस्अला :

त़ाहा, यासीन नाम भी न रखे जाएं कि येह अल्फ़ाज़ मुक़त्त़आ़ते क़ुरआनिया में से हैं जिन के मआ़नी मा'लूम नहीं।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 16, स. 213)

## मस्अला :

जो नाम बुरे हों उन्हें बदल कर अच्छे नाम रखने चाहिएं।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 16, स. 213)

ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا से मरवी है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم बुरे नामों को बदल दिया करते थे।

(جامع الترمذی، کتاب الادب، باب ماجاء فی تغییر الاسماء، الحدیث ۲۸۴۸، ج ۴، ص ۳۸۲)

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا से रिवायत है कि ह़ज़रते जुवैरिया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا का नाम पहले बर्रा था, सरवरे

आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने (बर्रा से) बदल कर जुवैरिया रख दिया। (صحیح مسلم، کتاب الادب، باب استحباب تغییر الاسم القبیح، الحدیث ۲۱۴۰، ص ۱۱۸۲)

## अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के पसन्दीदा नाम :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तुम्हारे नामों से अल्लाह तआ़ला के नज़्दीक सब से ज़ियादा पसन्दीदा नाम अ़ब्दुल्लाह और अ़ब्दुर्रहमान हैं।"

(صحیح مسلم، کتاب الادب، باب استحباب تغییر الاسم القبیح، الحدیث ۲۱۳۲، ص ۱۱۷۸)

सदरुश्शरीअ़ह बदरुत्त़रीक़ह मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه लिखते हैं : "अ़ब्दुल्लाह व अ़ब्दुर्रह़मान बहुत अच्छे नाम हैं (मगर इस ज़माने में अक्सर देखा जाता है कि बजाए अ़ब्दुर्रह़मान उस शख़्स को बहुत से लोग रह़मान कहते हैं और ग़ैरे ख़ुदा को रह़मान कहना ह़राम है, इसी त़रह़ अ़ब्दुल ख़ालिक़ को ख़ालिक़ और अ़ब्दुल मा'बूद को मा'बूद कहते हैं) इस क़िस्म के नामों में ऐसी ना जाइज़ तरमीम हरगिज़ न की जाए। इसी त़रह़ बहुत कसरत से नामों में तसग़ीर का रवाज है या'नी नाम को इस त़रह़ बिगाड़ते हैं जिस से ह़क़ारत निकलती है, ऐसे नामों में तसग़ीर हरगिज़ न की जाए और जहां येह गुमान हो कि नामों में तसग़ीर की जाएगी येह नाम न रखे जाएं, दूसरे नाम रखे जाएं।"

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 16, स. 211, माख़ूज़न)

## नामे मुह़म्मद की ब-र-क-तें :

रह़मते आ़लम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने मेरे नाम से ब-र-कत की उम्मीद करते हुए मेरे नाम

पर नाम रखा, क़ियामत तक सुब्ह़ व शाम उस पर ब-र-कत नाज़िल होती रहेगी ।''

(کنز العمال، کتاب النکاح، الفصل الاول فی الاسماء، الحدیث ۴۵۲۱۳، ج ۱۶، ص ۱۷۵)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रिवायत करते हैं कि सरकारे मदीना, फ़ैज़ गन्जीना, साह़िबे मुअ़त्तर पसीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''जिस के हां बेटा पैदा हो और मेरी मह़ब्बत और ह़ुसूले ब-र-कत के लिये उस का नाम मुह़म्मद रखे तो वोह और उस का बेटा दोनों जन्नत में जाएंगे ।''

(کنز العمال، کتاب النکاح، الفصل الاول فی الاسماء، الحدیث ۴۵۲۱۵، ج ۱۶، ص ۱۷۵)

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली عَنْہُ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی से रिवायत है, कहते हैं कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया ''जब कोई क़ौम किसी मश्वरे के लिये जम्अ़ हो और उन में कोई शख़्स ''मुह़म्मद'' नाम का हो और वोह उसे मश्वरे में शरीक न करें तो उन के लिये मुशा-वरत में ब-र-कत न होगी ।''

(الکامل فی ضعفاء الرجال لابن عدی: ج ۱، ص ۲۷۵)

सदरुश्शरीअ़ह बदरुत्त़रीक़ह मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ लिखते हैं : ''मुह़म्मद बहुत प्यारा नाम है, इस नाम की बड़ी ता'रीफ़ ह़दीसों में आई है । अगर तसग़ीर का अन्देशा न हो तो येह नाम रखा जाए और एक सूरत येह है कि अ़क़ीक़े का नाम येह हो और पुकारने के लिये कोई दूसरा नाम तज्वीज़ कर लिया जाए, इस सूरत में नाम की भी ब-र-कत होगी और तसग़ीर से भी बच जाएंगे ।'' (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 15, स. 154)

**जब** शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी

دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से किसी का नाम रखने की दर-ख़्वास्त की जाती है तो आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه उस बच्चे का नाम : मुहम्मद और पुकारने के लिये उ़र्फ़ (म-सलन) रजब रज़ा रखते हैं। नाम के साथ ''रज़ा'' का इज़ाफ़ा, इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत अश्शाह मौलाना अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُالرَّحْمٰن की निस्बत से करते हैं।

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !**

जब कोई शख़्स अपने बेटे का नाम मुहम्मद रखे तो उसे चाहिये कि इस नामे पाक की निस्बत के सबब उस के साथ हुस्ने सुलूक करे और उस की इ़ज़्ज़त करे। मौला मुश्किल कुशा ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जब तुम बेटे का नाम मुह़म्मद रखो तो उस की इ़ज़्ज़त करो और मजलिस में उस के लिये जगह कुशादा करो और उस की निस्बत बुराई की त़रफ़ न करो।'' (تاریخ بغداد ج۳ ص۳۰۵)

ह़ज़रते अबू शुऐ़ब رَحْمَةُاللّٰهِ عَلَيْه, इमाम अ़त़ा رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه से रिवायत फ़रमाते हैं कि जो येह चाहे कि उस की औ़रत के ह़म्ल में लड़का हो तो उसे चाहिये कि अपना हाथ औ़रत के पेट पर रख कर कहे ''اِنْ كَانَ ذَكَرًا فَقَدْ سَمَّيْتُهُ مُحَمَّدًا'' या'नी अगर येह लड़का हुवा तो मैं ने इस का नाम मुह़म्मद रखा।'' اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ लड़का होगा।

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 24, स. 290)

## बाल मुंडवाना

बच्चे के बाल मुंडवाए जाएं। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन बुरैदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि ''हम ज़मानए जाहिलिय्यत में जब बच्चा पैदा होता तो उस की त़रफ़ से

बकरी ज़ब्ह़ करते, ज़बीह़ा के बाल उतारते और उस बच्चे के सर पर उस बकरी का ख़ून मलते थे। लेकिन जब हम इस्लाम लाए तो अब हमारे हां जब बच्चा पैदा होता है हम उस की त़रफ़ से बकरी ज़ब्ह़ करते, उस बच्चे का सर मुंडाते और उस के सर पर ज़ा'फ़रान मलते हैं।'' (المستدرک للحاکم، کتاب الذبائح، باب عن الغلام شاتان وعن الجاریۃ شاۃ، الحدیث ۷۶۶۸،ج۵،ص۳۳۸)

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا से रिवायत है कि ज़मानए जाहिलिय्यत में लोगों का दस्तूर येह था कि जब वोह बच्चे का अ़क़ीक़ा करते तो रूई के एक फाए में अ़क़ीक़े के जानवर का ख़ून भर लेते। फिर जब बच्चे का सर मुंडा देते तो वोह ख़ून भरा फाया उस के सर पर रख देते और उस के सर को अ़क़ीक़े के ख़ून से रंग देते। येह एक जाहिलाना रस्म थी। नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया ''बच्चे के सर पर ख़ून नहीं बल्कि उस की जगह ख़लूक़ (एक मुरक्कब ख़ुश्बू का नाम है जो ज़ा'फ़रान वग़ैरा से तय्यार की जाती है) लगाया करो।''

(الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب الاطعمۃ، باب العقیقۃ، الحدیث ۵۲۸۴،ج۷،ص۳۵۵)

## अ़क़ीक़ा

**बच्चे** की पैदाइश उस के वालिदैन और ख़ानदान भर के लिये मुसर्रत व शादमानी का पैग़ाम लाती है। बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में इस ने'मत के शुक्र का इस्लामी त़रीक़ा येह है कि बत़ौरे शुक्राना जानवर ज़ब्ह़ किया जाए। इसी को अ़क़ीक़ा कहते हैं और येह मुस्तह़ब है।

(माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 5, स. 153)

हमारे **म-दनी आक़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़ुद इस की तरग़ीब इर्शाद फ़रमाई है। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ बयान करते हैं कि मैं ने ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे

नुबुव्वत, पैकरे अ-ज़-मतो शराफ़त, महबूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत, صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना : "बच्चे के साथ अ़क़ीक़ा है, लिहाज़ा इस की त़रफ़ से ख़ून बहाओ और इस से अज़िय्यत को हटाओ।" (صحیح البخاری، کتاب العقیقہ، باب اماطۃ الاذی عن الصبی فی العقیقۃ، الحدیث ۵۱۵۱، ج ۳، ص ۵۴۸)

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं :

"जो बच्चा क़ब्ले बुलूग़ मर गया और उस का अ़क़ीक़ा कर दिया था या अ़क़ीक़े की इस्तित़ाअ़त न थी या सातवें दिन से पहले मर गया इन सब सूरतों में वोह मां बाप की शफ़ाअ़त करेगा जब कि येह दुन्या से बा ईमान गए हों।" (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 20, स. 596)

## अ़क़ीक़ा कब करें ?

अ़क़ीक़े के लिये सातवां दिन बेहतर है जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़सन बसरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ह़ज़रते सय्यिदुना समुरह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत की है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "लड़का अपने अ़क़ीक़े के बदले रह्न रखा हुवा है सातवें रोज़ इस की त़रफ़ से जानवर ज़ब्ह़ किया जाए, नाम रखा जाए, और उस का सर मूंडा जाए।"

(جامع الترمذی، کتاب الاضاحی، باب العقیقہ بشاۃ، الحدیث ۱۵۲۷، ج ۳، ص ۱۷۷)

अगर सातवें दिन न कर सकें तो जब चाहें कर सकते हैं लेकिन सात दिन का लिह़ाज़ रखना बेहतर है। इसे याद रखने का त़रीक़ा येह है कि जिस दिन बच्चा पैदा हुवा उस से पहले वाला दिन जब भी आएगा सातवां होगा। म-सलन हफ़्ते को बच्चा पैदा हुवा तो जुमुअ़तुल मुबारक सातवां दिन कहलाएगा। عَلٰی ھٰذَا الْقِیاس

(माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 15, स. 154)

## अ़क़ीक़े के जानवर :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन शुऐ़ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत, صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि : "जिस के हां बच्चा पैदा हो और वोह उस की त़रफ़ से अ़क़ीक़े की क़ुरबानी करना चाहे तो लड़के की त़रफ़ से एक जैसी दो बकरियां और लड़की की त़रफ़ से एक बकरी क़ुरबान की जाए।"

(سنن ابی داؤد، کتاب الضحایا، باب العقیقہ، الحدیث ۲۸۴۱، ج ۳، ص ۱۴۳)

ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है फ़रमाती हैं नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि : "लड़के की त़रफ़ से दो बकरे और लड़की की त़रफ़ से एक बकरा ज़ब्ह़ किया जाए।"

(المسند للامام احمد بن حنبل، مسند السیدہ عائشہ، الحدیث ۲۶۱۹۴، ج ۱۰، ص ۱۰۱)

## अ़क़ीक़े के चन्द मसाइल :

(1) अ़क़ीक़े के जानवर के लिये भी वोही शराइत़ हैं जो क़ुरबानी के जानवर की हैं। इस का गोश्त फ़ु-क़रा और रिश्तेदारों में कच्चा तक़्सीम कर दिया जाए या पका कर दिया जाए या इन को बत़ौरे ज़ियाफ़त खिलाया जाए, हर त़रह़ से जाइज़ है।

(2) लड़के के अ़क़ीक़े में दो बकरे और लड़की के अ़क़ीक़े में एक बकरी ज़ब्ह़ की जाए अगर लड़के के अ़क़ीक़े में बकरियां और लड़की की त़रफ़ से बकरा किया गया जब भी ह़रज नहीं।

(3) गाय ज़ब्ह़ करने की सूरत में लड़के के लिये दो ह़िस्से और लड़की के लिये एक ह़िस्सा काफ़ी है।

(4) गाय की क़ुरबानी में अ़क़ीक़ा करने के लिये हि़स्सा डाला जा सकता है।

(5) बेहतर येह है कि उस की हड्डी न तोड़ी जाए बल्कि हड्डियों पर से छुरी वग़ैरा से गोश्त उतार लिया जाए कि बच्चे की सलामती की नेक फ़ाल है। अगर हड्डी तोड़ कर गोश्त बनाया जाए तब भी कोई ह़रज नहीं है।

(6) गोश्त को जिस त़रह़ चाहें पका सकते हैं मगर मीठा पकाना बेहतर है कि बच्चे के अख़्लाक़ अच्छे होने की फ़ाल है।

(7) गोश्त की तक़्सीम इस त़रह़ भी की जा सकती है कि सिरी पाए हजाम को और रान दाई को देने के बा'द बक़िय्या गोश्त के तीन हि़स्से कर लें, एक हि़स्सा फ़ु-क़रा, दूसरा अ़ज़ीज़ रिश्तेदार और तीसरा हि़स्सा घर वाले खाएं।

(8) अ़क़ीक़े का गोश्त बच्चे के मां बाप, दादा, दादी और नाना, नानी वग़ैरा भी खा सकते हैं इस में कोई ह़रज नहीं।

(9) अ़क़ीक़े के जानवर की खाल का वोही हुक्म है जो क़ुरबानी की खाल का है कि चाहे तो ख़ुद इस्ति'माल करे या मसाकीन को दे दे या किसी और नेक काम म-सलन मस्जिद या मद्रसा वग़ैरा में ख़र्च करे। (माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, हि़स्सा : 15, स. 155)

**मदीना :** मज़ीद मा'लूमात के लिये अमीरे अहले सुन्नत مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی की तालीफ़ **''अ़क़ीक़े के बारे में सुवाल जवाब''** का मुत़ा-लआ़ कीजिये।

## बच्चे का ख़त्ना :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो

आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''फ़ित्रत पांच चीज़ें हैं, ख़तना करना, मूए ज़ेरे नाफ़ साफ़ करना, बग़ल के बाल नोचना, मूंछें कतरना, नाख़ुन काटना।''

(صحیح مسلم، باب خصال الفطرۃ، الحدیث ۲۵۷، ص ۱۵۳)

**ख़तना** करना सुन्नत है और येह शआ़इरे इस्लाम में से है कि इस से मुसल्मान और ग़ैर मुस्लिम में इम्तियाज़ होता है इसी लिये इसे मुसल्मानी भी कहा जाता है। विलादत के सात दिन के बा'द ख़तना करना जाइज़ है, ख़तना की मुद्दत सात साल से बारह साल तक है।

(الفتاوی الہندیہ کتاب الکراہیۃ، باب التاسع عشر فی الختان...الخ، ج ۵، ص ۳۵۷، وبہار شریعت، حصہ ۱۶، ص ۲۰۰)

ह़ज़रते सय्यिदुना मौला अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरफ़ूअ़न रिवायत है कि अपने बच्चे का सातवें दिन ख़तना करो कि येह गोश्त उगने के लिये जल्दी और सुथरा है और दिल के लिये राह़त है।

(کنز العمال، کتاب النکاح، الفصل الثالث فی الختان، الاکمال، الحدیث ۴۵۳۰۴، ج ۸، ص ۱۸۱)

## मस्अला :

बच्चे का ख़तना बाप ख़ुद भी कर सकता है। (अगर ह़जाम या डॉक्टर वग़ैरा ख़तना करें तो औ़रत उन के सामने न आए बल्कि बच्चे को कोई मर्द पकड़े।) (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 22, स. 204)

## बच्चे को उस की मां दूध पिलाए

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

وَالْوَالِدٰتُ یُرْضِعْنَ اَوْلَادَهُنَّ حَوْلَیْنِ كَامِلَیْنِ (پ۲، البقرہ: ۲۳۳)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और माएं दूध पिलाएं अपने बच्चों को पूरे दो बरस।

**बच्चे** के लिये मां का दूध बेहतरीन तोह़फ़ा है, बोतल का दूध कभी भी इस का ने'मल बदल नहीं हो सकता। इस लिये बच्चे को मां का दूध पिलाना चाहिये शदीद मजबूरी की सूरत में इसे किसी नेक औ़रत का दूध पिलाया जाए। ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا रिवायत करते हैं कि रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "दूध त़बीअ़त को बदल देता है।"

(الجامع الصغیر، الحدیث ۴۵۲۵، ص ۲۷۷)

## दूध पिलाने की फ़ज़ीलत :

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जब कोई औ़रत अपने बच्चे को दूध पिलाती है तो हर घूंट पिलाने पर ऐसा अज्र मिलता है कि जैसे किसी जानदार को ज़िन्दा कर दिया हो। फिर जब वोह उस को दूध छुड़ाती है तो एक फ़िरिश्ता उस के कांधे पर थपकी देता और कहता है अपना अ़मल दोबारा शुरूअ़ कर।" (या'नी उस के गुनाह बख़्श दिये गए अब दोबारा अपने आ'माल का आग़ाज करे)

(کنز العمال، کتاب النکاح، الفصل الثانی فی ترغیبات تختص بالنساء، الحدیث ۴۵۱۵۲، ج ۱۶، ص ۱۷۱)

## मस्अला :

ज़ियादा से ज़ियादा दो साल की मुद्दत तक मां या किसी औ़रत का दूध पिलाया जा सकता है। जब बच्चा दो साल की उ़म्र को पहुंच जाए तो उसे किसी भी औ़रत का दूध पिलाना ना जाइज़ है।

(माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 7, स. 29)

## मस्अला :

बच्चों को नज़र लगना साबित है जैसा कि ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे स-लमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا से रिवायत है कि सरकारे

वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन के घर एक बच्ची को देखा जिस का चेहरा ज़र्द था तो इर्शाद फ़रमाया : ''इसे दुआ़ व ता'वीज़ कराओ, इसे नज़रे बद लगी है।''

(صحیح مسلم، کتاب السلام، باب استحباب الرقیۃ من العین...الخ، الحدیث ۲۱۹۷، ص ۱۲۰۶)

## मस्अला :

बच्चों या बड़ों को ता'वीज़ पहनना बिल्कुल जाइज़ है जब कि वोह ता'वीज़ आयाते क़ुरआनिया या अस्माए इलाहिय्यह या दुआ़ओं पर मुश्तमिल हो। बा'ज़ अह़ादीस में ता'वीज़ की जो मुमा-न-अ़त आई है इस से मुराद वोह ता'वीज़ात हैं जो ना जाइज़ अल्फ़ाज़ पर मुश्तमिल हों जैसा कि ज़मानए जाहिलिय्यत के ता'वीज़ात होते थे।

(बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 16, स. 252 : (ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحۃ، فصل فی اللبس، ج۹، ص ۶۰۰

**ता'वीज़ात** अस्माए इलाही व कलामे इलाही व ज़िक्रे इलाही से होते हैं, इन में असर न मानने का जवाब वोही बेहतर है जो ह़ज़रते शैख़ अबू सईद अबुल ख़ैर قُدِّسَ سِرُّهُ الْعَزِيْز ने एक मुल्ह़िद (या'नी बे दीन) को दिया, जिस ने ता'वीज़ात के असर में कलाम किया। ह़ज़रत قُدِّسَ سِرُّهُ ने फ़रमाया, ''तू अ़जब गधा है।'' वोह दुन्यवी त़ौर पर बड़ा मुअ़ज़्ज़ज़ बनता था येह लफ़्ज़ सुनते ही उस का चेहरा सुर्ख़ हो गया और गरदन की रगें फूल गईं और बदन ग़ैज़ से कांपने लगा और ह़ज़रत से इस फ़रमाने का शाकी हुवा, फ़रमाया मैं ने तो तुम्हारे सुवाल का जवाब दिया है, गधे के नाम का असर तुम ने मुशा-हदा कर लिया कि तुम्हारे इतने बड़े जिस्म की क्या ह़ालत कर दी लेकिन मौला عَزَّوَجَلَّ के नामे पाक से मुन्किर हो। وَاللهُ تَعَالٰى اَعْلَم

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक **दा'वते इस्लामी** की **मजलिसे मक्तूबातो ता'वीज़ाते अत्तारिय्या** के तहत दुखियारे मुसल्मानों का अमीरे अहले सुन्नत, हज़रते अल्लामा **मौलाना मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी** مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی के अता कर्दा ता'वीज़ात के ज़रीए फ़ी सबीलिल्लाह इलाज किया जाता है नीज़ इस्तिख़ारा करने का सिल्सिला भी है। रोज़ाना हज़ारों मुसल्मान इस से मुस्तफ़ीज़ होते हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ इस वक़्त मजलिस की त़रफ़ से बिला मुबा–लग़ा लाखों ता'वीज़ात और ता'ज़िय्यत, इयादत और तसल्ली नामे भेजे जा चुके हैं और ता दमे तहरीर (22 स–फ़रुल मुज़फ़्फ़र 1428 सि.हि.) एक अन्दाज़े के मुताबिक़ मजलिस की त़रफ़ से **माहाना सवा दो लाख** और सालाना कमो बेश **26 लाख** से ज़ाइद "ता'वीज़ात" व "अवराद" दिये और कमो बेश **20 से 25 हज़ार मक्तूबात** भेजे जाते हैं इन में **E-mail** के जवाबात भी शामिल हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ **माहाना 2500 से ज़ाइद ऑन लाइन इस्तिख़ारा** की तरकीब भी होती है। ता'वीज़ाते अत्तारिय्या की मु–तअद्दद बहारें हैं जो मक–त–बतुल मदीना के शाएअ कर्दा "**ख़ौफ़नाक बला**", "**पुर असरार कुत्ता**" और "**सींगों वाली दुल्हन**" नामी रसाइल में मुला–हज़ा की जा सकती हैं। ता'वीज़ात लेने वाले इस्लामी भाइयों को चाहिये कि वोह अपने शहर में होने वाले सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में शिर्कत फ़रमाएं और वहां ता'वीज़ाते अत्तारिय्या के बस्ते (स्टॉल) से ता'वीज़ हासिल करें।

## मस्अला :

बच्चा चाहे चन्द मिनट का हो उस का पेशाब भी इसी त़रह नापाक है जिस त़रह बड़े का, येह जो अवाम में मशहूर है कि दूध पीते बच्चे का पेशाब पाक होता है इस की कोई अस्ल नहीं।

(الفتاوى الھندیۃ، کتاب الطہارۃ، ج۱، ص۴۶)

**इस** लिये कारपेट व क़ालीन पर बच्चे को लिटाते या बिठाते वक़्त उस के नीचे प्लास्टिक शीट बिछा दी जाए क्यूं कि नापाक होने की सूरत में इन का पाक करना बहुत मुश्किल होता है।

## मस्अला :

जिन आ'ज़ा का छुपाना ज़रूरी है उन को औ़रत कहते हैं। बहुत छोटे बच्चे के लिये औ़रत नहीं या'नी उस के बदन के किसी ह़िस्से का छुपाना फ़र्ज़ नहीं, फिर जब कुछ बड़ा हो गया तो उस के आगे पीछे का मक़ाम छुपाना ज़रूरी है। फिर जब और बड़ा हो जाए, दस बरस से ज़ियादा का हो जाए तो उस के लिये बालिग़ का सा हुक्म है।

(ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحۃ، فصل فی النظر والمس، ج۹،ص۶۰۲)

## घुटने न खोलने पड़ें :

मुह़द्दिसे आ'ज़मे पाकिस्तान ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सरदार अह़मद رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ कम उ़म्री में जब पढ़ने के लिये जाते तो रास्ते में एक बरसाती नाला पड़ता था जो मौसिमे बरसात में भर जाता। उस को उ़बूर करने के लिये दीगर त़-लबा अपने कपड़े समेट लेते जिस से उन के घुटने नंगे हो जाते। चूंकि मर्द के आ'ज़ाए सित्र नाफ़ के नीचे से ले कर घुटनों तक हैं लिहाज़ा आप अपने बड़े भाई से अ़र्ज़ करते : "मुझे कन्धों पर बिठा कर नाला पार करवा दें।" ताकि आप को घुटने न खोलने पड़ें। (ह़याते मुह़द्दिसे आ'ज़म رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ, स. 30)

## अपने बच्चों को किसी पीरे कामिल का मुरीद बनवा दीजिये

एक मुसल्मान के लिये उस की सब से क़ीमती मताअ़ उस का ईमान है। इस की ह़िफ़ाज़त की फ़िक्र हमें दुन्यावी अश्या से कहीं ज़ियादा होनी चाहिये। नेक आ'माल पर इस्तिक़ामत के इलावा ईमान की ह़िफ़ाज़त का एक ज़रीआ़ किसी पीरे कामिल से बैअ़त हो जाना भी

है । किसी को अपना पीर बनाने के लिये चार शराइत़ का लिहाज़ इन्तिहाई ज़रूरी है ।

(1) सह़ीहुल अ़क़ीदा सुन्नी हो ।

(2) इतना इ़ल्म रखता हो कि अपनी ज़रूरिय्यात के मसाइल किताबों से निकाल सके ।

(3) फ़ासिक़े मो'लिन न हो (एक बार गुनाहे कबीरा करने वाला या गुनाहे सग़ीरा पर इस्रार करने वाला या'नी तीन या इस से ज़ियादा बार करने वाला या सग़ीरा को सग़ीरा समझ कर एक बार करने वाला फ़ासिक़ होता है और अगर अ़लल ए'लान करे तो फ़ासिक़े मो'लिन है ।)

(4) उस का सिल्सिलए बैअ़त नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْه وَ اٰلِه وَسَلَّم तक मुत्तसिल (या'नी मिला हुवा) हो ।

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 21, स. 603)

**फ़ी ज़माना** जामेए़ शराइत़ पीरे कामिल का मिलना नायाब नहीं तो कम्याब ज़रूर है । जो किसी का मुरीद न हो तो उसे चाहिये कि वोह अपने बच्चों समेत सिल्सिलए क़ादिरिय्या के अ़ज़ीम बुज़ुर्ग शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का मुरीद बन जाए । आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه, क़ुत़्बे मदीना मेज़बाने मेहमानाने मदीना, ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ियाउद्दीन म-दनी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के मुरीद और मुफ़्तिये आ'ज़मे पाकिस्तान ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती वक़ारुद्दीन र-ज़वी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه, शारेह़े बुख़ारी ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه, जा नशीने क़ुत़्बे मदीना ह़ज़रते अ़ल्लामा फ़ज़्लुर्रह़मान क़ादिरी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के ख़लीफ़ए मजाज़ हैं इन के इ़लावा दीगर बुज़ुर्गों से भी ख़िलाफ़तें और इजाज़ते असानीदे अह़ादीस ह़ासिल हैं । आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه सिल्सिलए

क़ादिरिय्या में मुरीद फ़रमाते हैं। क़ादिरी सिल्सिले की अ़-ज़मत के क्या कहने कि इस के अ़ज़ीम पेश्वा हुज़ूर सय्यिदुना ग़ौसुल आ'ज़म رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ क़ियामत तक के लिये (ब फ़ज़्ले ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ) अपने मुरीदों के तौबा पर मरने के ज़ामिन हैं। (بہجۃ الاسرار، ذکر فضل اصحابہ وبشراھم، ص۱۹۱)

मुरीद होने के लिये अपना और बीवी बच्चों का नाम व पता इस पते पर रवाना कर दीजिये आप को मुरीद बना लिया जाएगा।

"मजलिसे मक्तूबातो ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या"
फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास,
मिरज़ापूर, अहमदआबाद, गुजरात

## बच्चों से महब्बत कीजिये

**बच्चों** की देर पा ता'लीमो तरबिय्यत के लिये इन से इब्तिदा ही से शफ़्क़त व महब्बत के साथ पेश आना चाहिये। यूं जब मां की मामता और शफ़्क़ते पि-दरी की शीरीनी घोल कर ता'लीमाते इस्लाम का मशरूब इन के ह़ल्क़ में उंडेला जाएगा तो वोह फ़ौरन उसे हज़्म कर लेंगे।

ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا रिवायत करती हैं कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "बेशक जन्नत में एक घर है जिसे "अल फ़रह़" कहा जाता है इस में वोही लोग दाख़िल होंगे जो बच्चों को ख़ुश करते हैं।"

(جامع صغیر، الحدیث۲۳۲۱، ص۱۴۰)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रिवायत करते हैं ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم दिन के किसी पहर निकले न सरकार

صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने कुछ फ़रमाया और न मैं ने कुछ अ़र्ज़ की ह़त्ता कि बनी क़ीन्क़ाअ़ के बाज़ार में पहुंचे (वहां से वापस हुए) और ह़ज़रते फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا के घर के सेह़न में बैठ गए और ह़ज़रते ह़सन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ (जो अभी छोटे थे उन) के बारे में दर्याफ़्त फ़रमाया। सय्यिदह फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने उन्हें थोड़ी देर रोके रखा, मैं ने समझा शायद इन्हें हार पहना रही हैं या नहला रही हैं इतने में वोह (या'नी ह़ज़रते ह़सन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ) दौड़ते हुए आए और आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन्हें गले लगा लिया चूमा और कहा "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! इस से मह़ब्बत कर और उस से मह़ब्बत कर जो इस से मह़ब्बत करे।"

(صحیح البخاری، کتاب البیوع، باب ماذکر فی الاسواق، الحدیث ۲۱۲۲، ج ۲، ص ۲۵)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बुरैदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ इर्शाद फ़रमाते हैं कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم एक बार ख़ुत्बा इर्शाद फ़रमा रहे थे कि इतने में ह़ज़रते ह़सन और ह़ज़रते ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا दोनों सुर्ख़ रंग की (धारियों वाली) क़मीस पहने हुए चलते हुए आए (चूंकि बच्चे थे सह़ीह़ त़रीक़े से चल नहीं सकते थे इस लिये कभी गिरते थे)। रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने जब उन्हें देखा तो मिम्बरे अक़्दस से उतरे और उन दनों को उठा कर अपने सामने बिठा लिया।

(جامع الترمذی، کتاب المناقب الی محمد بن علی بن ابی طالب، الحدیث ۳۷۷۹، ج ۵ ص ۴۲۹)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़स्मान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ह़ज़रते सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत करते हैं कि ह़ुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अपनी एक रान पर मुझे और एक रान पर इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को बिठाते और दोनों को अपने साथ चिमटा लेते और दुआ़ करते : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! इन दोनों पर रह़्म फ़रमा क्यूं कि मैं भी इन पर रह़्म करता हूं।"

(صحیح البخاری، کتاب الادب، باب وضع الصبی علی الفخذ، الحدیث ۶۰۰۳، ج ۴، ص ۱۰۱)

# शीर ख़्वार बच्चे के रोने के चन्द अस्बाब और चुप कराने के त़रीक़े

बच्चों का रोना कोई नई बात नहीं लेकिन जब शीर ख़्वार बच्चा मुसल्सल रोने लगे और चुप होने का नाम न ले तो हमें इसे नज़र अन्दाज़ नहीं करना चाहिये। शीर ख़्वार बच्चों के रोने के चन्द अस्बाब और इन का ह़ल मुला-ह़ज़ा हो.....

**(1) भूक :**

अक्सर बच्चों को दो से तीन घन्टों के अन्दर भूक लगने लगती है ऐसी सूरत में अगर बच्चे को दूध दे दिया जाए तो वोह सुकून से सो जाते हैं।

**(2) प्यास :**

मौसिमे गरमा में और बुख़ार की सूरत में जिस्म से ज़ियादा पसीना ख़ारिज होता है, इस की वजह से बच्चों को बार बार प्यास लगती है, पानी न मिले तो वोह रोने लगते हैं, थोड़ा सा पानी दिया जाए तो फ़ौरन चुप हो जाते हैं और उन्हें क़रार आ जाता है।

**(3) कपड़े गीले होना :**

बच्चे का पाजामा या जांगिया या NAPKIN (या'नी शीर ख़्वार बच्चों की पेशाब गाह पर रखा जाने वाला रुमाल या तोलिये का टुकड़ा) पेशाब से तर हो जाए तो बच्चों को उल्झन होने लगती है और फ़ौरन रोने लगते हैं NAPKIN तब्दील कर दिया जाए तो फ़ौरन चुप हो जाते हैं, बा'ज़ माएं अपनी सहूलत की ख़ातिर सुब्ह़ से शाम तक "PAMPER" बांधे रखती हैं। कुछ माएं तो इस अन्दाज़ से बांधती हैं कि बच्चे की टांगों में सोज़िश हो जाती है।

## (4) पेट की ख़राबी :

बच्चे पेट में एंठन (या'नी मरोड़) की वजह से भी रोते हैं अगर बच्चा टांगें सुकैड़ कर अचानक रोना शुरूअ़ कर दे तो थोड़ी देर बा'द गेस ख़ारिज होने पर चुप हो जाएगा। कुछ अ़र्सा बा'द फिर ऐसा ही करे तो येह इस बात की अ़लामत है कि बच्चा पेट की तक्लीफ़ में मुब्तला है। दूध पिलाने के बा'द बच्चे को सीने से लगा कर डकारें दिला दी जाएं तो बच्चे उ़मूमन इस तक्लीफ़ में मुब्तला नहीं होते अगर बच्चा इस तक्लीफ़ की वजह से रो रहा हो तो डकार दिलाने पर फ़ौरन चुप हो जाता है, अगर फिर भी चुप न हो और मुसल्सल रोता रहे तो अपने मुआ़लिज से ज़रूर रुजूअ़ करें।

## (5) बोरियत :

बच्चा कमरे में तन्हा सो रहा हो और अचानक उस की आंख खुल जाए और आस पास कोई नज़र न आए तो बेज़ार हो कर रोने लगता है। बच्चे तन्हाई से बहुत जल्द उकता जाते हैं ऐसी सूरत में बच्चे को गोद में ले कर बहलाने से बच्चा फ़ौरन चुप हो जाता है।

## (6) दांत निकलना :

दांत निकल रहे हों तो बच्चा इस की वजह से भी रोता है लेकिन उ़मूमन ऐसा नहीं होता। अगर्चे मुसल्सल रो रहा हो तो इस का कोई और सबब होगा जिसे आप का मुआ़लिज़ बेहतर तौ़र पर समझ सकता है।

## (7) नींद पूरी न होना :

बच्चे की नींद पूरी न हो तब भी वोह रोने लगता है अगर आप देखें कि बच्चे को किसी वजह से सोने का मौक़अ़ नहीं मिल

सका और इस के सोने का वक़्त गुज़र गया है तो उसे फ़ौरन लिटा कर सुलाने की कोशिश करें। बच्चा फ़ौरन सो जाए तो समझें इसी वजह से रो रहा था।

**(8) कान में दर्द :**

अक्सर बच्चे तो उस वक़्त रोते हैं जब उन्हें कोई तक्लीफ़ होती है म-सलन बुख़ार हो, नज़्ला हो, कान में दर्द हो, आख़िरी सूरत में बच्चा बार बार अपने मु-तअस्सिरा कानों को हाथ लगाता है। ऐसी सूरत में भी अपने मुआ़लिज से रुजूअ़ करें।

**अगर** बच्चा किसी सूरत से चुप न हो न दूध पिलाने पर, न डकार दिलाने पर, न थपकने पर, न गोद में लेने पर तो येह इस बात की अ़लामत है कि बच्चे को कहीं न कहीं कोई तक्लीफ़ ज़रूर है जिस की वजह से बच्चा बेचैन है। ऐसी सूरत में घुट्टी पिलाने, ग्राइप वॉटर पिलाने, पेट पर हींग मलने, सीने पर बाम मलने, या झुंझला कर बच्चे को थप्पड़ मारने और बा'द में ख़ुद रोने बैठ जाने से बेहतर है कि बच्चे को फ़ौरन मुआ़लिज को दिखाएं। अगर बच्चा दूध पीना छोड़ दे, चेहरे से बीमार लग रहा हो, बुख़ार हो, दस्त आ रहे हों, बच्चा बेकल हो, बे क़रार हो, मुसल्सल रो रहा हो तो ज़रा भी देर न करें, जल्द अज़ जल्द अपने मुआ़लिज को दिखाएं या फिर किसी माहिरे अत्फ़ाल से रुजूअ़ करें।

## जिगर का कैन्सर ठीक हो गया :

**शैख़े त़रीक़त** अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपनी मायानाज़ तालीफ़ फ़ैज़ाने सुन्नत (जिल्द अव्वल) में लिखते हैं :

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये और ख़ूब ख़ूब रह़मतें और ब-र-कतें लूटिये । आप की तरग़ीब व तह़रीस के लिये एक ईमान अफ़्रोज़ ख़ुश गवार **म-दनी बहार** आप के गोश गुज़ार है । चुनान्चे **गुलिस्ताने मुस्त़फ़ा** (बाबुल मदीना कराची) के एक इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है, मैं ने एक ऐसे इस्लामी भाई को तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के मदीनतुल औलिया मुलतान शरीफ़ में होने वाले **बैनल अक़्वामी तीन रोज़ा सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** की दा'वत पेश की जिन की बेटी को **जिगर का केन्सर** था । वोह दुआ़ए शिफ़ा का जज़्बा लिये सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शरीक हो गए । उन का कहना है मैं ने इज्तिमाए़ पाक में ख़ूब दुआ़ की । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **वापसी के बा'द जब अपनी बेटी का चेकअप करवाया तो डॉक्टर ह़ैरान रह गए क्यूं कि उस के जिगर का केन्सर ख़त्म हो चुका था ।** डॉक्टरों की पूरी टीम ह़ैरत ज़दा थी कि आख़िर केन्सर गया कहां ! जब कि ह़ालत इस क़दर ख़राब थी कि इज्तिमाए़ पाक में जाने से पहले उस लड़की के जिगर से रोज़ाना कम अज़ कम एक सिरिन्ज भर कर मवाद निकाला जाता था ! اَلْحَمْدُ لِلّٰہ इज्तिमाए़ पाक (मुलतान) में शिर्कत की ब-र-कत से अब उस लड़की के जिगर में **केन्सर** का नामो निशान तक न रहा था, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ता दमे बयान वोह लड़की अब न सिर्फ़ रू ब सिह़्ह़त है बल्कि उस की शादी भी हो चुकी है ।

*अगर दर्दे सर हो, कि या केन्सर हो,* *दिलाएगा तुम को शिफ़ा म-दनी माह़ोल*
*शिफ़ाएं मिलेंगी, बलाएं टलेंगी* *यक़ीनन है ब-र-कत भरा म-दनी माह़ोल*

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

## म-दनी मुन्नी का इलाज हो गया :

**प्यारे इस्लामी भाइयो ! दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों की तरबिय्यत के म-दनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये और दोनों जहां की ब-र-कतें ह़ासिल कीजिये। आप की तरग़ीब के लिये म-दनी क़ाफ़िले की एक और बहार गुज़ारिश करता हूं चुनान्चे रन्छोड़ लाइन (बाबुल मदीना कराची) के एक इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है कि एक बार **आ़शिक़ाने रसूल** के तीन दिन के **म-दनी क़ाफ़िले** में तक़रीबन 26 सालह एक इस्लामी भाई भी शरीके सफ़र थे, वोह दुआ़ में बहुत ज़ियादा गिर्या व ज़ारी करते थे। इस्तिफ़्सार पर बताया कि मेरी एक ही **म-दनी मुन्नी** है और उस के चेहरे पर दाढ़ी के बाल उगने शुरूअ़ हो गए हैं ! इस की वजह से मुझे सख़्त तश्वीश है, एक्स-रे और टेस्ट वग़ैरा से सबब सामने नहीं आ रहा और कोई भी इलाज कारगर नहीं हो पा रहा। उन की दर-ख़्वास्त पर शु-रकाए म-दनी क़ाफ़िला ने उन की म-दनी मुन्नी के लिये दुआ़ की। सफ़र मुकम्मल हो जाने के बा'द जब दूसरे दिन उस दुख्यारे इस्लामी भाई से मुलाक़ात हुई तो उन्हों ने मुसर्रत से झूमते हुए येह ख़ुश ख़बरी सुनाई कि बच्ची की अम्मी ने बताया कि आप के **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र पर रवाना होने के दूसरे ही दिन اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ हैरत अंगेज़ तौ़र पर म-दनी मुन्नी के चेहरे से बाल ऐसे ग़ाइब हुए हैं जैसे कभी थे ही नहीं !

*कोई सा भी हो मर्ज़, आओ अल्लाह से अ़र्ज़ मिल के सारे करें, क़ाफ़िले में चलो*
*ग़म से रोते हुए, जान खोते हुए मरह़बा ! हंस पड़ें ! क़ाफ़िले में चलो*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

# "ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली असग़र" के सोलह हुरूफ़ की निस्बत से दूध पीते बच्चों के लिये 16 म-दनी फूल

(अज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी مَدَّظِلُّہُ الْعَالِی)

﴿1﴾ बच्चा या बच्ची पैदा होने के फ़ौरन बा'द یَابَرُّ सात बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर अगर बच्चे को दम कर दिया जाए तो اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ बालिग़ होने तक आफ़तों से ह़िफ़ाज़त में रहेगा ﴿2﴾ पैदाइश के बा'द बच्चे को पहले नमक मिले हुए नीम गर्म पानी से नहलाइये फिर सादा पानी से ग़ुस्ल दीजिये तो اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ बच्चा फोड़े फुन्सी की बीमारियों से मह़फ़ूज़ रहेगा ﴿3﴾ नमक मिले हुए पानी से बच्चों को कुछ दिनों तक नहलाते रहिये कि येह बच्चों की तन्दुरुस्ती के लिये बेह़द मुफ़ीद है। और नीज़ ﴿4﴾ नहलाने के बा'द बदन में सरसों के तेल की मालिश बच्चों की सिह़्ह़त के लिये इक्सीर है ﴿5﴾ बच्चों को दूध पिलाने से पहले रोज़ाना दो तीन मरतबा एक उंगली शहद चटा देना काफ़ी फ़ाएदा मन्द है ﴿6﴾ ख़्वाह झूले में झुलाएं या बिछोने पर सुलाएं या गोद में खिलाएं हर ह़ाल में बच्चों का सर ऊंचा रखिये सर नीचा और पाउं ऊंचे न होने दीजिये कि नुक़्सान देह है ﴿7﴾ विलादत के बा'द बहुत तेज़ रोशनी वाली जगह में रखने से बच्चे की निगाह कमज़ोर हो जाती है ﴿8﴾ जब बच्चे के मसूढ़े सख़्त हो जाएं और दांत निकलते मा'लूम हों तो मसूढ़ों पर मुर्ग़ की चरबी मला करें और ﴿9﴾ रोज़ाना एक दो मरतबा मसूढ़ों पर शहद मला करें और बच्चे के सर और गरदन पर तेल की मालिश करना मुफ़ीद है ﴿10﴾ जब दूध छुड़ाने का वक़्त आए और बच्चा खाने लगे तो ख़बरदार ! ख़बरदार !

उस को कोई सख़्त चीज़ न चबाने दीजिये, बहुत ही नर्म और जल्द हज़्म होने वाली ग़िज़ाएं खिलाइये ﴾11﴿ गाय या बकरी का दूध भी पिलाते रहिये ﴾12﴿ ह़स्बे हैसिय्यत बच्चों को इस उ़म्र में अच्छी ख़ूराक दीजिये कि इस उ़म्र में जो कुछ त़ाक़त बदन में आ जाएगी वोह अगर बच्चा ज़िन्दा रहा तो اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ तमाम उ़म्र काम आएगी ﴾13﴿ बच्चों को बार बार ग़िज़ा नहीं देनी चाहिये। जब तक एक ग़िज़ा हज़्म न हो जाए दूसरी ग़िज़ा हरगिज़ मत दीजिये ﴾14﴿ टॉफ़ियां, मिठाई और खटाई की आ़दत से बचाना बहुत बहुत बहुत ज़रूरी है कि येह चीज़ें बच्चों की सिह़्ह़त के लिये बहुत ही नुक़्सान देह हैं ﴾15﴿ बच्चों को सूखे मेवे और ताज़ा फल खिलाना बहुत ही अच्छा है ﴾16﴿ ख़तना जितनी छोटी उ़म्र में हो जाए बेहतर है तक्लीफ़ भी कम होती और ज़ख़्म भी जल्दी भर जाता है।

(फ़ैज़ाने सुन्नत, बाब फ़ैज़ाने र-मज़ान, अह़कामे रोज़ा, जि. 1, स. 993)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

## बच्चे को लोरी देना

**बच्चे** को सुलाने या बहलाने के लिये लोरी देने का रवाज आ़म है लेकिन लोरी देते वक़्त ख़याल रखा जाए कि येह बे मआ़नी कलिमात पर मुश्तमिल न हो और न ही इस में कोई ग़ैर शर-ई कलिमा हो बल्कि बेहतर येह है कि ह़म्द या ना'त या औलियाए किराम की मन्क़बत बच्चे को सुनाई जाए तो सवाब भी मिलेगा और बच्चे को नींद भी आ जाएगी। लेकिन इस के लिये ज़रूरी है कि किसी मोह़तात़ आ़लिम का ही कलाम पढ़ा जाए म-सलन इमामे अहले सुन्नत अश्शाह अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه, मौलाना ह़सन रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه, मुफ़्तिये

आ'ज़मे हिन्द मौलाना मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه, मौलाना सय्यिद नईमुद्दीन मुरादआबादी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه, मौलाना अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه, मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه, अमीरे अहले सुन्नत अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه वग़ैरा।

## मस्अला :

बच्चों को सुलाने या रोने से बाज़ रखने के लिये अफ़्यून देना ह़राम है। (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 24, स. 198)

## बच्चों पर ख़र्च कीजिये

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !**

अपने बच्चों और दीगर अहले ख़ाना पर दिल खोल कर ख़र्च कीजिये और बिशाराते सरवरे आ़लम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के ह़क़दार बनिये। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जो शख़्स (ना जाइज़ और मुश्तबह चीज़ से) बचने के लिये ख़ुद पर ख़र्च करेगा तो येह स-दक़ा है और जो कुछ अपनी बीवी, औलाद और घर वालों पर ख़र्च करेगा स-दक़ा है।''

(مجمع الزوائد، کتاب الزکوٰۃ، باب فی نفقۃ الرجل، الحدیث ۴۶۶۰، ج ۳، ص ۳۰۲)

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्तर पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''सब से पहले जो चीज़ इन्सान के तराज़ूए आ'माल में रखी जाएगी वोह इन्सान का वोह ख़र्च होगा जो उस ने अपने घर वालों पर किया होगा।''

(المعجم الاوسط، الحدیث ۶۱۳۵، ج ۴، ص ۳۲۸)

ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें इर्शाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये तू जितना भी ख़र्च करता है तुझे इस का अज्र दिया जाएगा ह़त्ता कि जो लुक़्मा तुम अपनी बीवी के मुंह में डालते हो उस का भी अज्र मिलेगा।"

(صحیح البخاری، کتاب الجنائز، باب رثی النبی ﷺ الحدیث ۱۲۹۵، ج۱، ص۴۳۸)

ह़ज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रिवायत करते हैं कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ख़र्च करने के ए'तिबार से बेहतरीन दीनार वोह है जिसे आदमी अपने घर वालों पर ख़र्च करता है और इसी त़रह़ वोह दीनार (भी बेहतर है) जिसे वोह राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में अपने जानवर पर ख़र्च करता है और वोह दीनार भी जिसे अपने साथियों पर राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में ख़र्च कर देता है।"

(المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث ثوبان، الحدیث ۲۴۴۳، ج۸، ص۳۲۳)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, कहते हैं कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "एक दीनार वोह है जिसे तुम अल्लाह की राह में ख़र्च करते हो, एक दीनार वोह है जिसे तुम ग़ुलाम पर ख़र्च करते हो, एक दीनार वोह है जिसे तुम मिस्कीन पर स-दक़ा करते हो, एक दीनार वोह है जिसे तुम अपने अहलो इ़याल पर ख़र्च करते हो इन में सब से ज़ियादा अज्र उस दीनार पर मिलेगा जिसे तुम अपने अहलो इ़याल पर ख़र्च करते हो।"

(صحیح مسلم، کتاب الزکوۃ، باب فضل النفقۃ علی العیال.....الخ، الحدیث ۹۹۵، ص۴۹۹)

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बयान करते हैं कि बनू उ़ज़्रह के एक शख़्स ने एक ग़ुलाम को मुदब्बर किया (या'नी येह कहा कि मेरे मरने के बा'द तू आज़ाद है) हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को यह ख़बर पहुंची, आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस शख़्स से पूछा : "क्या तेरे पास इस के इलावा भी माल है ?" उस ने अ़र्ज़ की : "नहीं ।" आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "इस ग़ुलाम को मुझ से कौन ख़रीदेगा ?" ह़ज़रते सय्यिदुना नईम बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उस को आठ सो दिरहम में ख़रीद लिया, और वोह दिरहम ला कर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में पेश कर दिये, आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने वोह दिरहम उस ग़ुलाम के मालिक को दिये और फ़रमाया : "पहले अपनी ज़ात पर ख़र्च करो, फिर अगर बचे तो अपने अहलो इ़याल पर ख़र्च करो, फिर अगर अपने अहलो इ़याल से कुछ बचे तो क़राबत दारों पर, और अगर क़राबत दारों से भी कुछ बच जाए तो इधर उधर, अपने सामने, दाएं और बाएं ।"

(صحیح مسلم، کتاب الزکوۃ، باب الابتداء فی النفقۃ بالنفس....الخ، الحدیث ۹۹۷، ص ۴۹۹)

## मस्अला :

आदमी पर कम अज़् कम इतना कमाना फ़र्ज़् है जो उस के लिये, उस के अहलो इ़याल के लिये, अदाएगिये क़र्ज़् के लिये और उन्हें किफ़ायत कर सके जिन का न-फ़क़ा उस के ज़िम्मे वाजिब है । मां बाप मोह़ताज व तंगदस्त हों तो उन्हें ब क़दरे किफ़ायत कमा कर देना फ़र्ज़् है ।

(الفتاوی الھندیہ، کتاب الکراھیۃ، باب الخامس عشر فی الکسب، ج ۵، ص ۳۴۸)

# बच्चों को रिज़्क़े ह़लाल खिलाइये

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !**

**अपने घर वालों** को रिज़्क़े ह़लाल खिलाने का इल्तिज़ाम कीजिये कि इस की बड़ी ब-र-कतें और फ़ज़ाइल हैं, चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब बिन उ़ज्रह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि एक शख़्स नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने से गुज़रा । सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم ने उस की चुस्ती देख कर अ़र्ज़ की : ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! काश येह शख़्स जिहाद में शरीक होता ।'' तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''अगर येह अपने छोटे बच्चों की ज़रूरत पूरी करने के लिये निकला है तो भी येह अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की राह में है और अगर अपने बूढ़े वालिदैन की ख़िदमत के लिये निकला है तो भी अल्लाह तआ़ला की राह में है और अगर अपने आप को (ना जाइज़ व शुबा वाली चीज़ से) बचाने के लिये निकला है तो भी अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की राह में है और अगर येह रियाकारी और तफ़ाख़ुर के लिये निकला है तो फिर येह शैत़ान की राह में है ।'' (المعجم الکبیر،الحدیث۲۸۲،ج۱۹،ص۱۲۹)

इमाम ग़ज़ाली رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ नक़्ल फ़रमाते हैं : ''जो शख़्स लगातार ह़लाल की रोज़ी कमाता है और ह़राम के लुक़्मे की आमेज़िश नहीं होने देता, अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उस के दिल को अपने नूर से रोशन कर देता है और ह़िक्मत के चश्मे उस के दिल से जारी हो जाते हैं ।''

(کیمیائے سعادت، باب اول، فضیلت طلب حلال،ج۱،ص۳٤٤)

हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''जो शख़्स इस लिये ह़लाल कमाई करता है कि सुवाल

करने से बचे, अहलो इयाल के लिये कुछ ह़ासिल करे और पड़ोसी के साथ हुस्ने सुलूक करे तो वोह क़ियामत में इस त़रह़ आएगा कि उस का चेहरा चौदहवीं के चांद की त़रह़ चमकता होगा।"

(شعب الایمان، باب فی الزہد وقصر الامل، الحدیث ۱۰۳۷۵، ج۷، ص۲۹۸)

**प्यारे इस्लामी भाइयो !**

तक्मीले ज़रूरिय्यात और आसाइशों के हुसूल के लिये हरगिज़ हरगिज़ ह़राम कमाई के जाल में न फंसें कि येह आप के और आप के घर वालों के लिये दुन्या व आख़िरत में अ़ज़ीम ख़सारे का बाइस है जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रिवायत करते हैं कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "वोह गोश्त हरगिज़ जन्नत में दाख़िल न होगा जो ह़राम में पला बढ़ा है।"

(سنن الدارمی، کتاب الرقاق، باب فی اکل السحت، الحدیث ۲۷۷۶، ج۲، ص۴۰۹)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ह़न्ज़ला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "सूद का एक दिरहम जो इन्सान (इस का सूद होना) जानते हुए खाए, छत्तीस बार ज़िना करने से सख़्त तर है।"

(المسند للامام احمد بن حنبل حدیث عبداللہ بن حنظلہ، الحدیث ۲۲۰۱۶، ج۸، ص۲۲۳)

## तंगदस्ती की वजह से ह़राम कमाने वाला :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "लोगों पर एक ज़माना ऐसा आएगा कि दीनदार को अपना दीन बचाने के लिये एक पहाड़ से दूसरे पहाड़ और

एक ग़ार से दूसरी ग़ार की त़रफ़ भागना पड़ेगा तो जब ऐसा ज़माना आ जाए तो रोज़ी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी ही से ह़ासिल की जाएगी फिर उस ज़माने में आदमी अपने बीवी बच्चों के हाथों हलाक होगा अगर उस के बीवी बच्चे न हों तो वोह अपने वालिदैन के हाथों हलाक होगा अगर उस के वालिदैन न हुए तो वोह रिश्तेदारों और पड़ोसियों के हाथों हलाक होगा।" सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! वोह कैसे ?" फ़रमाया : "वोह उसे उस की तंगदस्ती पर आ़र दिलाएंगे तो वोह अपने आप को हलाकत में डालने वाले कामों में मसरूफ़ कर देगा।" (الزھد الکبیر، الحدیث ۴۷۹، ص ۱۸۳)

## एह़तियाते न-बवी :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के साह़िब ज़ादे ह़ज़रते ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने (जब कि अभी बच्चे ही थे) एक मरतबा स-दक़े की खजूरों में से एक खजूर उठा कर अपने मुंह में रख ली जब हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने देखा तो फ़ौरन फ़रमाया : "**किख़ किख़**" या'नी इस को मुंह से निकाल कर फेंक दो, क्या तुम्हें मा'लूम नहीं कि हम या'नी बनू हाशिम स-दक़े का माल नहीं खाते।"

(صحیح المسلم، کتاب الزکوٰۃ، باب تحریم الزکوٰۃ علی رسول اللہ ﷺ...الخ، الحدیث ۱۰۶۹، ص ۵۰۱)

## बच्चों को नया फल खिलाइये

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि जब सरवरे कौनैन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में पहला फल पेश किया जाता तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते : "या इलाही عَزَّوَجَلَّ !

हमारे मदीने, हमारे फलों और हमारे मद और साअ़ में ब-र-कत दर ब-र-कत अ़ता फ़रमा।" फिर वोह फल वहां मौजूद बच्चों में से सब से छोटे बच्चे को दे देते।"

(صحیح المسلم کتاب الحج، باب فضل المدینۃ ودعاء النبی ﷺ فیھا بالبرکۃ الحدیث ۱۳۷۳، ص ۷۱۳)

जब कोई नया फल आए तो अपने बच्चों को खिलाइये कि नए को नया मुनासिब है। फल वग़ैरा बांटने में पहले बेटियों को दीजिये कि इन का दिल बहुत थोड़ा होता है। ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो बाज़ार से अपने बच्चों के लिये कोई नई चीज़ लाए तो वोह उन पर स-दक़ा करने वाले की त़रह़ है और उसे चाहिये कि बेटियों से इब्तिदा करे क्यूं कि अल्लाह तआ़ला बेटियों पर रह़म फ़रमाता है और जो शख़्स अपनी बेटियों पर रह़मत व शफ़्क़त करे वोह ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में रोने वाले की मिस्ल है और जो अपनी बेटियों को ख़ुश करे अल्लाह तआ़ला बरोज़े क़ियामत उसे ख़ुश करेगा।"

(فردوس الاخبار، باب المیم، الحدیث ۵۸۳۰، ج ۲، ص ۲۶۳)

## बच्चे की सिह़्ह़त का ख़याल रखिये

**वालिदैन** को चाहिये कि बच्चों की अच्छी सिह़्ह़त के लिये ज़रूरी लवाज़िमात म-सलन अच्छी ग़िज़ा, साफ़ सुथरे घर और मौसिम के मुत़ाबिक़ आराम देह लिबास का ख़याल रखें। उन के इस्ति'माल की अश्या को जरासीम से बचा कर रखें। उन्हें ह़िफ़ाज़ती टीके लगवाएं। अगर वोह बीमार पड़ जाएं तो किसी माहिर त़बीब की ख़िदमत ह़ासिल करें। ह़ुसूले शिफ़ा के लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारों की बारगाह में भी ह़ाज़िर होना चाहिये। जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना

साइब बिन यज़ीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मेरी ख़ाला मुझे रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा ब-र-कत में ले गईं और अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरा भान्जा बीमार है।" (येह सुन कर) रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरे सर पर हाथ फैरा और मेरे लिये दुआ़ए ब-र-कत फ़रमाई। फिर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने वुज़ू फ़रमाया तो मैं ने आप के वुज़ू का बचा हुवा पानी पिया। (صحیح المسلم کتاب الفضائل، باب اثبات خاتم النبوۃ، الحدیث ۲۳۴۵، ص ۱۲۷۷)

**प्यारे इस्लामी भाइयो !** अगर कभी आप की औलाद या घर का कोई और फ़र्द बीमार हो जाए तो तिब्बी इ़लाज के साथ साथ राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र करने वाले म-दनी क़ाफ़िलों में शामिल हो कर उस की सिह़्ह़त याबी की दुआ़ भी कीजिये। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में आ़शिक़ाने रसूल के साथ **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र की ब-र-कत से शिफ़ायाबी के कई वाक़िआ़त हैं। दो बहारें मुला-ह़ज़ा हों.....

## बीनाई वापस आ गई :

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के पास एक साह़िब अपने मुन्ने को गोद में उठा कर दम करवाने के लिये लाए और बताया कि बच्चे की बीनाई चली गई है। अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने दम करने के बा'द मश्वरा दिया कि आप दा'वते इस्लामी के म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र करें और सफ़र पर जा कर दुआ़ करें, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ करम होगा। कुछ अ़र्से बा'द वोह साह़िब फिर अपने मुन्ने को ले कर फ़ैज़ाने मदीना तशरीफ़ लाए और बताया कि मैं ने आ़शिक़ाने रसूल के म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र किया और सफ़र पर जा कर दुआ़ मांगी थी,

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! मेरे मुन्ने की आंखों की रोशनी वापस आ चुकी है।

*उन्हें न देखा तो किस काम की हैं येह आंखें*
*कि देखने की है सारी बहार आंखों में*

(दा'वते इस्लामी की बहारें, क़िस्त अव्वल, स. 3)

## इलाज हो गया :

एक इस्लामी भाई का बयान है कि हमारे पड़ोसी का बच्चा किसी मूज़ी मरज़ में मुब्तला हो गया। डॉक्टरों ने बताया कि इस का इलाज पाकिस्तान में नहीं हो सकता अगर इस की ज़िन्दगी चाहते हो तो इसे बैरूने मुल्क ले जाओ। वोह बेचारा ग़रीब शख़्स बैरूने मुल्क इलाज करवाने के लिये लाखों रुपै कहां से लाता। अल ग़रज़ वोह अपने लख़्ते जिगर की ज़िन्दगी से ना उम्मीद हो गया। बाबुल मदीना (कराची) में होने वाला तीन रोज़ा सुन्नतों भरा इज्तिमाअ़ क़रीब था। मैं ने उसे इज्तिमाअ़ में शिर्कत कर के दुआ करने की तरग़ीब दिलाई। चुनान्चे वोह अपने बीमार बच्चे को भी इज्तिमाअ़ में ले गया और गिड़गिड़ा कर दुआ मांगी। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ बच्चा बिल्कुल तन्दुरुस्त हो गया, जब डॉक्टरों ने बच्चे का दोबारा तिब्बी मुआ़-यना किया तो हैरान रह गए।

(दा'वते इस्लामी की बहारें, हिस्सए अव्वल, स. 15)

## ज़बान खुलने के बा'द अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का नाम सिखाइये

**जब** बच्चा ज़रा होशियार हो जाए और ज़बान खोलने लगे तो सब से पहले उस के ख़ालिक़ व मालिक और राज़िक़ का इस्मे ज़ात "अल्लाह" सिखाना चाहिये और इस बात का इल्तिज़ाम भी किया जाए कि उस की पाक व साफ़ ज़बान से सब से पहले कलिमए तय्यिबा ही जारी हो।

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "अपने बच्चों की ज़बान से सब से पहले لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه कहलवाओ।" (شعب الایمان، باب فی حقوق الاولاد، الحدیث۸۶۴۹، ج۶،ص ۳۹۷)

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ ने अपनी नवासी के लिये सब घर वालों को कह रखा था कि इस के सामने "अल्लाह अल्लाह" का ज़िक्र करते रहें ताकि इस की ज़बान से पहला लफ़्ज़ "अल्लाह" निकले और जब वोह आप دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ की बारगाह में लाई जाती तो आप ख़ुद भी उस के सामने ज़िक्रुल्लाह करते। चुनान्चे जब इन की नवासी ने बोलना शुरूअ़ किया तो पहला लफ़्ज़ "अल्लाह" ही बोला।

तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तहरीक **दा'वते इस्लामी** की मर्कज़ी मजलिसे शूरा के मर्हूम रुक्न अलहाज अल हाफ़िज़ अल मुफ़्ती मुहम्मद फ़ारूक़ अल अ़त्तारिय्युल म-दनी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡغَنِی की म-दनी मुन्नी उन की वफ़ात के वक़्त ग्यारह माह की थी। जब म-दनी मुन्नी से घर का कोई फ़र्द कहता कि बोलो बेटी "पापा" तो फ़रमाते : "इस को यूं न सिखाइये बल्कि इस के सामने "अल्लाह, अल्लाह" कहते रहें।" (मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी, स. 43)

**बच्चे** जब बोलना शुरूअ़ करें तो उन से गुफ़्त-गू के दौरान साफ़ और आसान छोटे छोटे फ़िक्रों में बात करें। बच्चे शुरूअ़ शुरूअ़ में तुतला कर बोलते हैं लेकिन आप ऐसा न करें क्यूं कि ऐसी सूरत में वोह इसी अन्दाज़ को अच्छा समझना शुरूअ़ करेंगे और इन की येह आ़दत बड़े हो कर भी बाक़ी रहती है।

## बाप का नाम और घर का पता याद कराइये

**जूंही** बच्चा घर से बाहर निकलने के क़ाबिल हो जाए तो उसे उस के वालिद और दादा और चचा वग़ैरा का नाम गली या महल्ले का नाम याद करवा दीजिये ताकि ख़ुदा न ख़्वास्ता गुम हो जाने की सूरत में उसे आसानी से घर पहुंचाया जा सके। अगर आप इस काम में सुस्ती करेंगे तो हो सकता है बच्चा गुम होने की सूरत में जल्दी न मिल सके क्यूं कि जो शख़्स भी उसे घर पहुंचाना चाहेगा वोह उस से उस का नाम व पता पूछेगा और जवाब में बच्चा अगर येह कहेगा कि मैं अपने बाप का बेटा हूं, और अपने घर में रहता हूं तो उस के घर बार का कुछ पता न चल सकेगा।

## ज़रूरी अ़क़ाइद सिखाइये

**वालिदैन** को चाहिये कि जब उन की औलाद सिने शुऊ़र को पहुंच जाए तो उसे अल्लाह तआ़ला, फ़िरिश्तों, आस्मानी किताबों, अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام, क़ियामत और जन्नत व दोज़ख़ के बारे में ब तदरीज **अ़क़ाइद** सिखाएं। बच्चे को बताएं कि

**हमें** अल्लाह तआ़ला ने पैदा किया है, वोही हमें **रिज़्क़** अ़ता फ़रमाता है, उसी ने **ज़िन्दगी** दी है, वोही **मौत** देगा, हम सिर्फ़ उसी की **इबादत** करते हैं, वोह **जिस्म, जगह** और **मकान** से पाक है (बा'ज़ मां बाप अल्लाह तआ़ला का नाम लेने पर अपने बच्चों को आस्मान की त़रफ़ उंगली उठाना सिखाते हैं, ऐसा न किया जाए), वोह किसी का **मोहताज नहीं** सारी काएनात उस की मोहताज है, वोह औलाद से **पाक** है, वोह हमेशा से है और हमेशा रहेगा, जो कुछ हो चुका है, जो हो रहा है या होगा वोह सब जानता है.....

**फ़िरिश्ते** उस की **नूरी मख़्लूक़** हैं जो उस के हुक्म से मुख़्तलिफ़ काम सर अन्जाम देते हैं म-सलन बारिश बरसाना, हवा चलाना, किसी की रूह निकालना वग़ैरहा.....

अल्लाह तआ़ला ने अपने बन्दों की हिदायत के लिये बहुत से **सहीफ़े** और **किताबें** नाज़िल फ़रमाईं जिन में **चार किताबें** बहुत मश्हूर हैं,

(1) तौरात (येह ह़ज़रते मूसा (عَلَيْهِ السَّلَام) पर नाज़िल हुई)

(2) ज़बूर (येह ह़ज़रते दावूद (عَلَيْهِ السَّلَام) पर नाज़िल हुई)

(3) इन्जील (येह ह़ज़रते ईसा (عَلَيْهِ السَّلَام) पर नाज़िल हुई)

(4) क़ुरआने करीम (येह हमारे नबी मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर नाज़िल हुई) ।.....

**अल्लाह तआ़ला** ने अपनी मख़्लूक़ की रहनुमाई के लिये अपने **अम्बिया और रसूलों** को भेजा जिन की मुकम्मल ता'दाद वोही जानता है और सब से आख़िर में हमारे नबी मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा, अह़मदे मुज्तबा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को भेजा । आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के आख़िरी नबी हैं, आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द कोई नबी नहीं आएगा । अल्लाह तआ़ला ने आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को आ'ला शान अ़त़ा फ़रमाई है ।

**क़ियामत** से मुराद येह है कि एक वक़्त ऐसा आएगा कि येह आस्मान व ज़मीन सब तबाह हो जाएंगे फिर मुर्दे अपनी क़ब्रों से उठ खड़े होंगे और मैदाने मह़शर में अपने रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ह़ाज़िर होंगे और अपने आ'माल का ह़िसाब देंगे फिर जिस के अ़मल अच्छे होंगे उसे जन्नत मिलेगी और जिस के आ'माल बुरे होंगे उसे दोज़ख़ में जाना पड़ेगा ।

बच्चे के ज़ेह्न में **जन्नत का शौक़** और **जहन्नम का ख़ौफ़** बिठाइये। इस सिल्सिले में बच्चे की समझ बूझ के मुताबिक़ इन्आ़माते जन्नत और अ़ज़ाबाते जहन्नम की रिवायात सुनाइये और उसे बताइये कि अगर हम अल्लाह तआ़ला और उस के प्यारे मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की इताअ़त करेंगे तो हमें जन्नत मिलेगी और अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी में ज़िन्दगी बसर की तो जहन्नम का अ़ज़ाब हमारा मुन्तज़िर होगा। وَالعِيَاذُبِاللّٰه

(माख़ूज़ अज़् बहारे शरीअ़त, ह़िस्सए अव्वल)

## ह़िकायत :

एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه नह्र के कनारे पर चल रहे थे कि आप ने देखा कि एक बच्चा कनारे पर बैठा वुज़ू कर रहा है और रो भी रहा है। आप ने पूछा, "ऐ मुन्ने ! तुम क्यूं रो रहे हो ?" उस ने अ़र्ज़ की : "मैं क़ुरआने पाक की तिलावत कर रहा था, जब मैं इस आयत पर पहुंचा :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِيْكُمْ نَارًا وَّقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ (پ۲۸،التحریم:۶)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ ईमान वालो ! अपनी जानों और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ जिस के ईंधन आदमी और पथ्थर हैं।

तो मैं डर गया कि अल्लाह तआ़ला कहीं मुझे जहन्नम में न डाल दे।" आप ने फ़रमाया : "मुन्ने ! तुम तो बहुत छोटे हो, तुम जहन्नम में नहीं जाओगे।" वोह कहने लगा : " बाबाजान ! आप तो समझदार हैं, क्या आप नहीं जानते कि जब लोग अपनी ज़रूरत के लिये आग जलाते हैं तो पहले छोटी लकड़ियों को रखते हैं फिर बड़ी लकड़ियां आग में डालते हैं।"

वोह बुज़ुर्ग उस नन्हे म-दनी मुन्ने के इस अन्दाज़ को देख कर बहुत रोए और फ़रमाने लगे : "येह बच्चा हम से कहीं ज़ियादा जहन्नम की आग से डरता है तो हमारा ह़ाल क्या होना चाहिये।"

(درۃ الناصحین المجلس السابع والستون، ص۲۶۳)

﴿अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो.. और.. उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो﴾

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

## बच्चे के दिल में नबिय्ये करीम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत डालिये

**वालिदैन** को चाहिये कि सरकारे मदीना, फ़ैज़ गन्जीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की सीरत के मुख़्तलिफ़ वाक़िआ़त वक़्तन फ़ वक़्तन बच्चे को सुनाते रहें ताकि उस के दिल में इ़श्क़े रसूल صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم परवान चढ़ता चला जाए। ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तुम में कोई उस वक़्त तक (कामिल) मोमिन नहीं हो सकता जब तक मैं उस के नज़्दीक उस के वालिद, औलाद और तमाम लोगों से ज़ियादा महबूब न हो जाऊं।"

(صحیح البخاری، کتاب الایمان، باب حب الرسول من الایمان، الحدیث ۱۴، ج۱، ص۱۵)

**अपने** बच्चे को **सरकारे मदीना**, फ़ैज़ गन्जीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ाते वाला तबार पर दुरूदे पाक पढ़ने की आ़दत डालिये। इस के लिये ख़ुसूसी तौ़र पर बच्चे के सामने रह़मते आ़लम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का ज़िक्रे अन्वर होने पर मह़ब्बत के साथ दुरूद शरीफ़ म-सलन صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पढ़िये और صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب (या'नी ह़बीबे ख़ुदा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूद पढ़ो) कह कर बच्चे को भी **दुरूद पढ़ने** की तरग़ीब दीजिये। वक़्तन फ़ वक़्तन बच्चे को दुरूद शरीफ़ पढ़ने के फ़ज़ाइल बताते रहें, चन्द रिवायात पेशे ख़िदमत हैं,

(1) नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर, आमिना के पिसर, ह़बीबे दावर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़-ज़मत निशान है : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ख़ातिर आपस में महब्बत रखने वाले जब बाहम मिलें और मुसा-फ़ह़ा करें और नबी صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक भेजें तो उन के जुदा होने से पहले दोनों के अगले पिछले गुनाह बख़्श दिये जाते हैं।''

(مسند ابی یعلی، مسند انس بن مالک، الحدیث ۲۹۵۱، ج ۳، ص ۹۵)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(2) हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : ''मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है।'' (الجامع الصغیر، الحدیث ۱۴۰۶، ص ۸۷)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(3) सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : ''बेशक अल्लाह तआ़ला ने एक फ़िरिश्ता मेरी क़ब्र पर मुक़र्रर फ़रमाया है जिसे तमाम मख़्लूक़ की आवाज़ें सुनने की त़ाक़त अ़त़ा फ़रमाई है पस क़ियामत तक जो कोई मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ता है तो वोह मुझे उस का और उस के बाप का नाम पेश करता है। कहता है, फ़ुलां बिन फ़ुलां ने आप पर इस वक़्त दुरूदे पाक पढ़ा है।''

(مجمع الزوائد، کتاب الادعیۃ، باب فی الصلوۃ علی النبی ﷺ فی الدعاء وغیرہ، الحدیث ۱۷۲۹۱، ج ۱۰، ص ۲۵۱)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(4) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़-ज़मत निशान है : "जो मुझ पर सो मरतबा दुरूदे पाक पढ़ेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की सो ह़ाजात पूरी फ़रमाएगा, इन में से तीस दुन्या की हैं और सत्तर आख़िरत की।" (کنز العمال، کتاب الاذکار، الباب السادس، الحدیث ۲۲۲۹، ج۱، ص ۲۵۵)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

(5) ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : "बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे।" (جامع الترمذی، کتاب الوتر، باب ماجاء فی فضل الصلوٰۃ علی النبی ﷺ، الحدیث ۴۸۴، ج۲، ص ۲۷)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

(6) आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़-ज़मत निशान है : "मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो अल्लाह तआ़ला तुम पर रह़मत भेजेगा।" (الدر المنثور ج۶، ص ۶۵۴)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

(7) सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़-ज़मत निशान है : "ऐ लोगो !

बेशक बरोज़े क़ियामत उस की दहशतों और हिसाब व किताब से जल्द नजात पाने वाला शख़्स वोह होगा जिस ने तुम में से मुझ पर दुन्या के अन्दर ब कसरत दुरूद शरीफ़ पढ़े होंगे ।''

(फ़िरदौस الاخبار، الحدیث ۸۲۱۰، ج ۲، ص ۴۷۱)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

(8) नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जिस ने मुझ पर सो मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआ़ला उस की दोनों आंखों के दरमियान लिख देता है कि येह निफ़ाक़ और जहन्नम की आग से आज़ाद है और उसे बरोज़े क़ियामत शु-हदा के साथ रखेगा ।''

(مجمع الزوائد، کتاب الادعیۃ، باب فی فضل الصلوٰۃ علی النبی ﷺ...الخ، الحدیث ۱۷۲۹۸، ج ۱۰، ص ۲۵۲)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

(9) शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़-ज़मत निशान है : ''जो मुझ पर एक दिन में एक हज़ार बार दुरूदे पाक पढ़ेगा वोह उस वक़्त तक नहीं मरेगा जब तक जन्नत में अपना मक़ाम न देख ले ।''

(الترغیب والترہیب، کتاب الذکر والدعاء، الترغیب فی اکثار الصلوٰۃ علی النبی ﷺ، الحدیث ۲۲، ج ۲، ص ۳۲۸)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

(10) शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, सुल्ताने शीरीं मक़ाल, पैकरे हुस्नो जमाल, मख़्ज़ने अ़-ज़-मतो कमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल

साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़-ज़मत निशान है : "जिस ने दिन और रात में मेरी त़रफ़ शौक़ व मह़ब्बत की वजह से तीन तीन मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआ़ला पर ह़क़ है कि वोह उस के उस दिन और उस रात के गुनाह बख़्श दे।"

(المعجم الکبیر، الحدیث ۹۲۸، ج ۲، ص ۳۶۱)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**वालिदैन** को चाहिये कि जब भी नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का नामे अक़्दस आए तो अपने अंगूठों को चूम कर आंखों से लगा लें। इस का सुबूत इस रिवायत में है कि

ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन अल मुज्तबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने फ़रमाया : "जो शख़्स मुअज़्ज़िन को اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ कहते सुने और येह दुआ़ पढ़े

مَرْحَبًا بِحَبِيْبِيْ وَقُرَّةِ عَيْنِيْ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِاللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمْ

और अपने अंगूठों को चूम कर आंखों से लगाए तो न कभी अन्धा हो और न कभी उस की आंखें दुखें।" (المقاصد الحسنۃ، تحت الحدیث ۱۰۲۱، ص ۳۹۰)

**सय्यिदुल मह़बूबीन** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का ज़िक्र नूरे ईमान व सुरूरे जान है। इस लिये वालिदैन को चाहिये कि अपने बच्चे में सरकारे मदीना, फ़ैज़ गन्जीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ना'त शरीफ़ पढ़ने और सुनने का ज़ौक़ व शौक़ बेदार करें।

# सहाबए किराम व अहले बैत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُم की महब्बत सिखाइये

**अपने** अस्लाफ़ से अक़ीदत व महब्बत का तअल्लुक़ ईमान की मज़्बूती का ज़रीआ़ है। इस लिये वालिदैन को चाहिये कि अपने बच्चों के दिल में सहाबए किराम व अहले बैत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُم की अक़ीदत पैदा करें। इस के लिये बच्चों को इन नुफ़ूसे क़ुदसिय्या की सीरत के नूरानी वाक़िआ़त सुनाइये।

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मेरे सहाबा के बारे में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरो, मेरे बा'द इन्हें निशानए ए'तिराज़ न बनाना, जिस ने इन से महब्बत रखी तो उस ने मेरी महब्बत के सबब इन से महब्बत रखी और जिस ने इन से बुग़्ज़ रखा तो उस ने मुझ से बुग़्ज़ के सबब इन से बुग़्ज़ रखा और जिस ने इन्हें अज़िय्यत दी उस ने मुझे अज़िय्यत दी और जिस ने मुझे अज़िय्यत दी उस ने अल्लाह तआ़ला को अज़िय्यत दी, क़रीब है कि अल्लाह तआ़ला उसे अपनी गिरिफ़्त में ले ले।"

(سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب فی من سبّ اصحاب النبی ﷺ، الحدیث ۳۸۸۸، ج۵، ص۴۶۳)

हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने का'बतुल्लाह शरीफ़ का दरवाज़ा पकड़े हुए फ़रमाया कि मैं ने सरकारे मदीना, फ़ैज़ गन्जीना, राहते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना : "ख़बरदार ! तुम में मेरे अहले बैत की मिसाल कश्तिये नूह عَلَیۡہِ السَّلَام की तरह है, जो इस में सुवार हुवा, वोह नजात पा गया और जो पीछे रहा वोह हलाक हो गया।"

(المستدرک، کتاب معرفۃ الصحابۃ رضی اللہ تعالٰی عنہم، باب وعدنی ربی فی اہل بیتی...الخ، الحدیث ۴۷۷۴، ج۴، ص۱۳۲)

# औलियाए किराम का अदब सिखाइये

अपनी औलाद को अल्लाह तआ़ला के वलियों का अदब सिखाइये और उन की पैरवी का ज़ेह्न बनाइये। अपने मक़्बूल बन्दों के बारे में अल्लाह तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

اَلَاۤ اِنَّ اَوْلِیَآءَ اللّٰهِ لَاخَوْفٌ عَلَیْهِمْ وَلَاهُمْ یَحْزَنُوْنَ0 (پ۱۱، یونس:۶۲)

**तर-ज-मए कन्जुल ईमान :** सुन लो बेशक अल्लाह के वलियों पर न कुछ ख़ौफ़ है न कुछ ग़म।

नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : ''जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के किसी वली से दुश्मनी रखे तह़क़ीक़ उस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से ए'लाने जंग कर दिया।''

(سنن ابن ماجہ، کتاب الفتن، باب من ترجی لہ السلامۃ من الفتن، الحدیث ۳۹۸۹، ج۴، ص۳۵۰)

**लेकिन** याद रखिये ! कि कोई भी वली चाहे वोह कैसा ही अ़ज़ीम हो, अह़कामे शरइ़य्या की पाबन्दी से आज़ाद नहीं हो सकता, चुनान्चे दाढ़ी मुंडाने, एक मुठ्ठी से घटाने, गालियां बकने, गाने सुनने, फ़िल्में डिरामे देखने, ना मह़रम औ़रतों का हाथ पकड़ने वाला और दीगर ए'लानिया गुनाह करने वाला शख़्स कभी वली नहीं हो सकता। बा'ज़ जाहिल यहां तक कह देते हैं कि शरीअ़त एक रास्ता है और रास्ते की ह़ाजत उन को होती है जो मक़्सूद तक न पहुंचे हों, हम तो पहुंच गए। ऐसों के बारे में सय्यिदुत्ताइफ़ा ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैदे बग़दादी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : ''बेशक वोह सच कहते हैं, वोह पहुंच गए मगर कहां ? जहन्नम में।''

(الیواقیت والجواھر، مبحث السادس والعشرون، الجزء الاول، ص۲۰۶)

# अपने बच्चे को कुरआन पढ़ाइये

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !**

**कुरआन** एक नूर है अगर बच्चों का दिलो दिमाग़ कुरआन की रोशनी से आरास्ता किया जाए तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ उन का बातिन भी मुनव्वर हो जाएगा। मुअ़ल्लिमे आ'ज़म, शफ़ीए मुअ़ज़्ज़म, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी औलाद को ता'लीमे कुरआन से आरास्ता करने वालों को कई बिशारतें अ़ता फ़रमाई हैं। चुनान्चे

(1) ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''जिस शख़्स ने दुन्या में अपने बच्चे को कुरआन पढ़ना सिखाया, तो बरोज़े क़ियामत जन्नत में उस शख़्स को एक ताज पहनाया जाएगा जिस की बिना पर अहले जन्नत जान लेंगे कि इस शख़्स ने दुन्या में अपने बेटे को ता'लीम दिलवाई थी।'' (المعجم الاوسط، الحدیث ۹۶، ج۱، ص۴۰)

(2) दो जहां के सुल्त़ान, सरवरे ज़ीशान, साह़िबे कुरआन, मह़बूबे रह़मान صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़्फ़िरत निशान है : ''जो शख़्स अपने बेटे को नाज़िरा कुरआने करीम सिखाए उस के सब अगले पिछले गुनाह बख़्श दिये जाते हैं।'' (المعجم الاوسط، الحدیث ۹۶۳۵، ج۱، ص۵۲۴)

अगर बच्चे का रुज्ह़ान हो तो उसे कुरआने पाक भी ह़िफ़्ज़ करवाइये इस की फ़ज़ीलत ज़ियादा है जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''जिस शख़्स ने अपने बेटे को कुरआने मजीद देख कर पढ़ना सिखाया, उस

के अगले पिछले गुनाह बख़्श दिये जाएंगे और जिस ने अपने बच्चे को बिग़ैर देखे पढ़ना सिखाया तो अल्लाह तआ़ला उस बाप को चौदहवीं रात के चांद की मानिन्द उठाएगा और उस के बेटे से कहा जाएगा : पढ़, पस जब भी वोह एक आयत पढ़ेगा, अल्लाह तआ़ला उस के बाप का एक द-रजा बुलन्द फ़रमा देगा यहां तक कि वोह पूरा क़ुरआन ख़त्म कर ले।''

(المعجم الاوسط، الحدیث ۱۹۳۵، ج۱، ص ۵۴۴)

**वालिदैन** को चाहिये कि अपने बच्चे को क़ुरआने पाक पढ़ाने के लिये ऐसे सह़ीहुल अ़क़ीदा क़ारी साह़िब का इन्तिख़ाब करें जो बच्चे को दुरुस्त मख़ारिज से क़ुरआने पाक पढ़ाएं क्यूं कि क़ुरआने पाक इतनी तज्वीद से पढ़ना फ़र्ज़े ऐ़न है कि हर ह़र्फ़ दूसरे से सह़ीह़ मुम्ताज़ हो (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 3, स. 253), इस के साथ साथ वोह क़ारी साह़िब बच्चे की तरबिय्यत में वालिदैन के मुआ़विन भी बनें।

## मद्र-सतुल मदीना :

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के ज़ेरे इन्तिज़ाम अन्दरूने व बैरूने मुल्क ह़िफ़्ज़ व नाज़िरा के हज़ारों मदारिस बनाम ''मद्र-सतुल मदीना'' क़ाइम हैं। जहां बच्चों को क़ुरआने पाक की ता'लीम के साथ साथ उन की अख़्लाक़ी तरबिय्यत पर भी ख़ुसूसी तवज्जोह दी जाती है। सिर्फ़ पाकिस्तान में ता दमे तह़रीर कमो बेश 42,000 म-दनी मुन्ने और म-दनी मुन्नियों को ह़िफ़्ज़ व नाज़िरा की मुफ़्त ता'लीम दी जा रही है। वालिदैन को चाहिये कि अपने बच्चे की बेहतर तरबिय्यत के लिये उसे क़रीबी मद्र-सतुल मदीना में दाख़िल करवाएं।

## सात बरस की उम्र से नमाज़ की ताकीद कीजिये

**जब** बच्चा सात साल का हो जाए तो उसे नमाज़ पढ़ना सिखाएं और उसे पांचों वक़्त की नमाज़ अदा करवाएं ताकि बचपन ही से अदाएगिये नमाज़ की आ़दत पुख़्ता हो। बच्चे को बिल ख़ुसूस सुब्ह़ सवेरे उठने और वुज़ू कर के नमाज़ पढ़ने की आ़दत डालिये। मगर सर्दियों में बच्चे को वुज़ू के लिये नीम गर्म पानी मुहय्या कीजिये ताकि वोह सर्द पानी की मशक़्क़त से घबरा कर वुज़ू और नमाज़ से जी न चुराए। बल्कि वालिद साह़िब को चाहिये कि उसे मस्जिद में अपने साथ ले जाएं लेकिन पहले उसे मस्जिद के आदाब से आगाह कर दें कि मस्जिद में शोर नहीं मचाना, इधर उधर नहीं भागना, नमाज़ियों के आगे से नहीं गुज़रना वग़ैरा। फिर उसे जमाअ़त की सब से आख़िरी सफ़ में दूसरे बच्चों के साथ खड़ा करें। इस ह़िक्मते अ़-मली की बदौलत बच्चे का मस्जिद के साथ रूह़ानी रिश्ता क़ाइम हो जाएगा, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ

शाहे बनी आदम, नबिय्ये मुकर्रम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "बच्चों को सात साल की उ़म्र हो जाने पर नमाज़ सिखाओ और दस साल के हो जाने पर उन्हें नमाज़ के मुआ़-मले पर मारो।"

(سنن ترمذی، ابواب الصلوۃ، باب ماجاء متی یومر الصبی بالصلوۃ، الحدیث ۴۰۷، ج۱، ص۴۱۶)

## नमाज़ के आ़दी :

जब मुह़द्दिसे आ'ज़म ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सरदार अह़मद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه बचपन में चलने फिरने के क़ाबिल हुए तो अपने वालिदे माजिद के हमराह मस्जिद में नमाज़ पढ़ने के लिये जाना शुरूअ़ कर दिया। (ह़याते मुह़द्दिसे आ'ज़म رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه, स. 30)

# रोज़ा रखवाइये

**नमाज़** की त़रह़ बच्चे को रोज़ा रखने का भी आ़दी बनाया जाए। उसे रोज़े की मश्क़ इस त़रह़ करवाई जाए कि पहले उसे चन्द घन्टे भूका रहने का ज़ेह्न दिया जाए फिर ब तदरीज इस दौरानिये को बढ़ाया जाए और जब बच्चा रोज़ा रखने के क़ाबिल हो जाए तो उसे रोज़ा रखवाया जाए। लेकिन उसे बावर करवाया जाए कि महज़ भूक प्यास बरदाश्त करने का नाम रोज़ा नहीं बल्कि रोज़े में हर बुरे काम से बचना चाहिये।

## रोज़ा कुशाई :

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत अश्शाह मौलाना अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की रोज़ा कुशाई की तक़रीब का ह़ाल बयान करते हुए मौलाना सय्यिद अय्यूब अ़ली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं कि : ''र-मज़ानुल मुबारक का मुक़द्दस महीना है और आ'ला ह़ज़रप قُدِّسَ سِرُّهُ الْعَزِيْز के पहले रोज़ा कुशाई की तक़रीब है, काशानए अक़्दस में जहां इफ़्त़ार का और बहुत क़िस्म का सामान है। एक मह़फ़ूज़ कमरे में फ़ीरीनी के पियाले जमाने के लिये चुने हुए थे। आफ़्ताब निस्फ़ुन्नहार पर है ठीक शिद्दत की गर्मी का वक़्त है कि हुज़ूर के वालिदे माजिद आप को उसी कमरे में ले जाते हैं और दरवाज़े के पट बन्द कर के एक पियाला उठा कर देते हैं कि ''इसे खा लो।''

आप अ़र्ज़ करते हैं ''मेरा तो रोज़ा है कैसे खाऊं ?'' इर्शाद होता है ''बच्चों का रोज़ा ऐसा ही होता है, लो खा लो, मैं ने दरवाज़ा बन्द कर दिया है, कोई देखने वाला भी नहीं है।'' आप अ़र्ज़ करते हैं, ''जिस के हुक्म से रोज़ा रखा है, वोह तो देख रहा है।'' येह सुनते ही

हुज़ूर के वालिदे माजिद की चश्माने मुबारक से अश्कों का तार बंध गया और कमरा खोल कर बाहर ले आए।

(ह़याते आ'ला ह़ज़रत, स. 87, मक्तबए न-बविय्या लाहोर)

## दीनी ता'लीम दिलवाइये

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !**

अपनी औलाद को कामिल मुसल्मान बनाने के लिये ज़ेवरे इल्मे दीन से आरास्ता करना बेह़द ज़रूरी है मगर आह ! आज दीनी ता'लीम का रुज्ह़ान न होने के बराबर है। अपने होनहार बच्चों को दुन्यावी उ़लूम व फ़ुनून तो ख़ूब सिखाए जाते हैं मगर सुन्नतें सिखाने की त़रफ़ तवज्जोह नहीं की जाती। अगर बच्चा ज़रा ज़ह़ीन हो तो उस के वालिदैन के दिल में उसे डॉक्टर, इन्जीनियर, प्रोफ़ेसर, कॉम्प्यूटर प्रोग्रामर बनाने की ख़्वाहिश अंगड़ाइयां लेने लगती है और इस ख़्वाहिश की तक्मील के लिये उस की दीनी तरबिय्यत से मुंह मोड़ कर मग़रिबी तहज़ीब के नुमायन्दा इदारों के मख़्लूत़ माह़ोल में ता'लीम दिलवाने में कोई आ़र महसूस नहीं की जाती बल्कि उसे ''आ'ला ता'लीम'' की ख़ातिर कुफ़्फ़ार के ह़वाले करने से भी दरेग़ नहीं किया जाता। और अगर बच्चा कुन्द ज़ेह्न है या शरारती है या मा'ज़ूर है तो जान छुड़ाने के लिये उसे किसी दारुल उ़लूम या जामिआ़ में दाख़िला दिला दिया जाता है।

बज़ाहिर इस की वजह येही नज़र आती है कि वालिदैन की अक्सरिय्यत का मत़मह़े नज़र मह्ज़ दुन्यावी मालो जाह होती है, उख़्रवी मरातिब का हुसूल उन के पेशे नज़र नहीं होता। वालिदैन को चाहिये कि पहले अपनी औलाद को ज़रूरी दीनी ता'लीम दिलवाएं उसे कम अज़ कम नमाज़ व रोज़ा के मसाइल, दीगर फ़राइज़ व वाजिबात, ह़लाल व ह़राम, ख़रीदो फ़रोख़्त, इजारा (या'नी उजरत पर ख़िदमत लेने या देने), हुक़ूक़ुल इ़बाद वग़ैरा के शर-ई अह़काम सिखा दिये जाएं।

इस के बा'द चाहें तो वोह दुन्यावी ता'लीम जिस से अह़कामे शरइय्या की ख़िलाफ़ वर्ज़ी लाज़िम न आती हो, भी दिलाएं लेकिन बेहतर येही है कि उसे दर्से निज़ामी (या'नी आ़लिम कोर्स) करवाएं ताकि वोह आ़लिम बनने के बा'द मुआ़-शरे में लाइ़के तक़्लीद किरदार का मालिक बने और दूसरों को इ़ल्मे दीन भी सिखाए। बत़ौरे तरग़ीब इ़ल्मे दीन सीखने के चन्द फ़ज़ाइल मुला-ह़ज़ा हों :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि मैं ने सरकारे मदीना, फ़ैज़ गन्जीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि : "जो इ़ल्म की तलाश में किसी रास्ते पर चलता है तो अल्लाह तआ़ला उस के लिये जन्नत का रास्ता आसान फ़रमा देता है और बेशक फ़िरिश्ते त़ालिबुल इ़ल्म के अ़मल से ख़ुश हो कर उस के लिये अपने बाज़ू बिछा देते हैं और बेशक ज़मीन व आस्मान में रहने वाले ह़त्ता कि पानी की मछलियां त़ालिबे इ़ल्म के लिये इस्तिग़फ़ार करती हैं और आ़लिम की फ़ज़ीलत आ़बिद पर ऐसी है जैसी चौदहवीं रात के चांद की दीगर सितारों पर और बेशक उ़-लमा वारिसे अम्बिया عَلَیْہِمُ السَّلَام हैं और अम्बिया عَلَیْہِمُ السَّلَام दिरहमो दीनार का वारिस नहीं बनाते बल्कि येह नुफ़ूसे क़ुदसिय्या तो सिर्फ़ इ़ल्म का वारिस बनाते हैं तो जिस ने इसे ह़ासिल कर लिया उस ने बड़ा ह़िस्सा ह़ासिल कर लिया।"

(سنن ابن ماجہ، کتاب السنۃ، باب فضل العلماء والحث علی طلب العلم، الحدیث ۲۲۳، ج ۱، ص ۱۴۵)

त़-बरानी शरीफ़ में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم से रिवायत है कि प्यारे मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो बन्दा इ़ल्म की जुस्त-जू में जूते या मोज़े या कपड़े पहनता है, अपने घर की चोखट से निकलते ही उस के गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाते हैं।" (المعجم الاوسط، باب المیم، الحدیث ۵۷۲۲، ج ۴، ص ۲۰۴)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि सरकारे मदीना, सुरूरे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अपनी मस्जिद में दो मजलिसों के पास से गुज़रे तो फ़रमाया : "येह दोनों भलाई पर हैं मगर एक मजलिस दूसरी से बेहतर है, एक मजलिस के लोग अल्लाह तआ़ला से दुआ़ कर रहे हैं, उस की त़रफ़ राग़िब हैं, अगर चाहे इन्हें दे चाहे न दे। और दूसरी मजलिस के लोग ख़ुद भी फ़िक़्ह और इ़ल्म सीख रहे हैं और न जानने वालों को सिखा भी रहे हैं, येही अफ़्ज़ल हैं, मैं मुअ़ल्लिम ही बना कर भेजा गया हूं।" फिर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم उन्ही में तशरीफ़ फ़रमा हुए।

(سنن الدارمی، المقدمۃ، باب فی فضل العلم، الحدیث ۳۴۹، ج ۱، ص ۱۱۱)

## उस्ताज़ का इन्तिख़ाब :

इन शफ़्फ़ाफ़ आईनों में तक़्वा व परहेज़ गारी की नक़्श निगारी करने और शैत़ान की कारीगरी से मह़फ़ूज़ रखने के लिये ज़रूरी है कि बच्चों की ता'लीम के लिये ऐसा उस्ताज़ तलाश किया जाए जो ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ और इ़श्क़े रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का पैकर हो। मगर अफ़्सोस ! कि फ़ी ज़माना येह अहम इन्तिख़ाब भी दुन्यावी तक़ाज़ों और सहूलतों की भेंट चढ़ा दिया जाता है। तारीख़ गवाह है कि इस्लामी दुन्या में जितने भी ला'लो जवाहिर पैदा हुए उन की ता'लीमो तरबिय्यत ख़ुदा तर्स और शरीफ़ुन्नफ़्स उ़-लमा व असातिज़ा के हाथों हुई।

ह़दीस में है "बेशक येह इ़ल्मे दीन है तुम में से हर शख़्स देख ले कि वोह किस से दीन ह़ासिल कर रहा है।"

(کنز العمال، کتاب العلم، الباب الثالث فی آداب العلم، الحدیث ۲۹۲۶۰، ج ۱۰، ص ۱۰۵)

## जामिअ़तुल मदीना :

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! दा'वते इस्लामी के ज़ेरे इन्तिज़ाम कसीर जामिआ़त बनाम ''जामिअ़तुल मदीना'' क़ाइम हैं। इन के ज़रीए़ ला ता'दाद इस्लामी भाइयों को (ह़स्बे ज़रूरत क़ियाम व त़आ़म की सहूलत के साथ) दर्से निज़ामी (या'नी आ़लिम कोर्स) और इस्लामी बहनों को ''आ़लिमा कोर्स'' की मुफ़्त ता'लीम दी जाती है। इस के साथ साथ जामिआ़त में ऐसा म-दनी माह़ोल फ़राहम करने की कोशिश की जाती है कि यहां से पढ़ने वाले इ़ल्मो अ़मल का पैकर बन कर निकलें। आप भी अपनी औलाद को इ़ल्मो अ़मल सिखाने के लिये जामिअ़तुल मदीना में ता'लीम दिलवाइये।

## शौक़े इ़ल्म :

इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत अश्शाह मौलाना अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن की हमशीरा का बयान है कि ''आ'ला ह़ज़रत ने (बचपन में) कभी पढ़ने में ज़िद नहीं की, ख़ुद से बराबर पढ़ने को तशरीफ़ ले जाया करते। जुमुआ़ के दिन भी चाहा कि पढ़ने जाएं मगर वालिद साह़िब के मन्अ़ फ़रमाने से रुक गए।''

(ह़यातेआ'ला ह़ज़रत, जि. 1, स. 89)

## आदाब सिखाइये

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन समुरह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रिवायत करते हैं कि हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''इन्सान का अपने बच्चे को अदब सिखाना एक साअ़ स-दक़ा करने से बेहतर है।''

(سنن الترمذی، کتاب البر والصلۃ، باب ماجاء فی ادب الولد، الحدیث ۱۹۵۸، ج ۳، ص ۳۸۲)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : "किसी बाप ने अपने बेटे को अच्छा अदब सिखाने से बढ़ कर कोई अ़त़िय्या नहीं दिया।" (سنن الترمذی، کتاب البر والصلۃ، باب ماجاء فی ادب الولد، الحدیث ۱۹۵۹، ج ۳، ص ۳۸۳)

वालिदैन को चाहिये कि अपने बच्चे को मुख़्तलिफ़ आदाब सिखाएं, ब ग़-रज़े सहूलत यहां चन्द उमूर का बयान किया जा रहा है।

## खाने के आदाब :

खाना अल्लाह तआ़ला की बहुत लज़ीज़ ने'मत है। अगर सुन्नते रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के मुत़ाबिक़ खाना खाया जाए तो हमें पेट भरने के साथ साथ सवाब भी ह़ासिल होगा। इस लिये वालिदैन को चाहिये कि अपनी औलाद को सुन्नत के मुत़ाबिक़ खाना खाने की आ़दत डालें। इस सिल्सिले में उन का ज़ेहन बनाएं कि

(1) हर खाने से पहले अपने हाथ पहुंचों तक धो लें। ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रिवायत करते हैं कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो येह पसन्द करे कि अल्लाह तआ़ला उस के घर में ब-र-कत ज़ियादा करे तो उसे चाहिये कि जब खाना ह़ाज़िर किया जाए तो वुज़ू करे और जब उठाया जाए तब भी वुज़ू करे।"

(سنن ابن ماجہ، کتاب الاطعمہ، باب الوضوء عند الطعام، الحدیث ۳۲۶۰، ج ۴، ص ۹)

ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی लिखते हैं : इस (या'नी खाने के वुज़ू) के मा'ना हैं हाथ व मुंह की सफ़ाई करना कि हाथ धोना कुल्ली कर लेना। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 32)

(2) जब भी खाना खाएं तो बैठ कर खाएं कि येह सुन्नत है। बैठने का त़रीक़ा येह है कि उल्टा पाउं बिछा दें और सीधा खड़ा रखें या सुरीन पर बैठ जाएं और दोनों घुटने खड़े रखें या दो ज़ानू बैठें। (तीनों में से जिस त़रह़ भी बैठेंगे सुन्नत अदा हो जाएगी)

(اشعۃ اللمعات، کتاب الاطعمۃ، فصل ۱، ج ۳، ص ۵۱۸)

(3) खाने से पहले जूते उतार लें। ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे मदीना, फ़ैज़ गन्जीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जब खाना खाने बैठो तो जूते उतार लो, इस में तुम्हारे क़दमों के लिये राह़त है।"

(سنن الدارمی، کتاب الاطعمۃ، باب فی خلع النعال عند الاکل، الحدیث ۲۰۸۰، ج ۲، ص ۱۴۸)

(4) खाने से पहले بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ पढ़ लें। ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जिस खाने पर बिस्मिल्लाह न पढ़ी जाए उस खाने को शैत़ान अपने लिये ह़लाल समझता है।"

(صحیح مسلم، کتاب الاشربۃ، باب آداب الطعام...الخ، الحدیث ۲۰۱۷، ص ۱۱۱۶)

ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जब तुम में से कोई खाना खाए तो उसे चाहिये कि पहले बिस्मिल्लाह पढ़े। अगर शुरूअ़ में बिस्मिल्लाह पढ़ना भूल जाए तो येह कहे بِسۡمِ اللّٰہِ اَوَّلَہٗ وَاٰخِرَہٗ।"

(سنن ابی داود، کتاب الاطعمۃ، باب التسمیۃ عند الطعام، الحدیث ۳۷۶۷، ج ۳، ص ۴۸۷)

(5) खाने से पहले येह दुआ़ पढ़ ली जाए तो अगर खाने में ज़ह्र भी होगा तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ असर नहीं करेगा,

بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِیْ لَا یَضُرُّ مَعَ اسْمِهٖ شَیْءٌ فِی الْعَرْضِ وَلَا فِی السَّمَاءِ یَا حَیُّ یَا قَیُّوْمُ

या'नी अल्लाह के नाम से शुरूअ़ करता हूं जिस के नाम की ब-र-कत से ज़मीन व आस्मान की कोई चीज़ नुक़्सान नहीं पहुंचा सकती। ऐ हमेशा से ज़िन्दा व क़ाइम रहने वाले।" (فردوس الاخبار، الحدیث ۱۹۵۵، ج۱، ص۲۷۴)

(6) सीधे हाथ से खाएं। हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़-ज़मत निशान है : "जब तुम में से कोई खाना खाए तो सीधे हाथ से खाए और जब पिये तो सीधे हाथ से पिये कि शैतान उल्टे हाथ से खाता पीता है।"

(صحیح مسلم، کتاب الاشربۃ، باب آداب الطعام والشرب، الحدیث ۲۰۲۰، ص۱۱۱۷)

(7) अपने सामने से खाएं। ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "हर शख़्स बरतन की उसी जानिब से खाए जो उस के सामने हो।"

(صحیح البخاری، کتاب الاطعمۃ، باب الاکل مما یلیہ، الحدیث ۵۳۷۷، ج۳، ص۵۲۱)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू स-लमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि एक रोज़ खाना खाते हुए मेरा हाथ पियाले में इधर उधर ह़-र-कत कर रहा था या'नी कभी एक त़रफ़ से लुक़्मा उठाया कभी दूसरी त़रफ़ से और कभी तीसरी त़रफ़ से लुक़्मा उठाया। जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे इस त़रह़ करते हुए देखा तो फ़रमाया : "ऐ लड़के! बिस्मिल्लाह पढ़ कर दाएं हाथ से खाया करो और अपने सामने से खाया करो।"

चुनान्चे इस के बा'द से मेरे खाने का त़रीक़ा येही हो गया।

(صحیح البخاری، کتاب الاطعمۃ، باب التسمیۃ علی الطعام والاکل بالیمین، الحدیث ۵۳۷۶، ج ۳، ص ۵۲۱)

(8) खाने में किसी क़िस्म का ऐ़ब न लगाएं म-सलन येह न कहें कि मज़ेदार नहीं, कच्चा रह गया है, फीका रह गया क्यूं कि खाने में ऐ़ब निकालना मक्रूह व ख़िलाफ़े सुन्नत है और अगर इस की वजह से खाना पकाने वाले या मेज़बान की दिल आज़ारी हो जाए तो मम्नूअ़ है। बल्कि जी चाहे तो खाएं वरना हाथ रोक लें। ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने कभी किसी खाने को ऐ़ब नहीं लगाया (या'नी बुरा नहीं कहा) अगर ख़्वाहिश होती तो खा लेते और ख़्वाहिश न होती तो छोड़ देते।

(صحیح البخاری، کتاب الاطعمۃ، باب ماعاب النبی ﷺ طعاماً، الحدیث ۵۴۰۹، ج ۳، ص ۵۳۱)

इमामे अहले सुन्नत अश्शाह मौलाना अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن लिखते हैं : ''खाने में ऐ़ब निकालना अपने घर में भी न चाहिये, मक्रूह व ख़िलाफ़े सुन्नत है। (सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की) आ़दते करीमा येह थी कि पसन्द आया तो तनावुल फ़रमा लिया वरना नहीं। (रहा) पराए घर में ऐ़ब निकालना तो (इस में) मुसल्मानों की दिल शिकनी है और कमाले ह़िर्स व बे मुरुव्वती पर दलील है। ''घी कम है या मज़े का नहीं'' येह ऐ़ब निकालना है और अगर कोई शै उसे मुज़िर (नुक़्सान देती) है, उसे न खाने के लिये उ़ज़्र किया, इस का इज़्हार किया न (कि) बत़ौरे त़ा'न व ऐ़ब म-सलन इस में मिर्च ज़ाइद है (और) इतनी मिर्च का येह आ़दी नहीं तो येह ऐ़ब निकालना नहीं और इतना भी (उस वक़्त है कि जब) बे तकल्लुफ़ी ख़ास जगह की हो और इस के सबब दा'वत कुनिन्दा (या'नी मेज़बान) को

और तक्लीफ़ न करनी पड़े म-सलन दो क़िस्म का सालन है, एक में मिर्च ज़ाइद है और येह आ़दी नहीं तो उसे न खाए और वजह पूछी जाए तो बता दे। और अगर एक ही क़िस्म का खाना है, अब अगर (येह) नहीं खाता तो दा'वत कुनिन्दा (या'नी मेज़बान) को उस के लिये कुछ और मंगाना पड़ेगा, उसे नदामत होगी और तंगदस्त है तो तक्लीफ़ होगी तो ऐसी ह़ालत में मुरुव्वत येह है कि सब्र करे और खाए और अपनी अज़िय्यत ज़ाहिर न करे।" وَاللّٰہُ تَعَالٰی اَعْلَم (फ़तावा र-ज़विय्यह, जि. 21, स. 652)

## मस्अला :

बा'ज़ बच्चे मिट्टी खाते हैं। बहारे शरीअ़त में है : "मिट्टी ह़द्दे ज़रर तक (या'नी नुक़्सान देह मिक़्दार में) खाना ह़राम है।"

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 63)

## पीने के आदाब :

इस सिल्सिले में उन का ज़ेह्न बनाएं कि पानी बैठ कर, उजाले में देख कर, सीधे हाथ से बिस्मिल्लाह पढ़ कर तीन सांसों में इस त़रह़ पियें कि हर मरतबा गिलास को मुंह से हटा कर सांस लें, पहली और दूसरी बार एक एक घूंट पियें और तीसरी सांस में जितना चाहें पियें। ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ऊंट की त़रह़ एक ही घूंट में न पी जाया करो बल्कि दो और तीन बार पिया करो और जब पीने लगो तो बिस्मिल्लाह पढ़ा करो और जब पी चुको तो اَلْحَمْدُ لِلّٰہ कहा करो।"

(جامع الترمذی، کتاب الاشربۃ، باب ماجاء فی التنفس فی الاناء، الحدیث ۱۸۹۲، ج ۳، ص ۳۵۲)

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे मदीना, फ़ैज़ गन्जीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पीने में तीन बार सांस लेते थे और फ़रमाते थे : ''इस त़रह़ पीने में ज़ियादा सैराबी होती है और सिह़्ह़त के लिये मुफ़ीद व ख़ुश गवार है।''

(صحیح مسلم، کتاب الاشربہ، باب کراھۃ التنفس...الخ، الحدیث ۲۰۲۸، ص ۱۱۲۰)

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने बरतन में सांस लेने और फूंकने से मन्अ़ फ़रमाया है।

(سنن ابی داود، کتاب الاشربۃ باب فی النفخ فی الشراب، الحدیث ۳۷۲۸، ج ۳، ص ۴۷۴)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सई़द ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे मदीना, फ़ैज़ गन्जीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने खड़े हो कर पानी पीने से मन्अ़ फ़रमाया है।

(صحیح مسلم، کتاب الاشربۃ، باب کراھیۃ الشرب قائماً، الحدیث ۲۰۲۵، ص ۱۱۱۹)

## चलने के आदाब :

इस सिल्सिले में इन का ज़ेह्न बनाएं कि

(1) अगर कोई रुकावट न हो तो दरमियानी रफ़्तार से रास्ते के किनारे किनारे चलें, न इतना तेज़ कि लोगों की निगाहें आप पर जम जाएं और न इतना आहिस्ता कि आप बीमार मह़सूस हों।

(2) लफ़ंगों की त़रह़ गिरीबान खोल कर अकड़ते हुए हरगिज़ न चलें कि येह अह़मक़ों और मग़रूरों की चाल है बल्कि नीची नज़रें किये पुर वक़ार त़रीक़े पर चलें। ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि जब हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم चलते तो झुके हुए मा'लूम होते थे।

(سنن ابی داود، کتاب الادب، باب فی ھدی الرجل، الحدیث ۴۸۶۳، ج ۴، ص ۳۳۸)

(3) राह चलने में बिला ज़रूरत बार बार इधर उधर देखने से बचें और सड़क उ़बूर करते वक़्त गाड़ियों वाली सम्त देख कर सड़क उ़बूर करें। अगर गाड़ी आ रही हो तो सड़क की त़रफ़ बे तह़ाशा भाग न पड़ें बल्कि किनारे पर ही रुक जाएं कि इस में ह़िफ़ाज़त का ज़ियादा इम्कान है।

## लिबास पहनने के आदाब :

इस सिल्सिले में उन का ज़ेह्न बनाएं कि

(1) सफ़ेद लिबास हर लिबास से बेहतर है कि ह़दीस शरीफ़ में इस की ता'रीफ़ आई है। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना समुरह رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "सफ़ेद कपड़े पहना करो कि वोह बहुत पाकीज़ा और पसन्दीदा हैं।"

(جامع الترمذی، کتاب الادب، باب ماجاء فی لبس البیاض، الحدیث ۲۸۱۹، ج ۴، ص ۳۷۰)

(2) जब कपड़ा पहनने लगें तो येह दुआ़ पढ़ें, अगले पिछले गुनाह मुआ़फ़ हो जाएंगे।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الَّذِیْ کَسَانِیْ ھٰذَا وَرَزَقَنِیْہِ مِنْ غَیْرِ حَوْلٍ مِّنِّیْ وَلَا قُوَّۃٍ

तरजमा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र है जिस ने मुझे येह पहनाया और बिग़ैर मेरी कुव्वत व त़ाक़त के मुझे येह अ़त़ा किया।

(المستدرک، کتاب اللباس، باب الدعاء عند فراغ الطعام، الحدیث ۷۴۸۶، ج ۵، ص ۲۷۰)

(3) पहनते वक़्त सीधी त़रफ़ से शुरूअ़ करें म-सलन जब कुरता पहनें तो पहले सीधी आस्तीन में सीधा हाथ दाख़िल करें फिर उल्टी में, इसी त़रह़ पाजामा में पहले सीधे पाइंचे में सीधा पाउं दाख़िल करें और जब उतारने लगें तो इस के बर अ़क्स करें या'नी उल्टी त़रफ़ से

शुरूअ़ करें। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि सरकारे मदीना, फ़ैज़ गन्जीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم जब कुरता पहनते तो दाहिनी त़रफ़ से शुरूअ़ फ़रमाते।

(جامع الترمذی، کتاب اللباس، باب ماجاء فی القمص، الحدیث۱۷۷۲، ج۳،ص۲۹۷)

(4) पहले कुरता पहनें फिर पाजामा।

(5) नया कपड़ा जुमुआ़ के दिन पहनना शुरूअ़ करें कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم आ़म तौ़र पर नया कपड़ा जुमुआ़ के दिन पहना करते थे। (الجامع الصغیر، ج۲،ص۴۰۸)

(6) अपने म-दनी मुन्ने को इ़मामा बांधने की आ़दत डालिये कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के प्यारे मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''इ़मामा ज़रूर बांधा करो कि येह फ़िरिश्तों का निशान है और इस (के शिम्ले) को पीठ के पीछे लटका लो।''

(شعب الایمان، باب فی الملابس والاوانی، فصل فی العمائم، الحدیث۶۲۶۲، ج۵،ص۱۷۶)

इ़मामे के साथ दो रक्अ़तें बिग़ैर इ़मामे की सत्तर रक्अ़तों से अफ़्ज़ल हैं। (فردوس الاخبار، الحدیث۳۰۵۴، ج۱،ص۴۱۰)

**बेटे** और बेटी के **लिबास** में फ़र्क़ रखिये कि बेटे को मर्दाना और बेटी को ज़नाना लिबास ही पहनाइये और जब बच्चे बालिग़ हो जाएं तो उन्हें ऐसा लिबास न पहनने दिया जाए जिस से सित्र पोशी न होती हो। ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी है कि अस्मा बिन्ते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا बारीक कपड़े पहन कर सरकारे मदीना, फ़ैज़ गन्जीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم

के सामने आईं तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुंह फैर लिया और फ़रमाया : ''ऐ अस्मा ! औरत जब बालिग़ हो जाए तो उस के बदन का कोई हिस्सा दिखाई न देना चाहिये सिवाए इस के।'' फिर अपने मुंह और हथेलियों की त़रफ़ इशारा फ़रमाया।

(سنن ابی داوٗد، کتاب اللباس، باب فیما تبدی...الخ، الحدیث ۴۱۰۴، ج۴، ص۸۵)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्क़मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अपनी वालिदा से रिवायत करते हैं कि ह़ज़रते ह़फ़्सा बिन्ते अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुईं। उन्हों ने एक बारीक दुपट्टा ओढ़ा हुवा था। ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने उसे फाड़ दिया और उन्हें मोटा दुपट्टा ओढ़ा दिया।

(مؤطا امام مالک، کتاب اللباس باب ما یکرہ للنساء...الخ، الحدیث ۱۷۳۹ ج۲، ص۴۱۰)

**बच्चियों** को पर्दे की आ़दत डालने के लिये इन्हें बचपन से ही स्कार्फ़ ओढ़ने की तरबिय्यत दीजिये। थोड़ी बड़ी हुई तो छोटा सा बुरक़अ़ बनवा दीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ बच्ची पर्दे की आ़दी हो जाएगी।

## मस्अला :

लड़कियों के कान नाक छेदना जाइज़ है। बा'ज़ लोग लड़कों के कान भी छिदवाते हैं और इन के कान में बाली पहनाते हैं, येह ना जाइज़ है। (माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 16, स. 207)

## मस्अला :

लड़के को ज़ेवर पहनना ह़राम है।

(फ़तावा र-ज़विय्या जदीद, जि. 23, स. 260)

## जूता पहनने के आदाब :

इस सिल्सिले में उन का ज़ेहन बनाएं कि

(1) किसी भी रंग का जूता पहनना अगर्चे जाइज़ है लेकिन पीले रंग के जूते पहनना बेहतर है कि मौला मुश्किल कुशा अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं जो पीले जूते पहनेगा उस की फ़िक्रों में कमी होगी। (تفسیر نسفی، پ۱، البقرہ، تحت آیۃ ۶۹، ص۵۸: روح المعانی، پ۱، البقرہ، تحت آیۃ ۶۹، ج۱، ص۳۹۲)

(2) पहले सीधा जूता पहनें फिर उल्टा और उतारते वक़्त पहले उल्टा जूता उतारें फिर सीधा। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''(कोई शख़्स) जब जूता पहने तो पहले दाहिने पाउं में पहने और जब उतारे तो पहले बाएं पाउं का उतारे।''

(صحیح مسلم، کتاب اللباس والزینۃ، باب استحباب لبس النعل...الخ، الحدیث ۲۰۹۷، ص۱۱۶۱)

(3) जूता पहनने से पहले झाड़ लें ताकि कीड़ा या कंकर वग़ैरा हो तो निकल जाए।

(4) इस्ति'माली जूता उठाने के लिये उल्टे हाथ का अंगूठा और बराबर वाली उंगली इस्ति'माल करें।

(5) इस्ति'माली जूता उल्टा पड़ा हो तो सीधा कर दीजिये वरना फ़क़्र व तंगदस्ती का अन्देशा है।

(सुन्नी बिहिश्ती ज़ेवर, ह़िस्सए पन्जुम, अस्बाबे फ़क़्र व तंगदस्ती, स. 201)

## नाख़ुन काटने के आदाब :

इस सिल्सिले में उन का ज़ेहन बनाएं कि

(1) दांत से नाख़ुन नहीं काटना चाहिये कि मक्रूह है।

(الفتاوی الھندیۃ، کتاب الکراھیۃ، الباب التاسع عشر فی الختان...الخ، ج۵، ص۳۵۸)

(2) नाख़ुन इस त़रह़ तराशें कि दाहिने हाथ की कलिमे की उंगली से शुरूअ़ करे और छोटी उंगली पर ख़त्म करे फिर बाएं हाथ की छोटी उंगली से शुरूअ़ कर के अंगूठे पर ख़त्म करे फिर दाहिने हाथ के अंगूठे का नाख़ुन तराशे। (الدر المختار، کتاب الحظر والاباحۃ، فصل فی البیع، ج۹، ص۶۷۰)

(3) नाख़ुन तराश लेने के बा'द उंग्लियों के पोरे धो लेने चाहिएं।

## बाल संवारने के आदाब :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जिस के बाल हों तो वोह इन का इक्राम करे या'नी इन को धोए, तेल लगाए, कंघा करे।"

(سنن ابی داود، کتاب الترجل، باب فی اصلاح الشعر، الحدیث ۴۱۶۳، ج۴، ص۱۰۳)

(1) मर्द को इख़्तियार है कि पूरे बाल रखे या ह़ल्क़ करवाए। पूरे बाल इस त़रह़ कि आधे कान के बराबर या कानों की लौ के बराबर बाल रखे या इतने बड़े रखे कि शानों को छू लें और बीच सर में मांग निकाले। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 16, स. 198)

(2) सर में तेल डालने से पहले بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ पढ़ लें। फिर उल्टे हाथ की हथेली में थोड़ा सा तेल डालें और पहले सीधी आंख के अब्रू पर तेल लगाएं फिर उल्टी पर, इस के बा'द सीधी आंख की पलक पर फिर उल्टी पर फिर بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ कह कर सर में पेशानी की त़रफ़ से तेल डालना शुरूअ़ करें। सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم जब तेल लगाते तो उल्टे हाथ की

हथेली पर डालते और पहले अब्रू पर तेल लगाते फिर पलकों पर, फिर अपने सर मुबारक पर तेल लगाते। (وسائل الوصول الی شمائل الرسول ﷺ، الفصل الثالث، ص ۸۱)

हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो भी अहम काम بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ के साथ शुरूअ़ नहीं किया जाता वोह अधूरा और ना मुकम्मल रह जाता है।"

(الجامع الصغیر، الحدیث ۶۲۴۸، ص ۳۹۱)

सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़–लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم वुज़ू करने में और कंघा करने में और ना'लैने शरीफ़ैन पहनने में दाईं जानिब को पसन्द फ़रमाते।

(وسائل الوصول الی شمائل الرسول ﷺ، الفصل الثالث، ص ۸۱)

## मुलाक़ात के आदाब :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "क्या मैं तुम को ऐसी बात न बताऊं कि जब तुम इस पर अ़मल करो तो तुम्हारे दरमियान मह़ब्बत बढ़े और वोह येह है कि आपस में सलाम को रवाज दो।"

(صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب بیان ان لا یدخل الجنۃ ... الخ، الحدیث ۵۴، ص ۴۷)

ह़ज़रते सय्यिदुना बराअ बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "सलाम को आ़म करो सलामती पा लोगे।"

(الاحسان بترتیب ابن حبان، کتاب البر والاحسان، باب افشاء السلام واطعام الطعام، الحدیث ۴۹۱، ج ۱، ص ۳۵۷)

(1) जब किसी इस्लामी भाई से मुलाक़ात हो तो उसे जानते हों या न जानते हों, सलाम करें। (बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 16, स. 88)

(2) सलाम के बेहतरीन अल्फ़ाज़ येह हैं : اَلسَّلَامُ عَلَيْكُم وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُه लेकिन अगर फ़क़त अस्सलामु अ़लैकुम कहा तब भी दुरुस्त है। इस के जवाब में وَ عَلَيْكُمُ السَّلَامُ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُه कहें, अगर सिर्फ़ وَ عَلَيْكُمُ السَّلَام कहा तो भी जवाब हो गया।

(الفتاوىٰ الہندیہ، کتاب الکراہیۃ، الباب السابع فی السلام، ج۵، ص۳۲۴، وفتاوىٰ رضویہ، ج۲۲، ص۳۳۲، ۳۰۹)

इमामे अहले सुन्नत अश्शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن बचपन में एक मौलवी साह़िब के पास पढ़ा करते थे। एक रोज़ मौलवी मौसूफ़ ह़स्बे मा'मूल पढ़ा रहे थे कि एक बच्चे ने उन्हें सलाम किया, मौलवी साह़िब ने जवाब दिया ''जीते रहो।'' इस पर आप ने अ़र्ज़ की ''येह तो सलाम का जवाब न हुवा, وَ عَلَيْكُمُ السَّلَام कहना चाहिये था।'' मौलवी साह़िब सुन कर बहुत ख़ुश हुए और बहुत दुआ़एं दीं।

(ह़यातेआ'ला ह़ज़रत, जि. 1, स. 87)

(3) सलाम करना सुन्नत और इस का जवाब फ़ौरन देना वाजिब है अगर बिला उ़ज़्र ताख़ीर की तो गुनहगार होगा।

(الدرالمختار وردالمحتار، کتاب الحظر والاباحۃ، فصل فی البیع، ج۹، ص۶۸۳؛ بہارِ شریعت، حصہ۱۶، ص۸۸، ۸۹)

(4) सलाम इतनी आवाज़ से कहे कि जिस को सलाम किया है वोह सुन ले और अगर इतनी आवाज़ न हो तो जवाब देना वाजिब नहीं, जवाबे सलाम में भी इतनी आवाज़ हो कि सलाम करने वाला सुन ले और इतना आहिस्ता कहा कि वोह सुन न सका तो वाजिब साक़ित न हुवा।

(فتاوىٰ بزازیہ، کتاب الکراہیۃ، نوع فی السلام، ج۶، ص۳۵۵)

(5) सलाम करने वाले के लिये चाहिये कि सलाम करते वक़्त दिल में येह निय्यत करे कि इस का माल इस की इ़ज़्ज़त इस की आबरू सब कुछ मेरी ह़िफ़ाज़त में है और मैं इन में से किसी चीज़ में दख़्ल अन्दाज़ी करना ह़राम जानता हूं। (ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحۃ، فصل فی البیع، ج۹، ص۶۸۲ ملخصاً)

(6) बहारे शरीअ़त (हिस्सा : 16 स. 92) में है कि उंग्लियों या हथेलियों से सलाम करना मम्नूअ़ है । ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन शुऐ़ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि सरकारे मदीना, फ़ैज़ गन्जीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो शख़्स ग़ैरों की मुशा-बहत करे वोह हम में से नहीं है, यहूदो नसारा की मुशा-बहत न करो, यहूदियों का सलाम उंग्लियों के इशारे से है और नसारा का सलाम हथेलियों से है ।"

(جامع الترمذی، کتاب الاستئذان والاداب، باب ماجاء فی کراھیۃ اشارۃ الید بالسلام، الحدیث ۲۷۰۴، ج۴، ص۳۱۹)

(7) सलाम में पहल कीजिये । नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ की गई : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! जब दो शख़्स मुलाक़ात करें तो पहले कौन सलाम करे ?" फ़रमाया : "पहले सलाम करने वाला अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के ज़ियादा क़रीब होता है ।"

(جامع الترمذی، کتاب الاستئذان والاداب، باب ماجاء فی فضل الذی یبدا بالسلام، الحدیث ۲۷۰۳، ج۴، ص۳۱۸)

ह़ज़रते मौलाना सय्यिद अय्यूब अ़ली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْقَوِی का बयान है कि "कोहे भवाली से मेरी त़-लबी फ़रमाई जाती है, मैं ब हमराही शहज़ादए असग़र ह़ज़रते मौलाना मौलवी शाह मुह़म्मद मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ां साहि़ब مَدَّظِلُّہُ الْقُدُس बा'दे मग़रिब वहां पहुंचता हूं, शहज़ादा मम्दूह़ अन्दर मकान में जाते हुए येह फ़रमाते हैं "अभी हुज़ूर को आप के आने की इत्तिलाअ़ करता हूं ।" मगर बा वुजूद इस आगाही के कि हुज़ूर (या'नी इमामे अहले सुन्नत अश्शाह मौलाना अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن) तशरीफ़ लाने वाले हैं, तक़्दीमे सलाम सरकार ही फ़रमाते हैं, उस वक़्त देखता हूं कि हुज़ूर बिल्कुल मेरे पास जल्वा फ़रमा हैं ।" (ह़याते आ'ला ह़ज़रत, जि. 1, स. 96)

(8) गर्म जोशी से सलाम करने में ज़ियादा सवाब है, ह़ज़रते ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''तुम्हारा लोगों को गर्म जोशी से सलाम करना भी स-दक़ा है।''

(شعب الایمان، باب فی حسن الخلق، فصل فی طلاقۃ الوجہ، الحدیث۸۰۵۳، ج۶، ص۲۵۳)

(9) इन को सलाम न करें, तिलावत व ज़िक्रो दुरूद में मश्ग़ूल होने वाला, नमाज़ के इन्तिज़ार में बैठने वाला, दर्सो तदरीस या इ़ल्मी गुफ़्त-गू या सबक़ की तक्रार में मसरूफ़ होने वाला, खाना खाने वाला, ग़ुस्ल खाने में बरह्ना नहाने वाला, इस्तिन्जा करने वाला।

(माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 16, स. 90,91)

(10) अगर किसी ने कहा कि फ़ुलां ने आप को सलाम कहा है तो अगर सलाम लाने और भेजने वाला दोनों मर्द हों तो जवाब में यूं कहें عَلَيْكَ وَعَلَيْهِ السَّلَام, अगर दोनों औ़रतें हों तो जवाब में यूं कहें عَلَيْكِ وَعَلَيْهَا السَّلَام, अगर पहुंचाने वाला मर्द और भेजने वाली औ़रत हो तो जवाब में यूं कहें عَلَيْكَ وَعَلَيْهَا السَّلَام, अगर पहुंचाने वाली औ़रत और भेजने वाला मर्द हो तो जवाब में यूं कहें عَلَيْكِ وَعَلَيْهِ السَّلَام

(11) ख़त़ में सलाम लिखा होता है उस का भी जवाब देना वाजिब है इस की दो सूरतें हैं, एक तो येह कि ज़बान से जवाब दे और दूसरा येह कि सलाम का जवाब लिख कर भेज दे लेकिन चूंकि जवाबे सलाम फ़ौरन देना वाजिब है और ख़त़ का जवाब देने में कुछ न कुछ ताख़ीर हो ही जाती है लिहाज़ा फ़ौरन ज़बान से सलाम का जवाब दे दे। आ'ला ह़ज़रत قُدِّسَ سِرُّہٗ जब ख़त़ पढ़ा करते तो ख़त़ में जो **اَلسَّلَامُ عَلَيْكُم** लिखा होता, उस का जवाब ज़बान से दे कर बा'द का मज़्मून पढ़ते।

(الدرالمختار وردالمحتار، کتاب الحظر و الاباحۃ، فصل فی البیع، ج۹، ص۶۸۵ : बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 16, स. 92)

(12) रास्ते में चलते हुए दो आदमियों के बीच में कोई चीज़ ह़ाइल हो जाए तो दोबारा मुलाक़ात पर फिर सलाम कीजिये। ह़ज़रते अबू हुरैरह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूर ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जब तुम में से कोई शख़्स अपने इस्लामी भाई को मिले तो उस को सलाम करे और अगर इन के दरमियान दरख़्त, दीवार या पथ्थर वग़ैरा ह़ाइल हो जाए और वोह फिर उस से मिले तो दोबारा उस को सलाम करे।"

(سنن ابی داود، کتاب الادب، باب فی الرجل یفارق الرجل....الخ، الحدیث ۵۲۰۰، ج ۴، ص ۴۵۰)

(13) मुसा-फ़ह़ा करना सुन्नत है कि जब दो मुसल्मान बाहम मिलें तो पहले सलाम किया जाए, इस के बा'द मुसा-फ़ह़ा करें।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 16, स. 97,98)

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जब दो मुसल्मान मिलते हैं फिर इन में से एक अपने भाई का हाथ पकड़ता है (या'नी मुसा-फ़ह़ा करता है) तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है कि वोह उन की दुआ़ क़बूल फ़रमाए और उन के हाथों के जुदा होने से पहले ही उन की मग़्फ़िरत फ़रमा दे।"

(المسند للامام احمد بن حنبل، مسند انس بن مالک، الحدیث ۱۲۴۵۴، ج ۴، ص ۲۸۶)

(14) सलाम की त़रह़ मुसा-फ़ह़ा में भी पहल करें, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जब दो मुसल्मान मुलाक़ात करते हैं और उन में से एक अपने भाई को सलाम करता है तो उन में से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक ज़ियादा मह़बूब वोह

होता है जो अपने भाई से ज़ियादा गर्म जोशी से मुलाक़ात करता है। फिर जब वोह मुसा-फ़हा करते हैं तो उन पर सो रह़मतें नाज़िल होती हैं, इन में से नव्वे रह़मतें सलाम में पहल करने वाले के लिये और दस मुसा-फ़हा में पहल करने वाले के लिये हैं।''

(البحر الزخار، ابوعثمان الہندی، الحدیث ۳۰۸، ج۱، ص۴۳۷)

(15) दोनों हाथों से मुसा-फ़हा करें और मुसा-फ़हा करते वक़्त सुन्नत येह है कि हाथ में रूमाल वग़ैरा न हो और दोनों हथेलियां ख़ाली हों। (ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحۃ، باب الاستبراء وغیرہ، ج۹، ص۶۲۹)

(16) आ़लिमे बा अ़मल, सादाते किराम, वालिदैन और किसी भी मुअ़ज़्ज़मे दीनी के हाथ चूमना जाइज़ है। ह़ज़रते सय्यिदुना ज़राअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जो वफ़्दे अ़ब्दुल क़ैस में शामिल थे, फ़रमाते हैं कि हम मदीने में आए तो जल्दी जल्दी सुवारियों से उतर पड़े और हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के दस्ते मुबारक और पाउं मुबारक को बोसा दिया।

(سنن ابی داود، کتاب الادب، باب فی قبلۃ الرجل، الحدیث ۵۲۲۵، ج۴، ص۴۵۶)

ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहलवी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इस ह़दीस के तह़्त फ़रमाते हैं : ''इस ह़दीस से पाउं चूमने का जवाज़ साबित हुवा।'' (اشعۃ اللمعات، ج۴، ص۲۷)

दुर्रे मुख़्तार में है : ''ह़ुसूले ब-र-कत के लिये आ़लिम और परहेज़ गार आदमी का हाथ चूमना जाइज़ है।''

(الدر المختار، کتاب الحظر والاباحۃ، باب الاستبراء، ج۹، ص۶۳۱)

# घर या कमरे में दाख़िल होने के आदाब :

इस सिल्सिले में उन का ज़ेहन बनाएं कि

(1) जब भी घर या कमरे में दाख़िल हों तो इजाज़त ले कर दाख़िल हों ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़ा बिन यसार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि एक शख़्स ने सरकारे मदीना, फ़ैज़ गन्जीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से पूछा कि क्या मैं अपनी मां के पास जाने से पहले भी इजाज़त लूं ? तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''हां।'' उस ने अ़र्ज़ की : ''मैं तो उस के साथ एक ही घर में रहता हूं।'' आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''इजाज़त ले कर उस के पास जाओ।'' उन्हों ने अ़र्ज़ की : ''मैं अपनी मां का ख़ादिम हूं (या'नी बार बार आना जाना होता है) फिर इजाज़त की क्या ज़रूरत ?'' आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''इजाज़त ले कर जाओ, क्या तुम पसन्द करते हो कि अपनी मां को बरह्ना देखो ?'' अ़र्ज़ की : ''नहीं।'' इर्शाद फ़रमाया : ''तो इजाज़त ह़ासिल कर लिया करो।''

(المؤطا للامام مالک، کتاب الاستئذان باب الاستئذان، الحدیث ۱۸۴۷، ج ۲، ص ۴۴۶)

(2) घर में दाख़िल होने पर सलाम करें। ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया : ''ऐ बेटे ! जब तुम घर में दाख़िल हो तो घर वालों को सलाम करो क्यूं कि तुम्हारा सलाम तुम्हारे और तुम्हारे घर वालों के लिये बाइ़से ब-र-कत होगा।''

(جامع الترمذی، کتاب الاستئذان والآداب، باب ماجاء فی التسلیم اذا دخل بیتہ، الحدیث ۲۷۰۷، ج ۴، ص ۳۲۰)

(3) जब भी किसी के घर जाएं तो दरवाज़े से गुज़रते वक़्त ज़रूरतन दूसरे कमरे की त़रफ़ जाते हुए खन्कार लेना चाहिये ताकि घर के दीगर अफ़राद को हमारी मौजू-दगी का एह़सास हो जाए और वोह आगे पीछे हो सकें। मौलाए काएनात ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं कि "मैं रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा ब-र-कत में एक मरतबा रात के वक़्त और एक मरतबा दिन के वक़्त ह़ाज़िर होता था। जब मैं रात के वक़्त आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के पास ह़ाज़िरी देता आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे लिये खन्कारते।"

(سنن ابن ماجہ، کتاب الادب، باب الاستئذان، الحدیث ۳۷۰۸، ص ۲۶۹۸)

(4) जब किसी के घर जाएं तो सलाम करें और अपना नाम बताएं और पूछें कि क्या मैं अन्दर आ सकता हूं अगर इजाज़त मिल जाए **फ़बिहा** वरना नाराज़ हुए बिग़ैर वापस लौट आएं। इस दौरान दरवाज़े से हट कर खड़े हों ताकि घर में नज़र न पड़े। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन बुसर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم जब किसी दरवाज़े पर तशरीफ़ ले जाते तो दरवाज़े के सामने खड़े नहीं होते थे बल्कि दाईं या बाईं त़रफ़ दरवाज़े से हट कर खड़े होते थे।

(سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب کم مرۃ یسلم الرجل فی الاستیذان، الحدیث ۵۱۸۶، ج ۴، ص ۴۴۶)

## ग़ुफ़्त-गू के आदाब :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और क़ियामत के दिन पर ईमान रखता है उसे चाहिये कि अच्छी बात करे या चुप रहे।"

(صحیح البخاری، کتاب الرقاق، باب حفظ اللسان، الحدیث ۶۴۷۵، ج ۴، ص ۲۴۰)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''जन्नत में बालाख़ाने हैं जिस के बैरूनी ह़िस्से अन्दर से और अन्दरूनी ह़िस्से बाहर से नज़र आते हैं।'' एक आ'राबी ने अ़र्ज़ की : ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! येह किस के लिये होंगे ?'' इर्शाद फ़रमाया : ''जो अच्छी गुफ़्त-गू करे।''

(جامع الترمذی، کتاب البر والصلۃ، باب ماجاء فی قول المعروف، الحدیث ۱۹۹۱، ج ۳، ص ۳۹۶)

(1) मुस्कुरा कर और ख़न्दा पेशानी से बात कीजिये।

(2) ग़ैर मा'मूली तेज़ रफ़्तारी से गुफ़्त-गू वक़ार में कमी करती है। सुकून और वक़ार से ठहर ठहर कर गुफ़्त-गू करें।

(3) छोटों के साथ शफ़्क़त और बड़ों से अदब के साथ गुफ़्तु-गू करना आप को हर दिल अ़ज़ीज़ बना देगा।

(4) जब कोई बात कर रहा हो तो इत्मीनान से सुनें उस की बात काट कर अपनी बात शुरूअ़ न कर दें।

## छींकने के आदाब :

इस सिल्सिले में उन का ज़ेहन बनाएं कि छींक के वक़्त सर झुकाएं, मुंह छुपाएं और आवाज़ आहिस्ता निकालें। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को जब छींक आती थी तो मुंह को हाथ या कपड़े से छुपा लेते थे और आवाज़ को पस्त कर लेते थे।

(جامع الترمذی، کتاب الآداب، باب ماجاء فی خفض الصوت وتخمیر الوجہ، الحدیث ۲۷۵۴، ج ۴، ص ۳۴۳)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''जब किसी को छींक आए तो اَلْحَمْدُ لِلّٰہ कहे और उस का भाई या साथ वाला یَرْحَمُكَ اللّٰہُ कहे फिर इस के जवाब में छींकने वाला येह कहे یَھْدِیْکُمُ اللّٰہُ وَیُصْلِحُ بَالَکُم''

(صحیح البخاری، کتاب الادب، باب اذا عطس کیف یشمت، الحدیث ۶۲۲۴، ج۴، ص۱۶۳)

## मस्अला :

अगर छींकने वाला اَلْحَمْدُ لِلّٰہ कहे तो सुनने वाले पर फ़ौरन इस त़रह़ जवाब देना (या'नी یَرْحَمُكَ اللّٰہُ कहना) वाजिब है कि वोह सुन ले।

(الدر المختار والرد المحتار، کتاب الحظر والاباحۃ، فصل فی البیع، ج۹، ص۶۸۳)

## जमाही की मज़म्मत :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''जब किसी को जमाही आए तो मुंह पर हाथ रख ले क्यूं कि शैत़ान मुंह में घुस जाता है।''

(صحیح مسلم، کتاب الزھد والرقائق، باب تشمیت العاطس، الحدیث ۲۹۹۵، ص۱۵۹۷)

जब जमाही आने लगे तो ऊपर के दांतों से निचले होंट को दबाएं या उल्टे हाथ की पुश्त मुंह पर रख दें। जमाही रोकने की बेहतरीन तरकीब येह है कि जब जमाही आने लगे तो दिल में ख़याल करे कि अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام इस से महफ़ूज़ हैं तो फ़ौरन रुक जाएगी। (رد المحتار، کتاب الصلوۃ، مطلب: اذا تردد الحکم بین سنۃ..الخ، ج۲، ص۴۹۸، ۴۹۹)

## सोने जागने के आदाब :

इस सिल्सिले में उन का ज़ेहन बनाएं कि

(1) सोने में मुस्तहब येह है कि बा तहारत सोए।

(बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 16, स. 70)

(2) सोने से पहले बिस्मिल्लाह शरीफ़ पढ़ कर बिस्तर को तीन बार झाड़ लें ताकि कोई मूज़ी शै या कीड़ा वग़ैरा हो तो निकल जाए।

(3) सोने से पहले येह दुआ पढ़ लीजिये। اَللّٰھُمَّ بِاسْمِكَ اَمُوْتُ وَاَحْیٰ तरजमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं तेरे नाम के साथ ही मरता हूं और जीता हूं (या'नी सोता और जागता हूं)

(صحیح البخاری، کتاب الدعوات، باب وضع الید الیمنی...الخ، الحدیث ۶۳۱۴، ج۴، ص۱۹۲ ملخصاً)

(4) उल्टा या'नी पेट के बल न सोएं। हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक शख़्स को पेट के बल लैटे हुए देखा तो फ़रमाया : "इस तरह लैटने को अल्लाह तआ़ला पसन्द नहीं फ़रमाता।" (جامع الترمذی، کتاب الادب، باب ماجاء فی کراھیۃ الاضطجاع علی البطن، الحدیث ۲۷۷۷، ج۴، ص۳۵۲)

(5) कुछ देर दाहिनी करवट पर दाहिने हाथ को रुख़्सार के नीचे रख कर सोए।

(6) कभी चटाई पर सोएं तो कभी बिस्तर पर कभी फ़र्शे ज़मीन पर ही सो जाएं।

(7) जागने के बा'द येह दुआ पढ़ें :

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الَّذِیْ اَحْیَانَا بَعْدَ مَا اَمَاتَنَا وَاِلَیْہِ النُّشُوْرُ"

तरजमा : तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने हमें मारने

के बा'द ज़िन्दा किया और उसी की त़रफ़ लौट कर जाना है।''

(صحیح البخاری، کتاب الدعوات، باب مایقول اذا نام، الحدیث ۶۳۱۲، ج ۴، ص ۱۹۲)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

## बच्चों से सच बोलिये

बच्चों से सच बोलिये इन्हें बहलाने के लिये झूटे वा'दे न कीजिये। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि एक दिन नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم हमारे घर तशरीफ़ फ़रमा थे कि मेरी वालिदा ने मुझे अपने पास बुलाते हुए कहा कि इधर आओ मैं तुम्हें कुछ दूंगी। रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने दर्याफ़्त फ़रमाया : ''तुम ने इसे क्या देने का इरादा किया है?'' उन्हों ने अ़र्ज़ की : ''मैं इसे खजूर दूंगी।'' आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''अगर तुम इसे कुछ न देती तो तुम्हारा एक झूट लिख दिया जाता।''

(سنن ابی داود، کتاب الادب، باب فی التشدید فی الکذب، الحدیث ۴۹۹۱، ج ۴، ص ۳۸۷)

## अपने बच्चों को सिखाइये

### (1) हुस्ने अख़्लाक़ :

**वालिदैन** को चाहिये कि अपनी औलाद को हर एक से हुस्ने अख़्लाक़ के साथ पेश आने की तरग़ीब दें कि इस में बहुत सी दुन्यवी व उख़्वी सआ़दतें पोशीदा हैं जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए़ यौमुन्नुशूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''हुस्ने अख़्लाक़ गुनाहों को इस त़रह़

पिघला देता है जिस त़रह़ धूप बर्फ़ को पिघला देती है ।''

(شعب الایمان، باب فی حسن الخلق، الحدیث ۸۰۳۶، ج ۶، ص ۲۴۷)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''मीज़ाने अ़मल में कोई अ़मल हुस्ने अख़्लाक़ से बढ़ कर नहीं ।''

(الادب المفرد، باب حسن الخلق، الحدیث ۲۷۳، ص ۹۱)

## (2) पाकीज़गी :

**वालिदैन** को चाहिये कि अपनी औलाद को साफ़ सुथरा रहने की ताकीद करें। हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''अल्लाह तआ़ला पाक है, पाकी पसन्द फ़रमाता है, सुथरा है, सुथरा पन पसन्द करता है ।''

(جامع الترمذی، کتاب الادب، باب ماجاء فی النظافۃ، الحدیث ۲۸۰۸، ج ۴، ص ۳۶۵)

सरकारे मदीना, फ़ैज़ गन्जीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''पाकीज़गी निस्फ़ ईमान है ।''

(صحیح مسلم، کتاب الطھارۃ، باب فضل الوضوء، الحدیث ۲۲۳، ص ۱۴۰)

## (3) मुख़्तलिफ़ दुआ़एं :

अपनी औलाद को मुख़्तलिफ़ दुआ़एं सिखाइये म-सलन खाना खाने की दुआ़, सोने जागने की दुआ़, मुसीबत ज़दा को देख कर पढ़ने वाली दुआ़, किसी नुक़्सान पर पढ़ी जाने वाली दुआ़ वग़ैरा । इस के लिये मुख़्तलिफ़ दुआ़ओं का मज्मूआ़ ''बहारे दुआ़'' मक-त-बतुल मदीना से ह़ासिल कीजिये ।

## (4) सख़ावत :

अपनी औलाद को बचपन ही से स-दक़ा व ख़ैरात करने का आ़दी बनाएं इस का एक त़रीक़ा येह भी है कि उन्हें स-दक़े के फ़ज़ाइल बता कर किसी ग़रीब को इन के हाथों से कोई शै दिलवाइये। सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि "सख़ी आदमी, अल्लाह तआ़ला के क़रीब है, जन्नत से क़रीब है, लोगों से क़रीब है, और दोज़ख़ से दूर है। बख़ील आदमी, अल्लाह तआ़ला से दूर है, जन्नत से दूर है, लोगों से दूर है, और दोज़ख़ से क़रीब है।"

(جامع الترمذی، کتاب البر والصلۃ، باب ماجاء فی السخاء، الحدیث ۱۹۶۸، ج ۳، ص ۳۸۷)

## (5) ज़ौक़े इबादत :

वालिदैन को चाहिये कि अवाइल ही से अपनी औलाद के दिल में इ़बादत का शौक़ पैदा करने की कोशिश करें कभी उन्हें तिलावते क़ुरआन के फ़ज़ाइल बताएं तो कभी तहज्जुद के, कभी रोज़े की फ़ज़ीलत बताएं तो कभी बा जमाअ़त नमाज़ की।

## तहज्जुद पढ़ने की तरग़ीब :

दा'वते इस्लामी के अवाइल की बात है कि एक मरतबा अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه म-दनी कामों में मस्रूफ़िय्यत की बिना पर रात देर गए कुछ इस्लामी भाइयों के हमराह किताब घर (या'नी अपनी लायब्रेरी) में पहुंचे तो वहां आप के बड़े शहज़ादे ह़ाजी अह़मद उ़बैद रज़ा अ़त्तारी سَلَّمَهُ الْبَارِیْ सोए हुए थे जो उस वक़्त बहुत कमसिन थे। आप ने फ़रमाया : "इसे तहज्जुद पढ़वानी चाहिये।" और म-दनी मुन्ने को बेदार करना चाहा लेकिन उन पर नींद का बेहद ग़-लबा था लिहाज़ा ! पूरी त़रह़ बेदार न हो पाए। लेकिन अमीरे अहले सुन्नत مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی इन्फ़िरादी कोशिश फ़रमाते हुए म-दनी मुन्ने को गोद में उठा

कर खुले आस्मान तले ले गए और उन्हें चांद दिखा कर पूछा, ''येह क्या है ?'' म-दनी मुन्ने ने जवाब दिया, ''चांद।'' फिर आप ने पूछा, ''येह क्या कर रहा है ?'' म-दनी मुन्ने ने जवाब दिया, ''गुम्बदे ख़ज़रा को चूम रहा है।'' इस गुफ़्त-गू के दौरान म-दनी मुन्ना पूरी त़रह़ बेदार हो चुका था चुनान्चे आप ने उसे वुज़ू कर के तहज्जुद पढ़ने की तरग़ीब इर्शाद फ़रमाई।

## (6) तवक्कुल :

अपनी औलाद को तवक्कुल की सि-फ़ते अ़ज़ीमा से मुत्तसिफ़ करने के लिये उन का ज़ेह्न बनाएं कि हमारी नज़र अस्बाब पर नहीं ख़ालिक़े अस्बाब या'नी रब عَزَّوَجَلَّ पर होनी चाहिये। रब तआ़ला चाहेगा तो येह रोटी हमारी भूक मिटाएगी, वोह चाहेगा तो येह दवा हमारे मरज़ को दूर करेगी।

मरवी है कि ह़ज़रते अह़मद बिन ह़र्ब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अपने कम उ़म्र साह़िब ज़ादे को तवक्कुल की ता'लीम देना चाही, तो एक दीवार में सूराख़ कर के फ़रमाया : ''बेटा ! जब खाने का वक़्त हो, इस सूराख़ के पास आ कर त़लब कर लिया करना, अल्लाह तआ़ला अ़त़ा फ़रमा दिया करेगा।'' दूसरी त़रफ़ अपनी ज़ौजा को इर्शाद फ़रमा दिया कि ''जब मुक़र्ररा वक़्त हो, तुम चुपके से दूसरी जानिब खाना रख दिया करना।''

ह़स्बे नसीह़त बच्चा सूराख़ के पास आ कर खाना त़लब करता, वालिदा दूसरी जानिब से रख दिया करतीं। त़लब के थोड़ी देर बा'द बच्चा सूराख़ में हाथ डालता, तो खाना मौजूद पा कर उसे अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से तसव्वुर करता। एक दिन उन की वालिदा खाना रखना भूल गईं। ह़त्ता कि खाने का वक़्त निकल गया। जब उन्हें

ख़याल आया, तो जल्दी से बच्चे के पास पहुंचीं, देखा कि उस के सामने निहायत नफ़ीस खाना रखा हुवा है और वोह बहुत रग़बत से उसे खा रहा है। वालिदा ने हैरानी से पूछा : "बेटा ! येह खाना कहां से आया ?" अ़र्ज़ की : "जहां से रोज़ाना अल्लाह तआ़ला अ़ता फ़रमाता है।"

वालिदा ने येह सारा वाक़िआ़ ह़ज़रत की ख़िदमत में अ़र्ज़ किया, आप ने ख़ुश हो कर इर्शाद फ़रमाया : "अब तुम्हें खाना रखने की ज़रूरत नहीं, अल्लाह तआ़ला बिला वासिता ही पहुंचाता रहेगा।" (تذکرۃ الاولیاء، ذکر احمدبن حرب،ج۱،ص۲۱۹)

## (7) ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ :

उख़्वी काम्याबी के हुसूल के लिये हमारे दिल में ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ का होना भी बेह़द ज़रूरी है। जब तक येह ने'मत ह़ासिल न हो, गुनाहों से फ़िरार और नेकियों से प्यार तक़रीबन ना मुम्किन है। इस के लिये अपनी औलाद को उन के जिस्म व जां की ना तुवानी का एह़सास दिलाने के साथ साथ रब तआ़ला की बे नियाज़ी से डराते रहिये। हमारे अकाबिरीन عَلَيْهِم رَحْمَةُ اللهِ الْمُبِيْن की औलाद भी ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ का पैकर हुवा करती थी, चुनान्चे

**एक मरतबा** ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र वर्राक़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के म-दनी मुन्ने क़ुरआने पाक की तिलावत करते हुए जब इस आयत पर पहुंचे.....

يَوْمًا يَّجْعَلُ الْوِلْدَانَ شِيْبًا (پ۲۹،المزمل:۱۷)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** उस दिन से जो बच्चों को बूढ़ा कर देगा।

तो ख़ौफ़े इलाही का इस क़दर ग़-लबा हुवा कि दम तोड़ दिया।

(تذکرۃ الاولیاء، ذکر ابوبکرورّاق،ج۲،ص۸۷)

ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इ़याज़ رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه को जब येह इ़ल्म होता कि उन का बेटा भी उन के पीछे नमाज़ पढ़ रहा है तो ख़ौफ़ व ग़म की आयात तिलावत न करते। एक मरतबा उन्हों ने समझा कि वोह उन के पीछे नहीं है और येह आयत पढ़ी :

قَالُوْا رَبَّنَا غَلَبَتْ عَلَيْنَا شِقْوَتُنَا وَكُنَّا قَوْمًا ضَآلِّيْنَ. (پ۱۸، المؤمنون:۱۰۶)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** कहेंगे ऐ रब हमारे! हम पर हमारी बद बख़्ती ग़ालिब आई और हम गुमराह लोग थे।

**तो** उन का बेटा येह आयत सुन कर बेहोश हो कर गिर गया। जब आप को इस का अन्दाज़ा हुवा तो तिलावत मुख़्तसर कर दी। जब उन की मां को येह सारी बात मा'लूम हुई तो उन्हों ने आ कर अपने बेटे के चेहरे पर पानी छिड़का और उसे होश में लाई। उन्हों ने ह़ज़रते फ़ुज़ैल رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه से अ़र्ज़ की, इस त़रह़ तो आप इसे मार डालेंगे..... एक मरतबा फिर ऐसा ही इत्तिफ़ाक़ हुवा कि आप ने येह आयत तिलावत की :

وَبَدَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مَالَمْ يَكُوْنُوْا يَحْتَسِبُوْنَ. (پ۲۴، الزمر:۴۷)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और उन्हें अल्लाह की त़रफ़ से वोह बात ज़ाहिर हुई जो उन के ख़याल में न थी।

**येह** आयत सुन कर वोह फिर बेहोश हो कर गिर गया। जब उसे होश में लाने की कोशिश की गई तो वोह दम तोड़ चुका था।

(کتاب التوابین، توبۃ علی بن فضیل، ص۲۰۹)

**अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अभी बहुत छोटी उ़म्र में थे कि किसी बात पर हमशीरा ने नाराज़ हो कर येह कह दिया कि तुम को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मारेगा (या'नी सज़ा देगा)। येह सुन कर आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه सहम गए और हमशीरा से इसरार करने लगे : "बोलो,

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे नहीं मारेगा..... बोलो, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे नहीं मारेगा..... बोलो, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे नहीं मारेगा.....'' आख़िरे कार हमशीरा से येह कहलवा कर ही दम लिया।

**शहज़ादए अमीरे अहले सुन्नत** हाजी मुहम्मद बिलाल रज़ा अ़त्तारी سَلَّمَهُ الْبَارِیْ फ़रमाते हैं कि बचपन में एक मरतबा मैं ने किसी कूंएं में झांक कर देखा तो उस की गहराई देख कर मेरे दिल पर ख़ौफ़ त़ारी हो गया। जब मैं ने अपने बापाजान अमीरे अहले सुन्नत مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی की ख़िदमत में येह माजरा अ़र्ज़ किया तो आप ने इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए कुछ इस त़रह़ से फ़रमाया, ''दुन्यावी कूंएं की गहराई देख कर ही आप का दिल ख़ौफ़ज़दा हो गया तो ग़ौर कीजिये कि जहन्नम की गहराई किस क़दर होलनाक होगी।''

## (8) दियानत दारी :

अपनी औलाद को मुआ़-श-रती अ-सरात की बिना पर बद दियानती का आ़दी बनने से बचाने के लिये उसे घर से दियानत दारी का दर्स दीजिये। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''जिस में अमानत नहीं उस का दीन कामिल नहीं।''

(شعب الایمان، باب فی الامانات...الخ، الحدیث ۵۲۵۴، ج ۴، ص ۳۲۰)

**शैख़े त़रीक़त** अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ बचपन ही से शर-ई मुआ़-मलात में मोह़तात़ हैं। आप ने छोटी उ़म्र से ही हुसूले रिज़्क़े ह़लाल के लिये मुख़्तलिफ़ ज़राएअ़ अपनाए। एक बार बचपन ही में अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ रेढ़ी पर टॉफ़ियां

और बिस्किट वग़ैरा बेच रहे थे कि एक बच्चे ने दो आने की टॉफ़ियां मांगीं। आप ने उसे तीन टॉफ़ियां दीं, अभी मज़ीद तीन देने ही लगे थे कि वोह बच्चा भागता हुवा सामने गली में दाख़िल हुवा और निगाहों से ओझल हो गया।

**सख़्त गर्मी** का मौसिम था मगर आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه को फ़िक्रे आख़िरत ने बेचैन कर दिया। चुनान्चे शदीद गर्मी में भी आप उस बच्चे को तलाश करने लगे ताकि उसे बक़िय्या टॉफ़ियां दे सकें। आप को न तो उस बच्चे का नाम मा'लूम था और न ही पता। आप दरवाज़ों पर दस्तक दे दे कर और गली में मौजूद लोगों के पास जा जा कर उस बच्चे का हुल्या बता कर उस के बारे में दर्याफ़्त करते। जब लोगों पर ह़क़ीक़त आशकार होती तो कुछ मुस्कुरा कर रह जाते और कुछ ह़ैरान रह जाते कि इतनी छोटी सी उ़म्र में तक़्वा का क्या आ़लम है! बिल आख़िर आप मत़्लूबा घर तक जा पहुंचे। दस्तक के जवाब में एक बूढ़ी ख़ातून ने दरवाज़ा खोला तो आप ने सारा माजरा बयान किया। वोह बुढ़िया तड़प कर बोली : "बेटा तुम भी किसी के लाल हो, ऐसी चिलचिलाती धूप में तो परिन्दे भी घोंसलों में हैं और तुम एक आने की चीज़ देने के लिये इस त़रह़ घूम रहे हो।" आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने गुफ़्त-गू को त़ूल देने की बजाए कहा : "अगर मैं अभी नहीं दूंगा तो बरोज़े क़ियामत रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में इस का ह़िसाब कैसे दूंगा?" येह कह कर आप ने टॉफ़ियां उस ख़ातून के हाथ में थमाईं और सुकून का सांस लिया।

## (9) शुक्र करना :

अपनी औलाद को शुक्रे ने'मत का आ़दी बनाएं और उन का ज़ेह्न बनाइये कि जब भी कोई ने'मत मिले हमें अल्लाह तआ़ला का

शुक्र अदा करना चाहिये । ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''अल्लाह तआ़ला को येह बात पसन्द है कि बन्दा हर निवाले और हर घूंट पर अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करे ।''

(صحیح مسلم، کتاب الذکر والدعاء...الخ، باب استحباب حمد اللہ...الخ، الحدیث ۲۷۳۴، ص ۱۴۶۳)

बच्चे को शुक्र करने की आ़दत डालने के लिये उसे एक लुक़्मा खिलाने के बा'द اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ कहने की तरग़ीब दीजिये जब वोह येह कह चुके तो दूसरा निवाला खिलाइये । اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से कुछ ही दिनों में बच्चा हर लुक़्मे पर शुक्रे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ करने का आ़दी बन जाएगा ।

## (10) ईसार :

बच्चे को सिखाया जाए कि किसी मुसल्मान की ज़रूरत पर अपनी ज़रूरत क़ुरबान कर देने का बड़ा अज्रो सवाब है । बच्चे को इस का आ़दी बनाने के लिये मुख़्तलिफ़ अवक़ात में उसे ईसार की अ़-मली मश्क़ करवाएं और उस से कहें अपनी फ़ुलां ज़रूरत की चीज़ फ़ुलां बच्चे को दे दे । अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''जो शख़्स अपनी ज़रूरत की चीज़ दूसरे को दे दे तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे बख़्श देता है ।''

(اتحاف السادۃ المتقین، کتاب ذم البخل...الخ، بیان الایثار وفضلہ، ج ۹، ص ۷۷)

## (11) सब्र :

अपनी औलाद का ज़ेहन बनाइये कि जब भी कोई सदमा पहुंचे तो बिला ज़रूरते शर-ई किसी के सामने बयान न कीजिये और सब्र का सवाब कमाइये । ह़ज़रते सय्यिदुना कब्शा अन्मारी

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''जिस बन्दे पर जुल्म किया जाए और वोह इस पर सब्र करे अल्लाह तआ़ला उस की इ़ज़्ज़त में इज़ाफ़ा फ़रमाएगा।'' (جامع الترمذی، کتاب الزھد، باب ماجاء مثل الدنیا...الخ، الحدیث ۲۳۳۲، ج۴، ص۱۴۵)

## (12) क़नाअ़त :

अपनी औलाद को क़नाअ़त की ता'लीम दीजिये कि रब तआ़ला की त़रफ़ से जो मिल जाए उसी पर राज़ी हो जाएं। ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''क़नाअ़त कभी ख़त्म न होने वाला ख़ज़ाना है।'' (کتاب الزھد الکبیر، الحدیث ۱۰۴، ص۸۸)

## (13) वक़्त की अहम्मिय्यत :

अपनी औलाद को वक़्त की अहम्मिय्यत का एह़सास दिलाते हुए उन का ज़ेह़न बनाइये कि वक़्त ज़ाएअ़ करना अ़क़्ल मन्दों का शेवा नहीं। सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی नक़्ल फ़रमाते हैं ''बन्दे का ग़ैर मुफ़ीद कामों में मश्ग़ूल होना इस बात की अ़लामत है कि अल्लाह तआ़ला ने उस से अपनी नज़रे इ़नायत फैर ली है और जिस मक़्सद के लिये इन्सान को पैदा किया गया है, अगर उस की ज़िन्दगी का एक लम्ह़ा भी इस के इ़लावा गुज़र गया तो वोह इस बात का ह़क़दार है कि उस पर अ़र्सए ह़सरत दराज़ कर दिया जाए।'' (مجموعہ رسائل للامام الغزالی، ایھا الولد، ص۲۵۷)

और जिस की उ़म्र चालीस से ज़ियादा हो जाए और इस के बा वुजूद उस की बुराइयों पर उस की अच्छाइयां ग़ालिब न हों, तो उसे जहन्नम की आग में जाने के लिये तय्यार रहना चाहिये।

(الفردوس بماثور الخطاب: باب المیم، الحدیث ۵۵۴۴، ج۳، ص۴۹۸)

**हमारे** अस्लाफ़ رَحِمَهُمُ اللّٰهُ अपने वक़्त को किस त़रह़ इस्ति'माल किया करते थे इस की एक झलक मुला-ह़ज़ा हो : चुनान्चे ह़ज़रते दावूद त़ाई رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के बारे में मन्कूल है कि आप रोटी पानी में भिगो कर खा लेते थे, इस की वजह बयान करते हुए फ़रमाते, ''जितना वक़्त लुक़्मे बनाने में सर्फ़ होता है, उतनी देर में क़ुरआने करीम की पचास आयतें पढ़ लेता हूं।''

(تذکرۃ الاولیاء، ذکر داود طائی رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه، ج ۱، ص ۲۰۱)

## (14) ख़ुद ए'तिमादी :

वक़्त बे वक़्त बच्चों को डांटते रहने से बच्चों की ख़ुद ए'तिमादी बुरे त़रीक़े से मजरूह़ होती है। वालिदैन से गुज़ारिश है कि बच्चों की ग़-लत़ी पर उन्हें तम्बीह ज़रूर करें मगर इतनी सख़्ती न करें कि वोह एह़सासे कमतरी में मुब्तला हो जाएं। ख़ुद ए'तिमादी के ह़ुसूल के लिये हर वक़्त बा वुज़ू रहना भी बहुत मुफ़ीद है।

## (15) पड़ोसियों से ह़ुस्ने सुलूक :

बच्चों को समझाइये कि पड़ोसी घरानों के बड़े अफ़राद का एह़तिराम करें और छोटे बच्चों से ह़ुस्ने सुलूक बरतें। एक शख़्स ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा अ़-ज़मत में अ़र्ज़ की : ''या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! मुझे क्यूंकर मा'लूम हो कि मैं ने अच्छा किया या बुरा ?'' इर्शाद फ़रमाया : ''जब तुम पड़ोसियों को येह कहते सुनो कि तुम ने अच्छा किया तो बेशक तुम ने अच्छा किया, और जब येह कहते सुनो कि तुम ने बुरा किया तो बेशक तुम ने बुरा किया।''

(سنن ابن ماجہ، کتاب الزہد، باب الثناء الحسن، الحدیث ۴۲۲۳، ج ۴، ص ۴۷۹)

## इस्लाम क़बूल कर लिया :

ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने एक

मकान किराए पर लिया उस मकान के पड़ोस में एक यहूदी का मकान था और ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का हुजरा उस यहूदी के मकान के दरवाज़े के क़रीब था। उस यहूदी ने एक परनाला बना रखा था और हमेशा उस परनाले की राह से नजासत ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के घर में फेंका करता था। उस ने मुद्दत तक ऐसा ही किया। मगर ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उस से कभी शिकायत न फ़रमाई।

आखि़र एक दिन उस यहूदी ने खु़द ही ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से पूछा : "ह़ज़रत ! आप को मेरे परनाले से कोई तक्लीफ़ तो नहीं होती ?" आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "होती तो है मगर मैं ने एक टोकरी और झाड़ू रख छोड़ी है। जो नजासत गिरती है, उस से साफ़ कर देता हूं।" उस यहूदी ने कहा : "आप इतनी तक्लीफ़ क्यूं करते हैं ? और आप को गुस्सा क्यूं नहीं आता ?" फ़रमाया : "मेरे प्यारे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का कुरआन में फ़रमाने आ़लीशान है :

وَالْکٰظِمِیْنَ الْغَیْظَ وَالْعَافِیْنَ عَنِ النَّاسِ ؕ وَاللّٰہُ یُحِبُّ الْمُحْسِنِیْنَ (پ۴، اٰل عمران ۱۳۴)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और गुस्सा पीने वाले और लोगों से दर गुज़र करने वाले और नेक लोग अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब हैं

येह आयाते मुक़द्दसा सुन कर वोह यहूदी बहुत मु-तअस्सिर हुवा, और यूं अ़र्ज़ गुज़ार हुवा, "यक़ीनन आप का दीन निहायत ही उ़म्दा है। आज से मैं सच्चे दिल से इस्लाम क़बूल करता हूं।" फिर उस ने कलिमा पढ़ा और मुसल्मान हो गया।

(تذکرۃ الاولیاء، ذکر مالک بن دینار رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ، ج ۱، ص ۵۱)

## (16) ग़म ख़्वारी :

अपने बच्चों का ज़ेहन बनाइये कि जब किसी को ग़म ज़दा

देखें तो उस की दिलजूई व ग़म ख़्वारी करें। ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो किसी ग़मज़दा शख़्स से ता'ज़ियत (या'नी उस की ग़म ख़्वारी) करेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे तक़्वा का लिबास पहनाएगा और रूहों के दरमियान उस की रूह पर रह़मत फ़रमाएगा और जो किसी मुसीबत ज़दा से ता'ज़ियत करेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे जन्नत के जोड़ों में से ऐसे दो जोड़े पहनाएगा जिन की क़ीमत पूरी दुन्या भी नहीं हो सकती।"

(المعجم الاوسط، الحدیث ۹۲۹۲، ج ۶، ص ۴۲۹)

## (17) बुज़ुर्गों की इज़्ज़त :

**इस्लाम** एक कामिल व अक्मल दीन है जो हमें **बुज़ुर्गों का एह़तिराम** सिखाता है। अपनी औलाद को बुज़ुर्गों के एह़तिराम का ख़ूगर बनाइये। ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि सरकारे मदीना, फ़ैज़ गन्जीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो नौ जवान किसी बुज़ुर्ग के सिन रसीदा होने की वजह से उस की इज़्ज़त करे तो अल्लाह तआ़ला उस के लिये किसी को मुक़र्रर कर देता है जो उस नौ जवान के बुढ़ापे में उस की इज़्ज़त करेगा।" (سنن الترمذی، کتاب البر والصلۃ، باب ماجاء فی اجلال الکبیر، الحدیث ۲۰۲۹، ج ۳، ص ۴۱۱)

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ऐ अनस ! बड़ों का अ-दबो एह़तिराम और ता'ज़ीमो तौक़ीर करो और छोटों पर शफ़्क़त करो, तुम जन्नत में मेरी रफ़ाक़त पा लोगे।"

(شعب الایمان، باب فی رحم الصغیر، الحدیث ۱۰۹۸۱، ج ۷، ص ۴۵۸)

## (18) वालिदैन का अ-दबो एह़तिराम :

**अपनी औलाद** को वालिदैन का अदब भी सिखाइये । ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि सरकारे मदीना, फ़ैज़ गन्जीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''जिस ने अपने मां बाप की फ़रमां बरदारी की ह़ालत में सुब्ह़ की तो उस के लिये जन्नत के दो दरवाज़े खोल दिये जाते हैं, और अगर वालिदैन में से एक हो तो एक दरवाज़ा खुलता है । और जिस ने इस ह़ाल में सुब्ह़ की, कि वोह अपने वालिदैन का ना फ़रमान हो तो उस के लिये जहन्नम के दो दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और अगर वालिदैन में से एक हो तो एक दरवाज़ा खुलता है ।'' एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : ''अगर्चे वालिदैन ज़ुल्म करें ?'' इर्शाद फ़रमाया : ''अगर्चे ज़ुल्म करें, अगर्चे ज़ुल्म करें, अगर्चे ज़ुल्म करें ।''

(شعب الایمان، باب فی برالوالدین، فصل فی حفظ اللسان...الخ، الحدیث ۷۹۱۶، ج۶، ص۲۰۶)

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''जो नेक औलाद अपने वालिदैन की त़रफ़ मह़ब्बत की निगाह से देखे तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की हर निगाह के बदले एक मक़्बूल ह़ज का सवाब लिखेगा ।'' अ़र्ज़ की गई : ''अगर्चे रोज़ाना सो मरतबा देखे ?'' फ़रमाया : ''हां, अल्लाह तआ़ला सब से बड़ा और पाक है ।''

(شعب الایمان، کتاب الایمان، باب فی برالوالدین، الحدیث ۷۸۵۹، ج۶، ص۱۸۶)

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''जिस ने अपनी मां की दोनों आंखों के

दरमियान (या'नी पेशानी पर) बोसा दिया तो येह उस के लिये जहन्नम से रोक बन जाएगा।" (شعب الایمان، باب فی بر الوالدین، الحدیث ۷۸۶۱، ج ۶، ص ۱۸۷)

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जन्नत माओं के क़दमों तले है।" (کنز العمال، کتاب النکاح، الباب الثامن فی بر الوالدین، الحدیث ۴۵۴۳۱، ج ۱۶، ص ۱۹۲)

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "अपने वालिदैन के साथ नेक सुलूक करो, तुम्हारे बच्चे तुम्हारे साथ नेक सुलूक करेंगे।" (المستدرک، کتاب البر والصلۃ، باب برو آباؤکم، الحدیث ۷۳۴۱، ج ۵، ص ۲۱۴)

ह़ज़रते साबित बुनानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि किसी मक़ाम पर एक आदमी अपने बाप को मार रहा था। लोगों ने उसे मलामत की, कि ऐ ना हन्जार! येह क्या है? इस पर बाप बोला : "इसे छोड़ दो क्यूं कि मैं भी इसी जगह अपने बाप को मारा करता था, येही वजह है कि मेरा बेटा भी मुझे इसी जगह मार रहा है, येह उसी का बदला है इसे मलामत मत करो।" (تنبیہ الغافلین، باب حق الولد علی الوالد، ص ۶۹)

## (19) असातिज़ा व उ़-लमा का अदब :

**वालिदैन** को चाहिये कि अपनी औलाद को असातिज़ा व उ़-लमा का अदब सिखाएं कि (इ़ल्मे दीन सिखाने वाला) उस्ताज़ रूह़ानी बाप होता है और ह़क़ीक़ी वालिद जिस्म का। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "इ़ल्म ह़ासिल करो और इ़ल्म के लिये बुर्दबारी व वक़ार सीखो, और जिस से इ़ल्म ह़ासिल कर रहे हो उस के सामने आ़जिज़ी व इन्किसारी इख़्तियार करो।" (المعجم الاوسط، الحدیث ۶۱۸۴، ج ۴، ص ۳۴۲)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''जिस ने किसी शख़्स को क़ुरआने मजीद की एक आयत भी सिखाई वोह उस का आक़ा है, लिहाज़ा अब उस शख़्स को ज़ैब नहीं देता कि अपने उस्ताज़ को छोड़ कर किसी दूसरे को इस पर तरजीह़ दे।''

(المعجم الکبیر، الحدیث ۷۵۲۸، ج۸، ص۱۱۲)

## (20) आ़जिज़ी :

अपने बच्चों को मुब्तलाए तकब्बुर होने से बचाने के लिये उन्हें आ़जिज़ी की ता'लीम दें कि हर मुसल्मान को अपने से अफ़्ज़ल जानें। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''जो अल्लाह तआ़ला के लिये आ़जिज़ी इख़्तियार करता है, अल्लाह तआ़ला उसे बुलन्दियां अ़त़ा फ़रमाता है।''

(صحیح مسلم، کتاب البر والصلۃ والآداب، باب استحباب العفو والتواضع، الحدیث ۲۵۸۸، ص۱۳۹۷)

## (21) इख़्लास :

वालिदैन अपने बच्चों का ज़ेहन बनाएं कि हर जाइज़ काम अल्लाह तआ़ला की रिज़ा के लिये करें। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि उन्हों ने आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि ''जो शख़्स लोगों में अपने अ़मल का चरचा करेगा तो ख़ुदाए तआ़ला उस की (रियाकारी) लोगों में मश्हूर कर देगा और उस को ज़लील व रुस्वा करेगा।''

(شعب الایمان، باب فی اخلاص العمل للہ...الخ، الحدیث ۶۸۲۲، ج۵، ص۳۳۱)

## (22) सच बोलना :

हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''सच बोलना नेकी है और नेकी जन्नत में ले जाती है और झूट बोलना फ़िस्क़ो फ़ुजूर है और फ़िस्क़ो फ़ुजूर दोज़ख़ में ले जाता है।''

(صحیح مسلم، کتاب الادب، باب قبح الکذب، الحدیث ۲۶۰۷، ص ۱۴۰۵)

**म-दनी मश्वरा :** इन उमूर को ब आसानी अपनाने के लिये अपनी औलाद को दा'वते इस्लामी के पाकीज़ा म-दनी माहोल से वाबस्ता कर दीजिये।

## अपने बच्चों को इन उमूर से बचाइये

## (1) सुवाल करना :

दूसरों से चीज़ें मांगने की आ़दत भी बच्चों में उ़मूमन पाई जाती है। आप अपनी औलाद को ऐसा न करने दें और उन का ज़ेहन बनाइये कि शदीद ज़रूरत के बिग़ैर किसी से कोई चीज़ न मांगें। ह़ज़रते सय्यिदुना कब्शा अन्मारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''जिस बन्दे ने सुवाल का दरवाज़ा खोला अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर फ़क़्र का दरवाज़ा खोल देगा।''

(جامع الترمذی، کتاب الزھد، باب ماجاء مثل الدنیا مثل اربعۃ نفر، الحدیث ۲۳۳۲، ج ۴، ص ۱۴۵)

## (2) उल्टा नाम लेना :

अस्ल नाम से हट कर किसी का उल्टा नाम (म-सलन लम्बू, ठिंगू, कालू वग़ैरा) रखना भी हमारे मुआ़-शरे में बहुत मा'मूली तसव्वुर

किया जाता है बिल ख़ुसूस छोटे बच्चे इस में पेश पेश होते हैं ह़ालां कि इस से सामने वाले को तक्लीफ़ पहुंचती है और येह मम्नूअ़ है।

रब तआ़ला फ़रमाता है :

وَلَا تَنَابَزُوْا بِالْاَلْقَابِ ؕ بِئْسَ الِاسْمُ الْفُسُوْقُ بَعْدَ الْاِیْمَانِ (پ۲۶،الحجرات:۱۱)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और एक दूसरे के बुरे नाम न रखो क्या ही बुरा नाम है मुसल्मान हो कर फ़ासिक़ कहलाना।

**सदरुल अफ़ाज़िल** ह़ज़रते मौलाना सय्यिद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयत के तह़्त लिखते हैं :

''बा'ज़ उ-लमा ने फ़रमाया कि इस से वोह अल्क़ाब मुराद हैं जिन से मुसल्मान की बुराई निकलती हो और उस को ना गवार हो लेकिन ता'रीफ़ के अल्क़ाब जो सच्चे हों मम्नूअ़ नहीं जैसे कि ह़ज़रते अबू बक्र का लक़ब अ़तीक़ (या'नी आज़ाद) और ह़ज़रते उ़म्र का फ़ारूक़ (या'नी फ़र्क़ करने वाला) और ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी का ज़ुन्नूरैन (दो नूरों वाला) और ह़ज़रते अ़ली का अबू तुराब (तुराब मिट्टी को कहते हैं) और ह़ज़रते ख़ालिद का सैफ़ुल्लाह (या'नी अल्लाह की तलवार) رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم और जो अल्क़ाब ब मन्ज़िलए इ़ल्म (या'नी नाम के क़ाइम मक़ाम) हो गए और साहि़बे अल्क़ाब को ना गवार नहीं वोह अल्क़ाब भी मम्नूअ़ नहीं जैसे कि **आ'मश** (या'नी चुन्धी आंखों वाला) **आ'रज** (लंगडा)''

## (3) तमस्ख़ुर (मज़ाक़ उड़ाना) :

**तमस्ख़ुर** से मुराद येह है कि किसी को घटिया या ह़क़ीर

जानते हुए उस के किसी क़ौल या फ़े'ल वग़ैरा को बुन्याद बना कर उस की तोहीन की जाए और येह ह़राम है। (حدیقہ ندیہ، ج۲،ص۲۲۹)

**अपने** बच्चों को इस फ़े'ले बद से बचाइये। रब तआ़ला फ़रमाता है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا يَسْخَرْ قَوْمٌ مِّنْ قَوْمٍ عَسٰۤى اَنْ يَّكُوْنُوْا خَيْرًا مِّنْهُمْ وَلَا نِسَآءٌ مِّنْ نِّسَآءٍ عَسٰۤى اَنْ يَّكُنَّ خَيْرًا مِّنْهُنَّ ۚ

(پ۲۶،الحجرات:۱۱)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ ईमान वालो ! न मर्द मर्दों से हंसें अ़जब नहीं कि वोह इन हंसने वालों से बेहतर हों और न औ़रतें औ़रतों से, दूर नहीं कि वोह इन हंसने वालियों से बेहतर हों।

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "लोगों से इस्तिह़ज़ा करने वालों के लिये रोज़े क़ियामत जन्नत का एक दरवाज़ा खोल कर कहा जाएगा "यहां आ जाओ।" जब वोह परेशानी के आ़लम में दरवाज़े की त़रफ़ दौड़ कर आएंगे तो दरवाज़ा बन्द कर दिया जाएगा। येह अ़मल बार बार किया जाएगा यहां तक कि फिर उन में से एक के लिये दरवाज़ा खोला जाएगा और उसे बुलाया जाएगा लेकिन वोह ना उम्मीद होने की वजह से नहीं आएगा।"

(شعب الایمان، باب فی تحریم اعراض الناس، الحدیث ۶۷۵۷، ج۵،ص۳۱۰)

## (4) ऐ़ब उछालना :

**किसी** का ऐ़ब मा'लूम हो जाने पर उसे किसी दूसरे पर ज़ाहिर करने की बजाए ख़ामोशी इख़्तियार करना बहुत कम लोगों को नसीब होता है। बद क़िस्मती से अक्सरिय्यत ऐसे लोगों की है कि जब तक हर जानने वाले पर उस ऐ़ब को बयान न कर लें उन्हें चैन नहीं

आता। इस बुरी आ़दत के अ-सरात से बच्चे भी नहीं बच पाते और अपने बड़ों के नक़्शे क़दम पर चलने का ह़क़ अदा करने की कोशिश करते हैं। वालिदैन को चाहिये कि अपने बच्चों के सामने इस आ़दते क़बीह़ा की मज़म्मत बयान कर के उन्हें इस से बचाने की भरपूर कोशिश करें।

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो अपने भाई की पर्दा पोशी करेगा अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन उस का पर्दा रखेगा और जो अपने भाई के राज़ खोलेगा तो अल्लाह तआ़ला उस के राज़ खोल देगा यहां तक कि वोह अपने घर ही में रुस्वा हो जाएगा।" (سنن ابن ماجہ، کتاب الحدود، الحدیث ۲۵۴۶، ج۳، ص۲۱۹)

शैख़ सा'दी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "मैं बचपन में अपने वालिदे मोह़तरम की मइ़य्यत में शब बेदारी में मसरूफ़ था और क़ुरआने पाक की तिलावत कर रहा था। हमारे अत़राफ़ में कुछ लोग सोए हुए थे। मैं ने अपने वालिद से कहा : "इस जमाअ़त में एक भी ऐसा नहीं जो बेदार होता कि दो रक्अ़त नमाज़ अदा कर ले, इस त़रह़ सोए हुए हैं कि गोया मर चुके हैं।" येह सुन कर मेरे वालिदे मोह़तरम ने जवाब दिया : "ऐ बाप की जान! अगर तू भी सो जाता तो इस से बेहतर था कि लोगों की ऐ़ब जूई करता।" (ह़िकायाते गुलिस्ताने सा'दी, ह़िकायत नम्बर 48, स. 75)

## (5) तकब्बुर :

ख़ुद को दूसरों से अफ़्ज़ल समझना तकब्बुर कहलाता है। (مفردات امام راغب، ص۶۹۷) और तकब्बुर ह़राम है।

(حدیقہ ندیہ، ج۱، ص۵۴۳، ۵۴۴)

येह बात अपनी औलाद के दिल में बिठा दीजिये कि सब मुसल्मान बराबर हैं किसी मुसल्मान को दूसरे मुसल्मान पर परहेज़ गारी के सिवा कोई बरतरी नहीं है और येह कि ग़रीब बच्चे भी तुम्हारे इस्लामी भाई हैं इस लिये उन्हें ह़क़ीर मत जानो।

## (6) झूट बोलना :

ख़िलाफ़े वाक़ेअ़ बात करने को "झूट" कहते हैं।

(حدیقه ندیه، ج٢،ص٢٠٠)

हमारे मुआ़-शरे में झूट इतना आ़म हो चुका है कि अब इसे مَعَاذَاللهِ عَزَّوَجَلَّ बुराई ही तसव्वुर नहीं किया जाता। ऐसे ह़ालात में बच्चों का इस से बचना बहुत दुश्वार है। अपने बच्चों के ज़ेह्न में बचपन ही से झूट के ख़िलाफ़ नफ़्रत बिठा दें ताकि वोह बड़े होने के बा'द भी सच बोलने की आ़दते पाकीज़ा इख़्तियार किये रहें।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जब बन्दा झूट बोलता है तो फ़िरिश्ता उस की बदबू से एक मील दूर हो जाता है।"

(جامع الترمذی، کتاب البر والصلة، باب ماجاء فی الصدق والکذب، الحدیث١٩٧٩، ج٣، ص٣٩٢)

## (7) ग़ीबत :

ग़ीबत से मुराद येह है कि अपने ज़िन्दा या मुर्दा मुसल्मान भाई की अ़दम मौजू-दगी में उस के पोशीदा उ़यूब को (जिन का दूसरों के सामने ज़ाहिर होना उसे ना पसन्द हो) उस की बुराई के त़ौर पर ज़िक्र किया जाए, और अगर वोह बात उस में मौजूद न हो तो इसे बोहतान कहते हैं। म-सलन, "मुझे बे वुक़ूफ़ बना रहा था," "उस की निय्यत ख़राब है", "डिरामा बाज़ है" वग़ैरा।

(माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, हि़स्सा : 16, स. 645)

ग़ीबत वोह ख़तरनाक मरज़ है कि शायद ही कोई मजलिस इस से मह़फ़ूज़ रहती हो। जहां दो आदमी इकट्ठे हुए और तीसरे का ज़िक्र हुवा तो उस से मु-तअ़ल्लिक़ गुफ़्त-गू का इख़्तिताम उस की बुराइयां करने पर होता है। अपने बच्चों को ग़ीबत की नुहूसत से बचाइये।

सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जब मुझे मे'राज करवाई गई तो मैं ऐसे लोगों के पास से गुज़रा जिन के नाख़ुन तांबे के थे और वोह उन के साथ अपने चेहरों और सीनों को नोचते थे।" मैं ने पूछा : "ऐ जिब्राईल ! येह लोग कौन हैं ?" अ़र्ज़ की : "येह ऐसे आदमी हैं जो लोगों की ग़ीबत करते और उन की बे इ़ज़्ज़ती करते थे।"

(سنن ابی داود، کتاب الھبات، باب فی الغیبۃ، الحدیث ۴۸۷۸، ج۴، ص ۳۵۳)

## (8) ला'नत :

ला'नत से मुराद किसी को अल्लाह की रह़मत से दूर कहना है। यक़ीन के साथ किसी पर भी ला'नत करना जाइज़ नहीं चाहे वोह काफ़िर हो या मोमिन, गुनहगार हो या फ़रमां बरदार क्यूं कि किसी के ख़ातिमे का ह़ाल कोई नहीं जानता। (حدیقہ ندیہ، ج۲، ص ۲۳۰)

फ़तावा र-ज़विय्या में है कि "ला'नत बहुत सख़्त चीज़ है, हर मुसल्मान को इस से बचाया जाए बल्कि काफ़िर पर भी ला'नत जाइज़ नहीं जब तक उस का कुफ़्र पर मरना क़ुरआनो ह़दीस से साबित न हो।" (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 21, स. 222)

हमारे मुआ़-शरे में बात बे बात ला'नत मलामत करने का मरज़ भी आ़म है इस के अ-सरात से बच्चे भी बच नहीं पाते वालिदैन को चाहिये कि अपने बच्चों को इस के मुज़िर अ-सरात से बचाएं। ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ह़ाक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "किसी मोमिन पर ला'नत करना उसे क़त्ल करने के मु-तरादिफ़ है।" (صحیح البخاری، کتاب الایمان والنذور، باب من حلف بملۃ سوی ملۃ الاسلام الحدیث ۶۶۵۲، ج ۴، ص ۳۸۹)

## (9) चोरी :

बचपन की आ़दत बहुत मुश्किल से छूटती है। इस लिये बच्चे घर की छोटी मोटी चीज़ें चुरा कर खा जाते हैं या किसी के घर से चुरा लाते हैं अगर उन्हें मुनासिब तम्बीह न की जाए तो इस के नताइज इन्तिहाई ख़त़रनाक होते हैं। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "चोर पर अल्लाह तआ़ला ने ला'नत फ़रमाई है।" (صحیح مسلم، کتاب الحدود، باب حد السرقۃ ونصابھا، الحدیث ۱۶۸۷، ص ۹۲۶)

## (10) बुग़्ज़ व कीना :

चूंकि बच्चों को क़ल्बी ख़यालात के अच्छे या बुरे होने का इ़ल्म नहीं होता इस लिये दिल में जो आता है वोह करते चले जाते हैं और दूसरे पर अपने दिली जज़्बात का इज़्हार भी कर देते हैं। चुनान्चे उन के दिल में किसी का बुग़्ज़ बैठ जाना ना मुम्किन नहीं लेकिन ज़ाहिर है कि येह कोई अच्छी चीज़ नहीं है इस लिये बच्चों को इस से मु-तअ़ल्लिक़ भी मा'लूमात दीजिये और बचने का ज़ेह्न बनाइये। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि सरकारे मदीना, फ़ैज़ गन्जीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने

फ़रमाया : ''बन्दों के आ'माल हर हफ़्ते में दो मरतबा पेश किये जाते हैं, पीर और जुमा'रात को । पस हर बन्दे की मग़्फ़िरत हो जाती है सिवाए उस के जो अपने किसी मुसल्मान भाई से बुग़्ज़ो कीना रखता है, उस के मु-तअ़ल्लिक़ हुक्म दिया जाता है कि इन दोनों को छोड़े रहो (या'नी फ़िरिश्ते इन के गुनाहों को न मिटाएं) यहां तक कि वोह आपस की अ़दावत से बाज़ आ जाएं ।''

(صحیح مسلم، کتاب البر والصلۃ والآداب، باب النھی عن الشحناء والتھاجر، الحدیث ۲۵۶۵، ص ۱۳۸۸)

## (11) ह़सद :

येह तमन्ना करना कि किसी की ने'मत उस से ज़ाइल हो कर मुझे मिल जाए ''ह़सद'' कहलाता है । (لسان العرب، ج ۱، ص ۸۲۶) ह़सद करना बिल इत्तिफ़ाक़ ह़राम है । (حدیقہ ندیہ، ج ۲، ص ۶۰۰)

अपने बच्चों को ह़सद से बचाइये । लेकिन अगर येह तमन्ना है कि वोह ख़ूबी मुझे भी मिल जाए और उसे भी ह़ासिल रहे रश्क कहलाता है और येह जाइज़ है । ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''अपने आप को ह़सद से बचाओ कि ह़सद नेकियों को इस त़रह़ खा जाता है जिस त़रह़ आग लकड़ियों को खा जाती है ।'' (سنن ابی داود، کتاب الادب، باب فی الحسد، الحدیث ۴۹۰۳، ج ۴، ص ۳۶۰)

## (12) बातचीत बन्द करना :

हमारे मुआ़-शरे में मा'मूली वुजूहात की बिना पर तर्के तअ़ल्लुक़ात करने और बातचीत बन्द कर देने में कोई क़बाह़त मह़सूस नहीं की जाती । ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि सरकारे मदीना, फ़ैज़ गन्जीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم

ने फ़रमाया : "किसी मुसल्मान के लिये येह जाइज़ नहीं कि वोह तीन दिन से ज़ियादा किसी मुसल्मान को छोड़ रखे । अगर तीन दिन गुज़र जाएं तो उसे चाहिये कि अपने भाई से मिल कर सलाम करे । अगर वोह सलाम का जवाब दे दे तो (मुसा-लहत के) सवाब में दोनों शरीक हैं और अगर सलाम का जवाब न दे तो जवाब न देने वाला गुनहगार हुवा और सलाम करने वाला तर्के तअ़ल्लुक़ात के गुनाह से बरी हो गया ।"

(سنن ابی داود، کتاب الادب، باب فیمن یھجر اخاہ المسلم، الحدیث۴۹۱۲، ج۴، ص۳۶۳)

## (13) गाली देना :

किसी को गाली देता देख कर बच्चे भी इसी अन्दाज़ को अपनाने की कोशिश करते हैं । उन्हें इस की हलाकतों से आगाह कर के बचने की ताकीद करें । ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि सरवरे कौनैन, हम ग़रीबों के दिल के चैन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "मुसल्मान को गाली देना ख़ुद को हलाकत में डालने के मु-तरादिफ़ है ।" (الترغیب والترھیب، کتاب الادب، باب الترھیب من السباب...الخ، الحدیث۴۳۶۳، ج۳، ص۳۷۷)

## (14) वा'दा ख़िलाफ़ी :

नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो किसी मुसल्मान से अ़ह्द शिकनी करे, उस पर अल्लाह तआ़ला, फ़िरिश्तों और तमाम इन्सानों की ला'नत है और उस का कोई फ़र्ज़ क़बूल न होगा न नफ़्ल ।"

(صحیح البخاری، کتاب فضائل المدینۃ، باب حرم المدینۃ، الحدیث۱۸۷۰، ج۱، ص۶۱۶)

**अपने** बच्चों को वा'दा ख़िलाफ़ी से बचने की तरबिय्यत दीजिये । वा'दा ख़िलाफ़ी आज हमारे हां कोई बड़ी बात नहीं समझी जाती । बद अ़हदी (या'नी पूरा न करने) की निय्यत से वा'दा करना

ह़राम है । अक्सर उ़-लमा के नज़्दीक पूरा करने की निय्यत से वा'दा किया तो उस का पूरा करना मुस्तह़ब है और तोड़ना मक्रूहे तन्ज़ीही है । (حديقه نديه، ج١، ص٦٥٦)

अगर किसी से कोई काम करने का वा'दा किया और वा'दा करते वक़्त निय्यत में फ़रेब न हो फिर बा'द में उस काम को करने में कोई ह़रज पाया जाए तो इस वजह से उस काम को न करना वा'दा ख़िलाफ़ी नहीं कहलाएगा, हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهعَلَيْهِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं, ''वा'दा ख़िलाफ़ी येह नहीं कि आदमी वा'दा करे और उस की निय्यत उसे पूरा करने की भी हो बल्कि वा'दा ख़िलाफ़ी येह है कि आदमी वा'दा करे और उस की निय्यत उसे पूरा करने की न हो ।''

(माख़ूज़ अज़ फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 10, ह़िस्सए अव्वल, स. 89)

## (15) आतश बाज़ी :

अफ़्सोस ! आज आतश बाज़ी में कोई ह़रज नहीं समझा जाता बल्कि शा'बान के अय्याम में तो हर अ़लाक़ा गोया मैदाने जंग नज़र आता है । जगह जगह पटाख़े फोड़े जा रहे होते हैं और फुल-झड़ियां छोड़ी जा रही होती हैं । आतश बाज़ी मम्नूअ़ है अपने बच्चों को इस से बचाइये । ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان लिखते हैं :

''आतश बाज़ी के मु-तअ़ल्लिक़ मश्हूर येह है कि येह नमरूद बादशाह ने ईजाद की जब कि उस ने ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام को आग में डाला और आग गुलज़ार हो गई तो उस के आदमियों ने आग के अनार भर कर उन में आग लगा कर ह़ज़रते ख़लीलुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की त़रफ़ फेंके ।'' (इस्लामी ज़िन्दगी, स. 77)

## (16) पतंग बाज़ी :

पतंग बाज़ी के नुक़्सानात का ए'तिराफ़ वोह लोग भी करते हैं जो इस में कोई ह़रज नहीं समझते । सालाना करोड़ों रुपै इस मन्हूस शौक़ की भेंट चढ़ा दिये जाते हैं । कटी पतंग पकड़ने की कोशिश में मु-तअ़द्दद बच्चे व नौ जवान छत से गिर कर या किसी गाड़ी से टकरा कर उ़म्र भर के लिये जिस्मानी मा'ज़ूरी को अपने गले लगा लेते हैं । समझदार वालिदैन को चाहिये कि अपने बच्चों को इस शौक़ की हवा भी न लगने दें ।

## (17) फ़िल्म बीनी :

फ़िल्में और डिरामे वग़ैरा देखना आज नौ जवानों की अक्सरिय्यत का महबूब मश्ग़ला बन चुका है । जो कुछ आंख देखती है दिमाग़ उस का असर क़बूल करता है । येही वजह है कि आज जराइम बहुत बढ़ गए हैं क्यूं कि ''नौ निहालाने क़ौम'' को डकेती, ज़िना बिलजब्र, गुन्डा गरदी वग़ैरा की तरबिय्यत के लिये किसी ''कोचिंग सेन्टर'' जाने की ज़रूरत नहीं पड़ती बल्कि येह तरबिय्यत इन्हें टी.वी, वी.सी.आर, डिश और केबल के ज़रीए घर बैठे मिल जाती है । जब इस नापाक मश्ग़ले के भयानक नताइज सामने आते हैं तो वालिदैन सर पीट कर रह जाते हैं । अक्सर वालिदैन बच्चों को ढाल बना कर घर में टी.वी लाने का ''ह़ीला'' करते हैं कि क्या करें जी बच्चे ज़िद कर रहे थे । ऐसे वालिदैन को सोचना चाहिये कि अगर आप की औलाद आप से जलते हुए चूल्हे पर बैठने या छत से छलांग लगाने का बोले तो क्या फिर भी आप उन की ज़िद के आगे हथियार डाल देंगे या समझदारी का मुज़ा-हरा करते हुए उन के मुत़ा-लबे को रद कर देंगे । अगर उन के मुत़ा-लबे के जवाब में चूल्हे पर बैठ जाना नादानी है तो आप ही फ़रमाइये कि टी.वी में

जिस क़िस्म के लोफ़र, ह़या बाख़्ता और तहज़ीब से कोसों दूर प्रोग्राम दिखाए जाते हैं क्या इन को देखने वाला मुस्तह़िक़े जन्नत क़रार पाएगा या दोज़ख़ का ह़क़दार, तो फिर टी.वी के मुआ़-मले में औलाद की ज़िद क्यूं मान ली जाती है ? अल्लाह तआ़ला हमें अ़क़्ले सलीम अ़ता फ़रमाए। (इस सिल्सिले में तफ़्सीली मा'लूमात के लिये अमीरे अहले सुन्नत के रसाइल ''टीवी की तबाह कारियां'' और ''गाने बाजे की होल नाकियां'' का मुत़ा-लआ़ कीजिये)

## बच्चों से यक्सां सुलूक कीजिये

**मां बाप** को चाहिये कि एक से ज़ाइद बच्चे होने की सूरत में उन्हें कोई चीज़ देने और प्यार मह़ब्बत और शफ़्क़त में बराबरी का उसूल अपनाएं। बिला वज्हे शर-ई किसी बच्चे बिल ख़ुसूस बेटी को नज़र अन्दाज़ कर के दूसरे को उस पर तरजीह़ न दें कि इस से बच्चों के नाज़ुक क़ुलूब पर बुग़्ज़ व ह़सद की तह जम सकती है जो उन की शख़्सी ता'मीर के लिये निहायत नुक़्सान देह है। मुअ़ल्लिमे अख़्लाक़ صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने हमें औलाद में से हर एक के साथ मसावी सुलूक करने की ताकीद फ़रमाई है। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना नो'मान बिन बशीर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि मेरे वालिद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने मुझे अपना कुछ माल दिया तो मेरी वालिदा ह़ज़रते अ़म्रह बिन्ते रवाह़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने कहा कि मैं उस वक़्त तक राज़ी न होउंगी जब तक कि आप इस पर रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को गवाह न कर लें। चुनान्चे मेरे वालिद मुझे शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्तर पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ले गए ताकि आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को मुझे दिये गए स-दक़े पर गवाह कर लें। सरवरे कौनैन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन से पूछा : ''क्या तुम ने अपने तमाम बेटों के साथ ऐसा ही किया है ?'' मेरे

वालिदे मोह़तरम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने अ़र्ज़ की : "नहीं ।" आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "अल्लाह तआ़ला से डरो और अपनी औलाद में इन्साफ़ करो ।" येह सुन कर वोह वापस लौट आए और वोह स-दक़ा वापस ले लिया ।"

(صحیح مسلم، کتاب الھبات، باب کراہیۃ تفضیل بعض الاولاد فی الھبۃ، الحدیث ۱۶۲۳، ص ۸۷۸)

शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़-ज़मत निशान है कि बेशक अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला पसन्द करता है कि तुम अपनी औलाद के दरमियान बराबरी का सुलूक करो ह़त्ता कि बोसा लेने में भी (बराबरी करो) ।

(کنز العمال، کتاب النکاح، باب فی العدل بین العطیۃ لھم، الحدیث ۴۵۳۴۲، ج ۱۶، ص ۱۸۵)

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है कि एक शख़्स ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ बैठा हुवा था कि इतने में उस का बच्चा आ गया । उस शख़्स ने अपने बेटे को बोसा दिया और फिर अपनी रान पर बिठा लिया । इसी दौरान उस की बच्ची भी आ गई जिसे उस ने अपने सामने बिठा लिया (या'नी न उस का बोसा लिया और न गोद में बिठाया) तो सरकारे मदीना صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "तुम ने इन दोनों के दरमियान बराबरी क्यूं न की ?"

(مجمع الزوائد، کتاب البر والصلۃ، باب ماجاء فی الاولاد، الحدیث ۱۳۴۸۹، ج ۸، ص ۲۸۶)

## यक त़रफ़ा राय सुन कर फ़ैसला न दीजिये

अगर कभी बच्चों में झगड़ा हो जाए तो एक फ़रीक़ की बात सुन कर कभी भी फ़ैसला न दीजिये क्यूं कि ह़क़ त-लफ़ी का क़वी इम्कान है, हो सकता है कि जिस की आप ने बात सुनी वोह ग़-लती पर हो इस लिये एह़तियात़ इसी में है कि फ़रीक़ैन (या'नी दोनों बच्चों) की बात सुन कर उन्हें सुल्ह़ पर आमादा करें ।

# अपनी औलाद की इस्लाह़ कीजिये

अगर बच्चा आग की त़रफ़ बढ़ रहा हो तो वालिदैन जब तक लपक कर अपने बच्चे को पकड़ न लें उन्हें चैन नहीं आता। मगर अफ़्सोस येही औलाद जब रब्बे करीम की ना फ़रमानियों में मुलव्वस हो कर जहन्नम की त़रफ़ तेज़ी से बढ़ने लगती है, वालिदैन के कान पर जूं तक नहीं रेंगती। बच्चा अगर स्कूल से छुट्टी कर ले तो उसे ठीक ठाक डांट पिलाई जाती है मगर अफ़्सोस नमाज़ न पढ़ने पर उसे सर-ज़निश नहीं की जाती।

इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत अश्शाह मौलाना अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की बारगाह में किसी ने इस्तिफ़्ता पेश किया कि "वालिदैन का ह़क़, औलादे बालिग़ को तम्बीहे ख़ैर वाजिब है या फ़र्ज़?" इस का जवाब देते हुए आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने इर्शाद फ़रमाया : "जो हुक्म फ़े'ल का है वोही उस पर आगाही देनी है, फ़र्ज़ पर फ़र्ज़, वाजिब पे वाजिब, सुन्नत पे सुन्नत, मुस्तह़ब पे मुस्तह़ब। मगर बशर्ते क़ुदरत ब क़दरे क़ुदरत ब उम्मीदे मन्फ़अ़त वरना

عَلَيْكُمْ اَنْفُسَكُمْ ج لَايَضُرُّكُمْ مَّنْ ضَلَّ اِذَا اهْتَدَيْتُمْ (پ۷،سورۃ المائدۃ:۱۰۵)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** तुम अपनी फ़िक्र रखो तुम्हारा कुछ न बिगाड़ेगा जो गुमराह हुवा जब कि तुम राह पर हो।"

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 24, स. 371)

**लेकिन** औलाद की इस्लाह़ का अन्दाज़ ऐसा होना चाहिये कि उन की इस्लाह़ भी हो जाए और वोह वालिदैन से बाग़ी भी न हों। इस लिये जब भी बच्चे को समझाएं तो नर्मी से समझाएं। बच्चों के जज़्बात बहुत नाज़ुक होते हैं। बा'ज़ वालिदैन की आ़दत होती है कि ज़ूंही बच्चे ने कोई ग़-लती की वोह उस के एह़सासात का ख़याल किये बिग़ैर कोसना शुरूअ़ कर देते हैं। इस से बच्चे एह़सासे कमतरी का

शिकार हो जाते हैं और वालिदैन को अपना मुख़ालिफ़ समझना शुरूअ़ कर देते हैं। ऐसा न किया जाए बल्कि बच्चों की ग़-लत़ी मुस्बत और नर्म अन्दाज़ में उन पर आशकार की जाए ताकि वोह अपने आप को क़ैदी तसव्वुर न करें और समझाने वाले को अपना ख़ैर ख़्वाह और हमदर्द समझें । उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''नर्मी जिस चीज़ में होती है उसे ज़ीनत बख़्शती है और जिस चीज़ से नर्मी छीन ली जाती है उसे ऐबदार कर देती है।'' (صحیح مسلم، کتاب البر والصلۃ، باب فضل الرفق، الحدیث ۲۵۹۴، ص ۱۳۹۸)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''जिसे नर्मी में से ह़िस्सा दिया गया उसे भलाई में से ह़िस्सा दिया गया और जो नर्मी के ह़िस्से से मह़रूम रहा वोह भलाई में से अपने ह़िस्से से मह़रूम रहा।''

(جامع الترمذی، کتاب البر والصلۃ، باب ماجاء فی الرفق، الحدیث ۲۰۲۰، ج ۳، ص ۴۰۸)

**बा'ज़ माओं** की आ़दत होती है कि बच्चों को समझाते वक़्त मुख़्तलिफ़ धम्कियों से नवाज़ती हैं म-सलन अब अगर तुम ने ऐसा किया तो मैं तुम्हें जंगल में छोड़ आऊंगी वग़ैरा। ऐसा न कीजिये बच्चे का ना पुख़्ता ज़ेह्न इस का बहुत ग़लत़ असर क़बूल करता है और नतीजतन वोह भी जवाबी धम्कियों पर उतर आता है और संभलने की बजाए बिगड़ता चला जाता है। बच्चे को कभी भी आनन फ़ानन ग़ुस्से में सज़ा न दीजिये बल्कि उस की ग़-लत़ी सामने आने पर सोचिये कि मुझे इसे किस त़रह़ समझाना चाहिये फिर उस ह़िक्मते अ़-मली को इख़्तियार करते हुए उसे समझाइये । सब के सामने न झाड़िये बच्चा बहुत सुब्की मह़सूस करता है लिहाज़ा ! ह़त्तल इम्कान उसे तन्हाई ही में समझाएं اِنۡ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ मुस्बत नताइज बरआमद होंगे । बा'ज़ माएं

अपनी औलाद की बार बार की ग़-लती पर बद दुआ़ दे डालती हैं फिर जब येह बद दुआ़एं अपना असर दिखाती हैं तो येही माएं मुसल्ला बिछा कर बैठ जाती हैं। इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِی मुका-श-फ़तुल कुलूब में नक़्ल करते हैं कि एक आदमी ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और अपने बच्चे की शिकायत की। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "क्या तुम ने उस के ख़िलाफ़ बद दुआ़ की है ?" उस ने कहा : "हां।" फ़रमाया : "तुम ने खुद ही उसे बरबाद कर दिया है, बच्चे के साथ नर्मी इख़्तियार करना ही अच्छा काम है।"

(مکاشفۃ القلوب، الباب التاسع والثمانون، فی برالوالدین وحقوق الاولاد، ص۲۸۰)

एक बार की ग़-लती पर बच्चे को मुख़्तलिफ़ अल्क़ाबात म-सलन मक्कार, चोर, झूटा वग़ैरा से नवाज़ने वाले वालिदैन सख़्त ग़-लती पर हैं। इन अल्क़ाबात की तकरार से बच्चा येह सोचता है जब मुझे येह लक़ब मिल ही गया है तो मैं क्यूं न इस काम को कामिल त़रीक़े से करूं। फिर वोह उसी लक़ब का ह़क़ीक़ी मुस्तह़िक़ बन कर दिखाता है।

अगर नर्मी के बा वुजूद बच्चा किसी ग़-लती को बार बार करता है तो मुक़्तज़ाए ह़िक्मत येह है कि उसे ज़रा सख़्ती से समझाया जाए अगर फिर भी बाज़ न आए तो हलकी सज़ा देने में कोई मुज़ा-यक़ा नहीं है। ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ रिवायत करते हैं कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़-ज़मत निशान है कि अल्लाह तआ़ला उस बन्दे पर रह़्म फ़रमाए जो अपने घर में कोड़ा लटकाए जिस से उस के अह्ल अदब सीखें।

(کنزالعمال، کتاب النکاح، تربیۃ اہل بیت، الاکمال، الحدیث۴۴۹۹۰، ج۱۶، ص۱۵۹)

**लेकिन अगर सज़ा देनी पड़े** तो हाथ से दे, इतनी ज़र्ब लगाए कि बच्चा उसे बरदाश्त कर सके और चेहरे पर मारने से बचे। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जब तुम में से कोई मारे तो उसे चाहिये कि चेहरे पर मारने से बचे।"

(سنن ابی داؤد، کتاب الحدود، باب فی ضرب الوجہ، الحدیث ۴۴۹۳، ج ۴، ص ۲۲۲)

मुला-ह़ज़ा हो कि हमारे बुज़ुर्गाने दीन عَلَیْہِم رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمُبِیْن अपनी औलाद को अदब सिखाने में किस क़दर मुस्तइ़द रहा करते थे चुनान्चे इमामे जलील ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन फ़ज़्ल رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने दौराने ता'लीम कभी बाज़ार से खाना नहीं खाया। उन के वालिद हर जुमुआ़ को अपने गाउं से उन के लिये खाना ले आते थे। एक मरतबा जब वोह खाना देने आए तो उन के कमरे में बाज़ार की रोटी रखी देख कर सख़्त नाराज़ हुए और अपने बेटे से बात तक नहीं की। साह़िब ज़ादे ने मा'ज़िरत करते हुए अ़र्ज़ की : "अब्बाजान ! येह रोटी बाज़ार से मैं नहीं लाया, मेरा रफ़ीक़ मेरी रिज़ा मन्दी के बिग़ैर ख़रीद कर लाया है।" वालिद साह़िब ने येह सुन कर डांटते हुए फ़रमाया : "अगर तुम्हारे अन्दर तक़्वा होता तो तुम्हारे दोस्त को कभी भी येह जुरअत न होती।"

(تعلیم المتعلم طریق التعلم، ص ۶۷)

**वज़ाह़त :** इमाम ज़रनोजी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "अगर मुम्किन हो तो ग़ैर मुफ़ीद और बाज़ारी खाने से परहेज़ करना चाहिये क्यूं कि बाज़ारी खाना इन्सान को ख़ियानत व गन्दगी के क़रीब और ज़िक्रे ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ से दूर कर देता है। इस की वजह येह है कि बाज़ार के खानों पर गु-रबा और फ़ु-क़रा की नज़रें भी पड़ती हैं और वोह अपनी ग़ुर्बतो इफ़्लास की बिना पर जब उस खाने को नहीं ख़रीद सकते तो दिल बरदाश्ता हो जाते हैं और यूं उस खाने से ब-र-कत उठ जाती है।"

(تعلیم المتعلم طریق التعلم، ص ۸۸)

# अपनी औलाद को ना फ़रमानी से बचाइये

**औलाद** पर वालिदैन की इताअ़त वाजिब है। इस लिये अगर वोह वालिदैन का हुक्म नहीं मानेंगे तो गुनाहगार होंगे। अपनी औलाद को मुब्तलाए गुनाह होने से बचाने का ज़ेहन रखने वाले वालिदैन को चाहिये कि जब भी अपनी औलाद को कोई काम कहें मश्वरतन कहें हुक्म न दें। तम्बीहुल ग़ाफ़िलीन में है कि एक बुज़ुर्ग अपने बच्चे को बराहे रास्त कोई काम नहीं कहते थे बल्कि जब ज़रूरत पेश आती तो किसी और के ज़रीए कहलवाते। जब उन से इस का सबब पूछा गया तो फ़रमाने लगे : "हो सकता है कि मैं अपने बेटे को किसी काम का कहूं और वोह न माने तो (वालिद की ना फ़रमानी के सबब) आग का मुस्तहिक़ हो जाए और मैं अपने बेटे को आग में नहीं जलाना चाहता।" (تنبیہ الغافلین، باب حق الوالد علی الولد، ص ٦٩)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिर र-ज़वी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی का म-दनी ज़ेहन मुला-ह़ज़ा हो कि आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं कि मैं अपनी औलाद को उ़मूमन जो भी काम कहता हूं मश्वरतन कहता हूं ताकि येह ना फ़रमानी कर के गुनहगार न हों।

# हौसला अफ़ज़ाई कीजिये

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه कीमियाए सआ़दत में फ़रमाते हैं "जब बच्चा अच्छा काम करे और ख़ुश अख़्लाक़ बने तो उस की ता'रीफ़ करें और उस को ऐसी चीज़ दें जिस से उस का दिल ख़ुश हो जाए। और अगर मां बच्चे को बुरा काम करते देख ले तो उसे चाहिये कि तन्हाई में समझाए और बताए कि येह काम बुरा है, अच्छे और नेक बच्चे ऐसा नहीं करते।"

(کیمیائے سعادت، رکن سوم، مہلکات، اصل اول ریاضت نفس، ص ٥٣٢)

## खेलने का मौक़अ़ भी दीजिये

जामेए़ सग़ीर में है : عرامة الصبی فی صغرہ زیادۃ فی عقلہ فی کبرہ या'नी ''बच्चे का बचपन में शोख़ी और खेलकूद करना, जवानी में उस के अ़क़्ल मन्द होने की अ़लामत है।'' (الجامع صغیر، الحدیث ۵۴۱۳، ص ۳۳۵)

ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا से मरवी है कि ईद के दिन कुछ ह़ब्शी बच्चे ढाल और नेज़ों से खेलकूद कर रहे थे। नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें देखा तो इर्शाद फ़रमाया : ''ऐ ह़ब्शी बच्चो ! खेलते रहो ताकि यहूदो नसारा जान लें कि हमारे दीन में वुस्अ़त है।''

(کنز العمال، کتاب اللھو واللعب، الحدیث ۴۰۶۱۰، ج ۱۵، ص ۹۲)

लेकिन ख़याल रहे कि हर खेल जाइज़ नहीं होता, इस लिये बच्चों को सिर्फ़ जाइज़ खेल खेलने की इजाज़त दी जाए, ना जाइज़ खेल की त़रफ़ तो रुख़ भी न करने दिया जाए।

## बुरी सोह़बत से बचाइये

वालिदैन मुशा-हदा करते रहें कि उन का बच्चा किस क़िस्म के बच्चों में उठता बैठता है। अगर उस के क़रीब जम्अ़ होने वालों में बुरी आ़दात पाई जाती हैं या वोह गुमराह कुन अ़क़ाइद रखते हैं तो शफ़्क़त व नर्मी के साथ बच्चे को ऐसे बच्चों से मिलने से रोकें और उसे अच्छे साथी और ख़ुश अ़क़ीदा हम नशीन मुहय्या करें क्यूं कि हर सोह़बत अपना असर रखती है। प्यारे आक़ा, मक्की म-दनी सुल्त़ान, रह़मते आ़-लमिय्यान صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, ''अच्छे और बुरे मुसाह़िब की मिसाल, मुश्क उठाने वाले और भट्टी झोंकने वाले की

त़रह़ है, कस्तूरी उठाने वाला तुम्हें तोह़फ़ा देगा या तुम उस से ख़रीदोगे या तुम्हें उस से उ़म्दा ख़ुश्बू आएगी, जब कि भट्टी झोंकने वाला या तुम्हारे कपड़े जलाएगा या तुम्हें उस से ना गवार बू आएगी।''

(صحیح المسلم، کتاب البر والصلۃ والآداب، باب استحباب مجالسۃ الصالحین..الخ، الحدیث ۲۶۲۸، ص ۱۴۱۴)

रसूले अकरम, शफ़ीए मुअ़ज़्ज़म صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं ''आदमी अपने गहरे दोस्त के दीन पर होता है, तो तुम में से हर एक देखे कि वोह किस को गहरा दोस्त बनाए हुए है।''

(سنن ابی داود، کتاب الادب، باب من یومران یجالس، الحدیث ۴۸۳۳، ج ۴، ص ۳۴۱)

## बच्चे बड़े हो जाएं तो बिस्तर अलग कर दीजिये

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल मलिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि रह़मते कौनैन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जब तुम्हारे बच्चे सात साल के हो जाएं तो उन के बिस्तर अलग अलग कर दो।''

(المستدرک، کتاب الصلوٰۃ، باب فی فضل الصلوات الخمس، الحدیث ۷۴۸، ج ۱، ص ۴۴۹)

## औलाद कब बालिग़ होती है ?

लड़का बारह साल और लड़की नव बरस से कम उ़म्र तक हरगिज़ बालिग़ व बालिग़ा न होंगे और लड़का लड़की दोनों पन्दरह बरस कामिल की उ़म्र में ज़रूर शरअ़न बालिग़ व बालिग़ा हैं, अगर्चे आसारे बुलूग़ कुछ ज़ाहिर न हों। इन उ़म्रों के अन्दर अगर आसार पाए जाएं, या'नी ख़्वाह लड़के ख़्वाह लड़की को सोते ख़्वाह जागते में इन्ज़ाल हो... या... लड़की को ह़ैज़ आए...या... जिमाअ़ से लड़का (किसी औ़रत को) ह़ामिला कर दे...या... (जिमाअ़ की वजह से) लड़की को ह़म्ल रह जाए तो यक़ीनन बालिग़ व बालिग़ा हैं। और अगर आसार

न हों, मगर वोह खुद कहें कि हम बालिग़ व बालिग़ा हैं और ज़ाहिर ह़ाल उन के क़ौल की तक्ज़ीब न करता (या'नी झुटलाता न) हो तो भी बालिग़ व बालिग़ा समझे जाएंगे और तमाम अह़काम, बुलूग़ के नफ़ाज़ पाएंगे और दाढ़ी मूंछ निकलना या लड़की के पिस्तान में उभार पैदा होना कुछ मो'तबर नहीं। (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 19, स. 930)

## बुज़ुर्गों की ह़िकायात सुनाइये

वालिदैन को अपने बच्चे पर कड़ी नज़र रखनी चाहिये कि वोह किस क़िस्म के रसाइल या किताबें पढ़ता है। कहीं वोह रूमानी नाविल या गुमराह कुन अ़क़ाइद पर मुश्तमिल बद मज़्हबों की किताबें पढ़ने का आ़दी तो नहीं। ऐसी सूरत में बच्चे को समझाने में देर न की जाए और उसे अपने अस्लाफ़ की ह़िकायात और सह़ीहुल अ़क़ीदा उ़-लमा की किताबें पढ़ने की तरग़ीब दिलाई जाए। बा'ज़ माएं या दादियां बच्चों को सोते वक़्त ख़ौफ़नाक कहानियां सुनाती हैं। जिस की "ब-र-कत" से बच्चे को डरावने ख़्वाब आना शुरूअ़ हो जाते हैं। ऐसी माओं को चाहिये कि बच्चों को बुज़ुर्गों की इस्लाह़ी ह़िकायात सुनाएं।

मुह़द्दिसे आ'ज़म पाकिस्तान ह़ज़रते मौलाना सरदार अह़मद क़ादिरी رَحْمَةُاللهِ تعالى عَلَيه को बचपन ही से अपने बुज़ुर्गों से वालिहाना अ़क़ीदत थी चुनान्चे आप स्कूल की ता'लीम के दौरान भी अपने उस्ताज़ से अ़र्ज़ किया करते थे :"मास्टर जी हमें बुज़ुर्गों की बातें सुनाइये और ह़ुज़ूर सरवरे काएनात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़याते त़य्यिबा पर ज़रूर रोशनी डाला कीजिये।"

(ह़याते मुह़द्दिसे आ'ज़म رَحْمَةُاللهِ تعالى عَلَيه, स. 32)

## मस्अला :

अ़जीबो ग़रीब क़िस्से कहानियां तफ़रीह़ के त़ौर पर सुनना जाइज़ है जब कि उन का झूटा होना यक़ीनी न हो बल्कि जो यक़ीनन झूट हों और बत़ौरे ज़र्बुल मसल या नसीह़त के त़ौर पर सुनाए जाते हों उन का सुनना भी जाइज़ है। (الدرالمختار، کتاب الحظر والاباحۃ، فصل فی البیع، ج۹، ص۶۶۷)

## औलाद जवान हो जाए तो जल्द शादी कर दीजिये

औलाद के जवान हो जाने पर वालिदैन की ज़िम्मादारी है कि उन की नेक और सालेह़ ख़ानदान में शादी कर दें। ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि सरवरे कौनैन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : अपने बेटों और बेटियों का निकाह़ करो, बेटियों को सोने और चांदी से आरास्ता करो और उन्हें उ़म्दा लिबास पहनाओ और माल के ज़रीए उन पर एह़सान करो ताकि उन में रग़बत की जाए (या'नी उन के लिये निकाह़ के पैग़ाम आएं)।

(کنز العمال، کتاب النکاح، احادیث متفرقہ، الحدیث ۴۵۴۲۴، ج۱۶، ص۱۹۱)

औलाद के जवान होने पर बिला वजह निकाह़ में ताख़ीर न की जाए। ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जिस के हां लड़के की विलादत हो उसे चाहिये कि उस का अच्छा नाम रखे और उसे आदाब सिखाए, जब वोह बालिग़ हो जाए तो उस की शादी कर दे, अगर बालिग़ होने के बा'द निकाह़ न किया और लड़का मुब्तलाए गुनाह हुवा तो इस का गुनाह वालिद के सर होगा।"

(شعب الایمان، باب فی حقوق الاولاد، الحدیث ۸۶۶۶، ج۶، ص۴۰۱)

हज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जब तुम्हें कुफ़ू मिल जाए तो तुम अपनी बच्चियों का निकाह़ उन से कर दो और बच्चियों के मुआ-मले में टाल मटोल (या'नी आज कल) मत करो।"

(کنز العمال، کتاب النکاح، الفصل الثانی فی الکفاءۃ، الحدیث ۴۴۶۸۶، ج۱۶، ص ۱۳۵)

**मदीना :** कुफ़ू का मा'ना येह है कि मर्द औ़रत से नसब वग़ैरा में इतना कम न हो कि उस से निकाह़ औ़रत के औलिया के लिये बाइसे नंगो आ़र हो। किफ़ाअत सिर्फ़ मर्द की जानिब से मो'तबर है औ़रत अगर्चे कम द-रजे की हो इस का ए'तिबार नहीं। किफ़ाअत में छ चीज़ों का ए'तिबार है नसब, इस्लाम, पेशा, हुर्रिय्यत, दियानत, माल।

(الفتاوی الھندیہ، کتاب النکاح، الباب الخامس فی الاکفاء، ج۱، ص ۲۹۰ تا ۲۹۱، والفتاوی رضویہ، ج۱۱، ص ۱۳۱))

**नबिय्ये अकरम** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का येह फ़रमाने आ़लीशान अपनी औलाद के निकाह़ में कोताही बरतने वालों के लिये ताज़ियानए इ़ब्रत है।

रिश्ता करते वक़्त उन्ही चीज़ों को मद्दे नज़र रखिये जो किताब के शुरूअ़ में दी गई हैं और मुनासिब ग़ौरो फ़िक्र के बा'द औलाद का रिश्ता तै़ कीजिये। सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "निकाह़ करना औ़रत को कनीज़ बनाना है, लिहाज़ा ग़ौर कर लेना चाहिये कि वोह अपनी बेटी को कहां बियाह रहा है।"

(السنن الکبریٰ، کتاب النکاح، باب الترغیب فی التزویج، ج۷، ص ۱۳۳)

रह़मते दो आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है "जिस ने अपनी बेटी का निकाह़ किसी फ़ासिक़ से किया उस ने क़त्ए़ रेह़्मी की।" (الکامل فی ضعفاء الرجال، الحسن بن محمد، ج۳، ص ۱۶۵)

## तलाशे रिश्ता :

हज़रते सय्यिदुना शैख़ किरमानी رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ शाही ख़ानदान से तअल्लुक़ रखते थे, लेकिन आप ने ज़ोहदो तक़्वा इख़्तियार फ़रमाया हुवा था और दुन्यावी मशाग़िल से बहुत दूर हो चुके थे। आप की एक साहिब ज़ादी थीं जो बहुत ह़सीनो जमील और नेक व परहेज़ गार थीं। एक दिन उस साहिब ज़ादी के लिये बादशाहे किरमान ने निकाह़ का पैग़ाम भेजा। आप येह पसन्द न फ़रमाते थे कि मलिका बन कर मेरी बेटी दुन्या की त़रफ़ माइल हो। इस लिये आप ने कहला भेजा कि मुझे जवाब के लिये तीन रोज़ की मोहलत दें।

इस दौरान आप मस्जिद मस्जिद घूम कर किसी सालेह़ इन्सान को तलाश करने लगे। दौराने तलाश एक लड़के पर आप की निगाह पड़ी जिस के चेहरे पर इ़बादत व परहेज़ गारी का नूर चमक रहा था। आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उस से पूछा : "तुम्हारी शादी हो चुकी है ?" उस ने नफ़ी में जवाब दिया। फिर पूछा : "क्या ऐसी लड़की से निकाह़ करना चाहते हो जो क़ुरआने मजीद पढ़ती है, नमाज़ रोज़ा की पाबन्द है, ख़ूब सूरत पाकबाज़ और नेक है।" उस ने कहा : "मैं तो एक ग़रीब शख़्स हूं भला मुझ से इन सिफ़ात की ह़ामिल लड़की का रिश्ता कौन करेगा ?" आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "मैं करता हूं, येह दराहिम लो और एक दिरहम की रोटी, एक दिरहम का सालन और एक दिरहम की ख़ुश्बू ख़रीद लाओ।"

नौ जवान वोह चीज़ें ले आया। आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपनी साहिब ज़ादी का निकाह़ उस पारसा नौ जवान के साथ कर दिया। साहिब ज़ादी जब रुख़्सत हो कर शोहर के घर आई तो उस ने देखा कि

घर में पानी की एक सुराह़ी के सिवा कुछ नहीं है और उस सुराह़ी पर एक रोटी रखी हुई देखी। पूछा : ''येह रोटी कैसी है?'' शोहर ने जवाब दिया : ''येह कल की बासी रोटी है, मैं ने इफ़्तार के लिये रख ली थी।'' येह सुन कर कहने लगीं कि मुझे मेरे घर छोड़ आइये। नौ जवान ने कहा : ''मुझे तो पहले ही अन्देशा था कि शैख़ किरमानी की दुख़्तर मुझ जैसे ग़रीब इन्सान के घर नहीं रुक सकती।'' लड़की ने पलट कर कहा : ''मैं आप की मुफ़्लिसी के बाइस नहीं लौट रही हूं बल्कि इस लिये कि मुझे आप का तवक्कुल कमज़ोर नज़र आ रहा है, इसी लिये मुझे अपने वालिद पर ह़ैरत है कि उन्हों ने आप को पाकीज़ा ख़स्लत, अ़फ़ीफ़ और सालेह़ कैसे कहा जब कि आप का अल्लाह तआ़ला पर भरोसे का येह ह़ाल है कि रोटी बचा कर रखते हैं।''

येह बातें सुन कर नौ जवान बहुत मु-तअस्सिर हुवा और नदामत का इज़्हार किया। लड़की ने फिर कहा : ''मैं ऐसे घर में नहीं रुक सकती जहां एक वक़्त की ख़ूराक जम्अ़ कर के रखी हो अब यहां मैं रहूंगी या रोटी.....'' येह सुन कर नौ जवान फ़ौरन बाहर निकला और रोटी ख़ैरात कर दी। (روض الریاحین، الحکایۃ الثانیۃ والتسعون بعد المائۃ، ص۱۹۲)

इस ह़िकायत से वोह वालिदैन दर्से इ़ब्रत ह़ासिल करें कि जब उन के सामने किसी नेक व परहेज़ गार इस्लामी भाई का रिश्ता पेश किया जाए तो सिर्फ़ इस वजह से इन्कार कर देते हैं कि वोह बा रीश और सुन्नतों का आ़मिल है जब कि इस के बर अ़क्स ऐसे नौ जवान के रिश्ते को तरजीह़ देने में ख़ुशी मह़सूस करते हैं जो अपने बुरे आ'माल से अल्लाह तआ़ला को नाराज़ कर के जहन्नम में जाने का सामान कर रहा हो और जिस की सोह़बत उन की बेटी को भी ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से बे नियाज़ और उस की इ़बादत से ग़ाफ़िल कर देगी।

## एक मां की नसीह़त :

ह़ज़रते अस्मा बिन्ते ख़ारिजा फ़ज़ारी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْهَا ने अपनी बेटी को निकाह़ करते वक़्त फ़रमाया : "बेटी तू एक घोंसले में थी, अब यहां से निकल कर ऐसी जगह (या'नी शोहर के घर) जा रही है, जिसे तू ख़ूब नहीं पहचानती, एक ऐसे साथी (या'नी शोहर) के पास जा रही है जिस से मानूस नहीं..... उस के लिये ज़मीन बन जा, वोह तेरे लिये आस्मान होगा,..... उस के लिये बिछोना बन जा वोह तुम्हारे लिये बाइ़से तक़्विय्यत सुतून होगा,..... उस के लिये कनीज़ बन जा वोह तेरा ग़ुलाम होगा,..... उस के किसी मुआ़-मले में चिमट न जा कि वोह तुम्हें परे हटा दे,..... उस से दूर न हो वरना वोह तुझे भुला देगा,..... अगर वोह तुझ से क़रीब हो तो तू उस से मज़ीद क़रीब हो जा और अगर वोह तुझ से हटे तो तू उस से दूर हो जा,..... उस के नाक, कान और आंख (या'नी हर त़रह़ के राज़) की ह़िफ़ाज़त कर कि वोह तुझ से सिर्फ़ तेरी ख़ुश्बू सूंघे (या'नी राज़ की ह़िफ़ाज़त और वफ़ादारी पाए।)..... वोह तुझ से सिर्फ़ अच्छी बात ही सुने और सिर्फ़ अच्छा काम ही देखे ।"

(مکاشفۃ القلوب، الباب الخامس والتسعون فی حق الزوج علی الزوجۃ، ص۲۹۳)

मज़्कूरा नसीह़तों से वोह माएं नसीह़तें ह़ासिल करें जो बच्चियों के घर को जन्नत बनाने के मश्वरे देने की बजाए शोहर, नन्दों और सास पर ह़ुकूमत करने के त़रीक़े सिखाती हैं । फिर जब बेटी उन क़ीमती मश्वरों पर अ़मल करने की कोशिश करती है तो फ़ितना व फ़साद बपा हो जाता है और दोनों घराने उस की लपेट में आ जाते हैं ।

अल्लाह तआ़ला हमें अपनी औलाद की म-दनी तरबिय्यत करने की तौफ़ीक़ मर्ह़मत फ़रमाए और इस किताब को हमारे लिये ज़ख़ीरए आख़िरत बनाए । اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَبَارَکَ وَسَلَّمَ

# ماخذ ومراجع

| نمبر شمار | کتاب کا نام | مصنف/مولف | مطبوعہ |
|---|---|---|---|
| 1 | قرآن پاک | کلام باری تعالیٰ | ضیاء القران لاہور |
| 2 | کنزالایمان فی ترجمۃ القران | اعلیٰحضرت امام احمد رضا خاں علیہ رحمۃ الرحمٰن | ضیاء القران لاہور |
| 3 | التفسیر الکبیر | امام فخر الدین رازی رحمۃ اللہ علیہ | داراحیاء التراث بیروت |
| 4 | التفسیر النسفی | امام احمد بن محمود النسفی رحمۃ اللہ علیہ | دار المعرفۃ بیروت |
| 5 | صحیح البخاری | امام محمد بن اسماعیل بخاری رحمۃ اللہ علیہ | دار الکتب العلمیہ بیروت |
| 6 | صحیح مسلم | امام ابوالحسین مسلم بن حجاج رحمۃ اللہ علیہ | دار ابن حزم بیروت |
| 7 | جامع الترمذی | امام محمد بن عیسیٰ ترمذی رحمۃ اللہ علیہ | دار الفکر بیروت |
| 8 | سنن ابی داود | امام ابوداود سلیمان بن اشعث رحمۃ اللہ علیہ | داراحیاء التراث بیروت |
| 9 | سنن ابن ماجہ | امام محمد بن یزید قزوینی رحمۃ اللہ علیہ | دار المعرفہ بیروت |
| 10 | موطا للامام مالک | امام مالک بن انس رحمۃ اللہ علیہ | دار المعرفہ بیروت |
| 11 | الجامع الصغیر | امام جلال الدین سیوطی رحمۃ اللہ علیہ | دار الکتب العلمیہ بیروت |
| 12 | مجمع الزوائد | نور الدین علی بن ابی بکر رحمۃ اللہ علیہ | دار الفکر بیروت |
| 13 | المعجم الکبیر | امام سلیمان احمد طبرانی رحمۃ اللہ علیہ | دار الکتب العلمیہ بیروت |
| 14 | کنز العمال | علامہ علاؤ الدین علی متقی بن حسام الدین | دار الکتب العلمیہ بیروت |
| 15 | المعجم الاوسط | امام سلیمان بن احمد رحمۃ اللہ علیہ | دار الفکر بیروت |
| 16 | سنن الدارمی | امام عبداللہ بن عبدالرحمٰن رحمۃ اللہ علیہ | باب المدینہ کراچی |
| 17 | المستدرک | امام ابوعبداللہ محمد بن محمد عبداللہ حاکم | دار المعرفہ بیروت |
| 18 | فردوس الاخبار | الحافظ شیرویہ بن شہر دار بن الدیلمی رحمۃ اللہ علیہ | دار الفکر بیروت |
| 19 | المسند للامام احمد بن حنبل | امام احمد بن حنبل رحمۃ اللہ علیہ | دار الفکر بیروت |
| 20 | شعب الایمان | امام احمد بن حسین بیہقی رحمۃ اللہ علیہ | دار الکتب العلمیہ بیروت |
| 21 | الترغیب والترھیب | امام عبدالعظیم بن القوی رحمۃ اللہ علیہ | دار الفکر بیروت |
| 22 | الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان | علاؤ الدین علی بن بلبان رحمۃ اللہ علیہ | دار الکتب العلمیہ بیروت |
| 23 | البحر الزخار | امام ابی بکر احمد بن عمرو البزار رحمۃ اللہ علیہ | دار الفکر بیروت |
| 24 | السنن الکبریٰ | امام ابی بکر احمد بن الحسین رحمۃ اللہ علیہ | دار الکتب العلمیہ بیروت |
| 25 | الادب المفرد | محمد بن اسماعیل البخاری رحمۃ اللہ علیہ | مدینۃ الاولیاء ملتان شریف |
| 26 | مسند ابی یعلی الموصلی | شیخ الاسلام ابی یعلی احمد بن علی رحمۃ اللہ علیہ | دار الکتب العلمیہ بیروت |
| 27 | الزھد الکبیر | حافظ ابوبکر احمد بن حسین البیہقی رحمۃ اللہ علیہ | موسسۃ الکتب الثقافیہ بیروت |
| 28 | مقاصد الحسنہ | شیخ محمد عبدالرحمٰن سخاوی رحمۃ اللہ علیہ | دار الکتب العربی بیروت |
| 29 | رد المحتار مع درمختار | علامہ علاؤ الدین محمد بن علی الحصکفی | دار المعرفہ بیروت |
| 30 | فتاوی عالمگیری | شیخ نظام الدین و جماعۃ من علماء الھند | دار المعرفہ بیروت |
| 31 | فتاویٰ رضویہ | اعلیٰحضرت امام احمد رضا خاں رحمۃ اللہ علیہ | مکتبہ رضویہ باب المدینہ کراچی |
| 32 | بہار شریعت | مفتی امجد علی اعظمی رحمۃ اللہ علیہ | مکتبہ رضویہ باب المدینہ کراچی |
| 33 | مکاشفۃ القلوب | امام ابی حامد محمد بن محمد غزالی رحمۃ اللہ علیہ | دار الکتب العلمیہ بیروت |
| 34 | تنبیہ الغافلین | امام محمد بن محمد غزالی رحمۃ اللہ علیہ | دار ابن کثیر بیروت |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 35 | انوار الحدیث | علامہ جلال الدین امجدی رحمۃ اللہ علیہ | ضیاء القرآن باب المدینہ کراچی |
| 36 | سنی بہشتی زیور | علامہ مفتی محمد خلیل خان قادری برکاتی | فرید بک سٹال لاہور |
| 37 | درۃ الناصحین | عثمان بن حسن بن احمد الشاکر الخوبری | دار الفکر بیروت |
| 38 | الیواقیت والجواہر | عبد الوھاب الشعرانی رحمۃ اللہ علیہ | نوریہ رضویہ پبلیکیشنز لاہور |
| 39 | کتاب التوابین | امام موفق الدین ابی محمد عبد اللہ رحمۃ اللہ علیہ | دار الکتب العلمیہ بیروت |
| 40 | کیمیائے سعادت | امام محمد بن محمد غزالی رحمۃ اللہ علیہ | کتب خانہ ہائی ایران |
| 41 | اشعۃ اللمعات | شیخ عبد الحق محدث دہلوی رحمۃ اللہ علیہ | باب المدینہ کراچی |
| 42 | مجموعہ رسائل غزالی | امام محمد غزالی رحمۃ اللہ علیہ | باب المدینہ کراچی |
| 43 | تذکرۃ الاولیاء | فرید الدین عطار رحمۃ اللہ علیہ | انتشارات گنجینہ |
| 44 | تعلیم المتعلم | برھان الدین زرنوجی رحمۃ اللہ علیہ | باب المدینہ کراچی |
| 45 | مصباح الانام وجلاء الظلام | العلامہ الحبیب علوی بن احمد بن حسن | اھل السنہ برکات رضا گجرات الھند |
| 46 | حکایت گلستان سعدی | | شمع بک ایجنسی لاہور |
| 47 | روض الریاحین | عفیف الدین ابی سعادات عبد اللہ بن اسعد | دار الکتب العلمیہ بیروت |
| 48 | بہجۃ الاسرار | نور الدین ابی الحسن علی بن یوسف | دار الکتب العلمیہ بیروت |
| 49 | شرح الزرقانی | علامہ الزرقانی رحمۃ اللہ علیہ | دار الکتب العلمیہ بیروت |
| 50 | تاریخ بغداد | حافظ ابی بکر احمد بن علی | دار الکتب العلمیہ بیروت |
| 51 | الکامل فی الضعفاء | حافظ ابی احمد عبد اللہ بن عدی الجرجانی | دار الکتب العلمیہ بیروت |
| 52 | تاریخ مشائخ قادریہ | ابو کلیم فانی | مسلم کتابوی لاہور |
| 53 | روحانی حکایات | علامہ عبد المصطفیٰ اعظمی | مکتبہ غوثیہ باب المدینہ کراچی |
| 54 | زلزلہ اور اس کے اسباب | امیر اہلسنت علامہ الیاس عطار قادری مدظلہ عالی | مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی |
| 55 | ملفوظات اعلیٰحضرت | مفتی اعظم ہند محمد مصطفیٰ رضا خان مدظلہ العالی | مشتاق بک کارنر لاہور |
| 56 | آداب طعام | امیر اہلسنت علامہ الیاس عطار قادری مدظلہ عالی | مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی |
| 57 | فیضان سنت | امیر اہلسنت علامہ الیاس عطار قادری مدظلہ عالی | مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی |
| 58 | مفتی دعوت اسلامی | المدینۃ العلمیہ | مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی |
| 59 | دعوت اسلامی کی بہاریں | | مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی |
| 61 | حیات اعلیٰحضرت | مفتی محمد ظفر الدین بہاری رحمۃ اللہ علیہ | مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی |
| 62 | فیضان رمضان | امیر اہلسنت علامہ الیاس عطار قادری مدظلہ عالی | مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی |
| 63 | حیات محدث اعظم | مولانا عطاء الرحمٰن قادری | مکتبہ اعلیٰ حضرت لاہور |

## मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या की त़रफ़ से पेश कर्दा क़ाबिले मुता-लआ़ कुतुब

### ( शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه )

(1) करन्सी नोट के मसाइल (किफ़्लुल फ़क़ीहिल फ़ाहिमि फ़ीह़कामि क़िरत़ासिद्दराहिम) (कुल सफ़ह़ात : 199)
(2) विलायत का आसान रास्ता (तसव्वुरे शैख़) (अल याक़ूततुल वासित़ा) (कुल सफ़ह़ात:60)
(3) ईमान की पहचान (ह़ाशिया तम्हीदुल ईमान) (कुल सफ़ह़ात:74)
(4) मुआ़शी तरक़्क़ी का राज़ (ह़ाशिया व तशरीह़ तदबीरे इस्लाह़ व नजात व इस्लाह़ (कुल सफ़ह़ात:41)
(5) शरीअ़त व त़रीक़त (मक़ालुल उ़रफ़ाए बि एअ़्ज़ाज़े शरए़ वल उ़लमाए) (कुल सफ़ह़ात:57)
(6) सुबूते हिलाल के त़रीक़े (त़ुरुक़ु इस्बाते हिलाल) (कुल सफ़ह़ात:63)
(7) आ'ला ह़ज़रत से सुवाल जवाब (इज़्हारुल ह़क़्क़िल जली) (कुल सफ़ह़ात:100)
(8) ईदैन में गले मिलना कैसा? (विशाहुल जीद फ़ी तहलीलि मुआ-न-क़तिल ईद) (कुल सफ़ह़ात: 55)
(9) राहे खुदा عَزَّوَجَلَّ में खर्च करने के फजाइल (रद्दुल कह़्ति वल वबा-इ बि दा'वतिल जीरानि व मुवासातिल फु-कराअ) (कुल सफ़ह़ात: 40)
(10) वालिदैन, जौजैन और असातिजा के हुक़ूक़ (अल हुक़ूक़ लि तर्हिल उक़ूक़) (कुल सफ़ह़ात:125)
(11) दुआ के फजाइल (अह़सनुल विआ-इ लि आदाबिद्दुआ मअ़हू जैलुल मुद्दआ लि अह़सनुल विआअ) (कुल सफ़ह़ात:140)

### ( शाएअ होने वाली अ-रबी कुतुब )

**अज : इमामे सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना अहमद रजा खान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن

(12) किफ्लुल फकीहिल फाहिम (सफ़ह़ात: 74) (13) तम्हीदुल ईमान (कुल सफ़ह़ात: 77) (14) अल इजाजातुल मय्यिनह (कुल सफ़ह़ात: 62) (15) इका-मतुल कियामह (कुल सफ़ह़ात:60) (16) अल फदलुल मव्हबी (कुल सफ़ह़ात: 46) (17) अजलल इ'लाम (कुल सफ़ह़ात: 70) (18) अज्जम-ज-मतुल क-मरिय्य (कुल सफ़ह़ात:93) (19, 20)जद्दुल मम्तारे अ़ला रद्दिल मुह़्तार (अल मुजल्लिद अल अव्वल वस्सानी) (कुल सफ़ह़ात: 570,672)

### ( शो'बए इस्लाही़ कुतुब )

(21) ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ (कुल सफ़ह़ात:160) (22) इन्फ़िरादी कोशिश (कुल सफ़ह़ात:200) (23) तंगदस्ती के अस्बाब (कुल सफ़ह़ात:33) (24) फ़िक्रे मदीना (कुल सफ़ह़ात:164) (25) इम्तिह़ान की तैयारी कैसे करें (कुल सफ़ह़ात:32) (26) नमाज़ में लुक़्मा के मसाइल (कुल सफ़ह़ात:43) (27) जन्नत की दो चाबियां (कुल सफ़ह़ात:152) (28) कामियाब उस्ताज़ कौन ? (कुल सफ़ह़ात:43) (29) निसाबे म-दनी क़ाफ़िला (कुल सफ़ह़ात:196) (30) कामियाब त़ालिबे इल्म कौन ? (कुल सफ़ह़ात: तक़रीबन 63) (31) फ़ैज़ाने एह़्याउल उ़लूम (कुल सफ़ह़ात:325) (32) मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी (कुल सफ़ह़ात:96) (33) ह़क़ व बात़िल का फ़र्क़ (कुल सफ़ह़ात:50) (34) तह़क़ीक़ात (कुल सफ़ह़ात:142) (35) अरबईन

हनफ़िय्या (कुल सफ़हात:112) (36) अ़त्तारी जिन का ग़ुस्ले मय्यित (कुल सफ़हात:24) (37) त़लाक़ के आसान मसाइल (कुल सफ़हात:30) (38) तौबा की रिवायात व हिकायात (कुल सफ़हात:124) (39) क़ब्र खुल गई (कुल सफ़हात:48) (40) आदाबे मुर्शिदे कामिल (मुकम्मल पांच हिस्से (कुल सफ़हात:275) (41) टीवी और मूवी (कुल सफ़हात:32) (42 ता 48) फ़तावा अहले सुन्नत (सात हिस्से) (49) क़ब्रिस्तान की चुड़ैल (कुल सफ़हात:24) (50) ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के हालात (कुल सफ़हात:106) (51) तआरुफ़े अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़हात:100) (52) रहनुमाए जद्वल बराए म-दनी क़ाफ़िलात (कुल सफ़हात:255) (53) दा'वते इस्लामी की जेलख़ाना जात में ख़िदमत(कुल सफ़हात:24) (54) म-दनी कामों की तक़्सीम (कुल सफ़हात:68) (55) दा'वते इस्लामी की म-दनी बहारें (कुल सफ़हात:220)(56) तरबिय्यते औलाद (कुल सफ़हात:187) (57) आयाते क़ुरआनी के अन्वार (कुल सफ़हात:62) (58) अहादीसे मुबारका के अन्वार (कुल सफ़हात:66) (59) फैज़ाने चहल अहादीस (कुल सफ़हात:120) (60) बद गुमानी (कुल सफ़हात:57)

## ( शो'बए तराजिमे कुतुब )

(61) जन्नत में ले जाने वाले आ'माल
(अल मुतजरुर्रबिह फ़ी सवाबिल अ़मलिस्सालेह) (कुल सफ़हात:743)
(62) शाहराह औलिया (मिन्हाजुल आ़रिफ़ीन) (कुल सफ़हात:36)
(63) हुस्ने अख़्लाक़ (मकारिमुल अख़्लाक़) (कुल सफ़हात:74)
(64) राहे इल्म (ता'लीमुल मुतअ़ल्लिम त़रीक़त्तअ़ल्लुम) (कुल सफ़हात:102)
(65) बेटे को नसीहत (अय्युहल वलद) (कुल सफ़हात:64)
(66) अद दा'वत इलल फ़िक्र (कुल सफ़हात:148)
(67) नेकियों की जज़ाएं और गुनाहों की सज़ाएं (क़ुर्रतुल उ़यून व मुफ़र्रिहुल क़ल्बिल मह़ज़ून) (कुल सफ़हात : 136)

## ( शो'बए दर्सी कुतुब )

(67) ता'रीफ़ाते नह़विय्या (कुल सफ़हात:45) (68) किताबुल अ़क़ाइद (कुल सफ़हात:64) (69) नुज़्हतुन्नज़र शरहे नुख़्बतुल फ़िक्र (कुल सफ़हात:175) (70) अरबईने नवविय्या(कुल सफ़हात:121) (71) निसाबुत्तज्वीद (कुल सफ़हात:79) (72) गुलदस्तए अ़क़ाइदो आ'माल (कुल सफ़हात:180) (73) वक़ायतुन्नह़्व फ़ी शरहे हिदायतुन्नह़्व

## ( शो'बए तख़्रीज )

(74) अ़जाइबुल क़ुरआन मअ़ ग़राइबुल क़ुरआन (कुल सफ़हात:422) (75) जन्नती ज़ेवर (कुल सफ़हात:679) (76 ता 81) बहारे शरीअ़त (पांच हिस्से) (82) इस्लामी ज़िन्दगी (कुल सफ़हात:170) (83) आईनए क़ियामत (कुल सफ़हात : 108) (84) सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم का इश्क़े रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم (कुल सफ़हात:274) (85) उम्महातुल मुअमिनीन (कुल सफ़हात:59)

# याद दाश्त

दौराने मुता़-लआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी।

| उ़न्वान | सफ़ह़ा | उ़न्वान | सफ़ह़ा |
|---|---|---|---|
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

## सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक **दा'वते इस्लामी** के महके महके म-दनी माहोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है। आशिक़ाने रसूल के **म-दनी क़ाफ़िलों** में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए **म-दनी इन्आमात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की हिफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि "**मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है** اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ" अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये "**म-दनी इन्आमात**" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "**म-दनी क़ाफ़िलों**" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ


### मक-त-बतुल मदीना की शाखें

**मुम्बई :** 19, 20, मुहम्मद अ़ली रोड, भांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429
**देहली :** 421, मटिया महल, उर्दू बाज़ार, जामेअ़ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560
**नागपुर :** ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपुर : (M) 09373110621
**अजमेर शरीफ़ :** 19/216 फ़त्ताहे दारैन मस्जिद, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385
**हैदराबाद :** पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, हैदराबाद फ़ोन : 040-24572786
**हुब्ली :** A.J. मुहीत कोम्प्लेक्स, A.J. मुहीत रोड, ओल्ड हुब्ली ब्रीज के पास, हुब्ली, कर्नाटक, फ़ोन : 08363244860

मक-त-बतुल मदीना®
दा'वते इस्लामी

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा अहमदआबाद-1. गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net